फलित ज्योतिष में

काल-चक्र

दीवान रामचन्द्र कपूर

फलित-ज्योतिष में

काल-चक्र

लेखक:—

दीवान रामचन्द्र कपूर

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली : वाराणसी : पटना

प्रकाशक:—
सुन्दरलाल जैन
मोतीलाल बनारसीदास
पो० ७५, नेपाली खपड़ा,
वाराणसी।

प्रथम संस्करण १९६७

मुद्रक
विक्रम पञ्चाङ्ग प्रेस,
भदैनी, वाराणसी।
फोन नं० २७६५

विषय–सूची

समर्पण

आदरणीय एकमात्र (ज्येष्ठ) भ्राता, योगाचार्य, कुलावधूत,

डा० दीवान गोकुल चन्द्र कपूर

B. Sc., M. Tex. Instt (Man); A. M. A. L. (Lon);

के

कर कमलों में परम श्रद्धा से यह
पुष्प अर्पित करता हूँ, जिनका
अनवरत भ्रातृ-स्नेह मुझे
सद् प्रयत्नों में
प्रोत्साहन व
बल देता
रहता
है।

रामचन्द्र कपूर
(वाराणसी)

प्राक्कथन

दीवान रामचन्द्र कपूर उन थोड़े से व्यक्तियों में हैं जो उद्योग और व्यवसाय में लगे रहते हुए भी गम्भीर विषयों के अध्ययन में काफी दिलचस्पी लेते हैं। जिन विषयों में उनकी विशेष अभिरुचि है उनमें फलित ज्योतिष है। इस बात की आज कल बहुत बड़ी आवश्यकता है कि फलित ज्योतिष को शिक्षित जनता के सामने इस प्रकार रखा जाय कि वह रोचक और विज्ञान सम्मत प्रतीत हो। मैं स्वयं फलित ज्योतिष को विज्ञान से अभिमत मानता हूँ यद्यपि इस शास्त्र के वाङ्मय में मेरा चंचुक प्रवेश भी नहीं है। इसलिए वस्तुतः मैं उनकी कृतियों के सम्बन्ध में सम्मति देने का अधिकारी नहीं हूँ। परन्तु इतना तो कह सकता हूँ कि उनकी रचनाओं से फलित ज्योतिष के विद्यार्थी को सहायता मिलेगी और उसको स्थल स्थल पर यह बात भी देखने को मिलेगी कि यह ज्योतिष शास्त्र किस प्रकार वर्तमान सिद्धान्त ज्योतिष से अविरुद्ध है। यह भी बहुत उपयोगी बात है। मैं प्रस्तुत रचना "फलित ज्योतिष में काल चक्र" के लिए दीवान साहब को बधाई देता हूँ।

सम्पूर्णानन्द
(राज्यपाल-राजस्थान)

भूमिका

प्रत्येक जन्म कुण्डली के ग्रह जातक के जीवन पर दो प्रकार का प्रभाव डालते हैं। उनमें से एक होता है स्थायी और दूसरा परिवर्तित (सामयिक) होता है। जन्मकालिक ग्रहों का जातक के जन्मज-पारिवारिक-सामाजिक स्तर, उसके शरीर की बनावट, उसके व्यक्तित्व, स्वभाव तथा संस्कारों से विशेष सम्बन्ध रहता है। जब कि वे ही ग्रह अपनी-अपनी दशा काल में जातक के जीवन में समय-समय पर उसके उत्थान-पतन, उन्नति-अवनति, स्वास्थ्य-रोग, हानि-लाभ, यश-अपयश, जीवन-मरण आदि इष्ट-अनिष्ट अवस्थाओं को पैदा करने में सहायक या बाधक हो जाते हैं अथवा इन अवस्थाओं के सूचक हो जाते हैं। जीवन की ऐसी अवस्थाओं को साधारणतया बोल-चाल की भाषा में जातक के "बुरे या अच्छे दिन" कहा जाता है। इन अच्छे या बुरे दिनों को जानने के लिए फलित ज्योतिष में अनेक पद्धतियां हैं जिनमें नक्षत्रदशा, गोचर तथा ताजिक पद्धतियां प्रधान हैं। भारतीय फलित ज्योतिष में जातक के भावी जीवन की घटनाओं को जानने के लिए नक्षत्र-दशा पद्धति ही प्रधान है। नक्षत्रदशा पद्धति का आधार जन्मकालिक चन्द्रस्पष्ट है। जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर रहता है उसी नक्षत्र से दशा का आरम्भ होता है। प्रत्येक नक्षत्र के स्वामी निर्धारित ग्रह होते हैं। जन्मनक्षत्र के स्वामी से दशा का आरम्भ होकर क्रम से आगामी नक्षत्रों के स्वामियों की दशा चलती रहती है। नक्षत्र-स्वामियों के दशावर्ष भी नियत होते हैं। फलित ज्योतिष में अनेक नक्षत्र-दशा पद्धतियां है। उनमें से चार प्रसिद्ध हैं। (१) विंशोत्तरी (२) अष्टोत्तरी (३) योगिनी (४) कालचक्र। इन चारों की दशा का आधार चन्द्रनक्षत्र (चन्द्र-स्पष्ट) है। इन चारों में दशा के आनयन की रीति तो एक सी है पर नक्षत्र-स्वामी भिन्न-भिन्न होने से दशाएं एक दूसरे से मेल नहीं खातीं। किसी भी जातक के जन्मकालिक चन्द्र-नक्षत्र की दशा-स्वामी का आरम्भ चारों पद्धतियों में भिन्न-भिन्न होता है और दशा-स्वामियों के दशा वर्ष भी भिन्न-भिन्न होते हैं, इस लिए किसी जातक के किसी इष्टसमय में जिस विंशोत्तरी ग्रह की दशा होगी अष्टोत्तरी या योगिनी में इस ग्रह की प्रायः न होगी।

उदाहरणार्थः—यदि किसी जातक का जन्म अश्विनी नक्षत्र का हो तो उसके जन्म समय में विंशोत्तरी में केतु की, अष्टोत्तरी में शुक्र की तथा योगिनी में मंगल की दशा होगी। सिवाय भरणी, कृत्तिका, अनुराधा, शतभिषा इन नक्षत्रों के, शेष सभी

नक्षत्रों के स्वामी विंशोत्तरी तथा अष्टोत्तरी में भिन्न-भिन्न हैं। इन उपरोक्त चारों नक्षत्रों के स्वामी विंशोत्तरी तथा अष्टोत्तरी में क्रम से शुक्र, सूर्य, शनि, राहु दोनों में एक ही से हैं पर विंशोत्तरी में क्रम से शुक्र के दशावर्ष २० और अष्टोत्तरी में २१, सूर्य के दोनों में समान ६ वर्ष, विंशोत्तरी में शनि के १९ वर्ष और अष्टोत्तरी में १० वर्ष, विंशोत्तरी में राहु के १८ वर्ष तथा अष्टोत्तरी में १२ वर्ष। इन विषमताओं के अतिरिक्त अष्टोत्तरी में केतु की तथा योगिनी में राहु की दशा होती ही नहीं।

नक्षत्रदशाओं की पारस्परिक असमता के कारण प्रश्न उठता है कि जब किसी जातक की कुण्डली के किसी एक ग्रह की दशा का समय भिन्न पद्धतियों से भिन्न काल में आता है तो क्या यह संभव है कि किसी नियत भावी समय में विभिन्न ग्रहों की दशा का फल एक सा रहेगा ? घटनाएं तो निश्चित रहती हैं, यदि उनका सम्बन्ध भिन्न-भिन्न ग्रहों की एक ही समय की दशाओं के परत्वसे होना माना जाय तो वह सर्वथा अयुक्तिसंगत होगा। इस लिए दशाओं के संम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि जिस नक्षत्रदशा पद्धति से फल सान्निध्य हो उसे ही मानना चाहिए तथा अन्य प्रकार की दशाओं के फल का एक प्रकार का विचार-सहायक समझना चाहिए। विभिन्न दशापद्धतियों से एक विशेष लाभ उठाया जा सकता है। वह लाभ यह है कि किसी पद्धति से आयु, किसी से सम्बन्धियों के अरिष्ट, किसी से विशेष प्रकार की घटनाएँ जानी जा सकती हैं। उदाहरणार्थ—विंशोत्तरी दशा से कारक-मारक का निश्चय होता है। कारक की दशान्तर में कार्य में सफलता तथा यश-ख्याति की वृद्धि मारक में शारीरिक कष्ट होता है। योगिनी में इससे कुछ भिन्न प्रकार का फल कहा गया है। कालचक्र अरिष्टप्रद घटनाओं (**accidents**) तथा मारक अवस्था (निधन) के जानने का एक अच्छा माध्यम है। जैमिनीय की दशाओं से अधिकतर माता-पिता भ्राता आदि के अरिष्टों का निर्णय किया जाता है। इस प्रकार भिन्न दशापद्धतियों का क्षेत्र कई विषयों में भिन्न है। विशिष्ट प्रकार के फल जानने के लिए उसी पद्धति से लाए गए ग्रहों के द्वारा फल आंकना चाहिए जिस पद्धति से उस विशिष्ट प्रकार के फल अधिकतर मिलते हों।

जातक की भावी जीवन-घटनाओं को जानने के लिए इस समय विंशोत्तरी दशा सर्वत्र प्रचलित है। इस दशापद्धति का एक प्रधान ग्रंथ "उडुदाय प्रदीप" है जिसमें बड़े वैज्ञानिक ढंग से ग्रहों की कारक व मारक अवस्थाओं के निर्णय करने की विवेचना की गई है। विंशोत्तरी दशा का फल बहुत अंशो में सही उतरता है। लेखक ने इस ग्रन्थ का मनन किया और उसके अनुसार जातक की

कुण्डलियों का फल बहुत अधिक मात्रा में घटता पाया। इस लिए लेखक ने उस ग्रंथ पर सविस्तार टीका की और उदाहरण सहित प्रत्येक श्लोकों का भाष्य किया है। यह ग्रंथ "लघुपाराशरी भाष्य" नाम से **श्री मोतीलाल बनारसीदास, पो० व० ७५, वाराणसी** से प्रकाशित है। फलित में रुचि रखने वाले महानुभावों को उसे अवश्य देखना चाहिए।

अष्टोत्तरी तथा योगिनी दशापद्धतियों पर कोई अलग से ग्रंथ नहीं है। ज्योतिषी लोग अष्टोत्तरी गणना द्वारा लाए गए ग्रहों की दशा का फल प्रायः विंशोत्तरी के उडुदाय प्रदीप नामक ग्रंथ के आधार पर ही कहते हैं जब कि दोनों पद्धतियों से गणितागत ग्रहों की दशा एक ही समय में भिन्न-भिन्न रहती है। ऐसा करना युक्ति संगत नहीं है।

योगिनी दशा भी चन्द्र-नक्षत्र से चलती है। इसमें प्रत्येक नक्षत्र के स्वामी ग्रह तथा साथ ही साथ उनकी योगिनियां निश्चित हैं और उन योगिनियों के क्रम से दशा चलती है। प्रत्येक योगिनी की मंगला से आरम्भ होकर संकटा तक क्रमशः एक, दो, तीन...आठ वर्ष की दशाएं होती है। साधारणतया उनका फल योगनियों के नाम के तुल्य ही होता है। यथा मंगला की दशा में मंगल, पिङ्गला में रोग तथा हानि, धान्या में धनधान्य की वृद्धि इत्यादि। नक्षत्रस्वामी ग्रहों तथा उनकी योगिनियों में पारस्परिक क्या और कैसा संबन्ध है इसकी विवेचना कहीं नहीं देखी गई। इस लिए यह पद्धति अधूरी है। उदाहरण स्वरूप मानो कि मंगला की दशा में उसका स्वामी चन्द्र यदि कुण्डली में पापाक्रान्त अष्टमस्थ हो तो एक तरफ मंगला की दशा मंगलकारी और दूसरी तरफ उसके स्वामी चन्द्र की दशा अमंगलकारी होगी। दोनों का कैसे मेल खायगा यह विवादास्पद है।

कालचक्र दशा भी चन्द्रनक्षत्र (चन्द्रस्पष्ट) की दशा है। यह दशा प्रत्येक चन्द्रनक्षत्र के प्रत्येक चरण से आरम्भ होती है। जिस प्रकार विंशोत्तरी दशा में प्रत्येक २७ नक्षत्रों के दशाधीश क्रम से नवग्रह होते हैं उसी प्रकार इस कालचक्र में बजाय २७ नक्षत्रों के उनके १०८ चरणों से दशा का क्रम नियत होता है। नक्षत्र का एक चरण एक राशि का नवम भाग है इस लिए यह कालचक्र दशा राशियों की नवमांश दशा है।

यह दशा जैमिनीय की नवमांश दशा से मिलती-जुलती है। इस दशा का उल्लेख तथा दशा आनयन की रीति बृहद्पराशर होराशास्त्र तथा जातक पारिजात में है पर उस पर कोई ऐसी टीका नहीं है जिसके आधार पर सरलतापूर्वक दशा

लगाई जा सके और उस पर सही फलादेश किया जा सके। लेखक ने अनेक कुण्डलियों पर कालचक्र दशा का उपयोग किया और उसे मारक तथा अरिष्ट प्रसंग में बहुत उपयोगी पाया। इस दशा में अनुसंधान (खोज) की आवश्यकता प्रतीत होने पर लेखक ने अनेक कुण्डलियों में कालचक्र दशान्तर दशाओं का प्रयोग किया और जहाँ इस दशाचक्र सम्बन्धी शास्त्रों का वचन के अनुसार फल घटता नहीं पाया वहाँ उसका अपवाद निर्णय किया है। इस लिए लेखक का यह प्रयास अर्थात् कालचक्र दशा पद्धति की टीका होराशास्त्रों में वर्णित कालचक्रदशा फलादेश के श्लोकों की हिन्दी टीका मात्र नहीं है वरन् इसमें लेखक ने अपना अनुभव भी लिखा है और जहाँ आवश्यकता हुई है उसका उदाहरण भी दे दिया है। इतना होने पर भी लेखक की दृष्टि में यह कालचक्र भाष्य अभी अधूरा है। उसमें और खोज की आवश्यकता है फिर भी इस ग्रंथ को प्रकाशित करते समय उसे विश्वास है कि मारक तथा अरिष्ट निर्णय करने में यह ग्रंथ ज्योतिषियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस सम्बन्ध में लेखक का मत है कि कालचक्रदशा पद्धति से जातक के मारक अथवा अरिष्ट समय को निर्णय करते समय मान्य ज्योतिषियों को लघुपाराशरी की विंशोत्तरी दशा के मारकग्रहों का भी निर्णय कर लेना चाहिए। यों तो कालचक्र में जब किसी जातक के जीवन में मारक ग्रहों की स्थिति पैदा हो जाती है और उनकी अन्तर्दशा में जातक की यदि मृत्यु न हुई तो मृत्यु तुल्य अवस्था तो अवश्य हो जाती है पर यदि उस समय विंशोत्तरी में कारकग्रह की दशा हुई तो कालचक्रान्तर्गत फल एक मोड़ ले लेता है। अस्तु, ग्रह जनित अरिष्ट और मारक अवस्था आने पर विंशोत्तरी का भी आश्रय ले लेना चाहिए। लेखक ने अपने पूर्वोक्त लघुपाराशरी भाष्य में मारकेश निर्णय की सरल रीति दी है।

भावी रिष्टारिष्ट जानने के लिए गोचर तथा ताजिक पद्धति के उपयोग की भी परिपाटी है। गोचर पद्धति द्वारा तात्कालिक ग्रह तथा जन्मकालिक ग्रहों के पारस्परिक संबन्ध से सामयिक फल कहा जाता है। यह पद्धति ग्रहों की वास्तविक स्थिति से सम्बन्ध रखती है। इसमें काल्पनिक या अदृष्ट कुछ नहीं है इसलिये यह पद्धति वैज्ञानिक है पर चूंकि जातक के हर समय की घटनाओं को जानने के लिये गोचर पद्धति में हर समय के आकाशीय ग्रह-स्थितियों की विशेषतया चन्द्रमा की गणना करते रहना सरल साध्य नहीं है इस लिए जन्म कुण्डली में गोचर ग्रहों का उल्लेख नहीं रहता। चन्द्रमा को छोड़ अन्य ग्रहों के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश के काल दीर्घ काल होते हैं तिस पर भी वे जब जब प्रथम राशि को छोड़कर दूसरी राशि में प्रवेश करते हैं उन सभों की गणना बिना पंचांगों के सरल नहीं है इसलिये जब किसी जातक पर कोई अरिष्ट आ चुका होता है, साधारणतया उसी समय गोचर

ग्रहों का विचार किया जाता है। गोचर ग्रहों से फलादेश जानने के लिये कोई प्रामाणिक ग्रंथ भी नहीं है। गोचरपद्धति अनुसरित ताजिकपद्धति है। ताजिकपद्धति से वर्षफल कहा जाता है। जातक के सूर्य स्पष्ट पर प्रत्येक वर्ष जो कुण्डली बनती है वह वर्ष कुण्डली कही जाती है। इस पद्धति के द्वारा वर्ष-वर्ष के फल जानने के लिये ताजिक नीलकंठी आदि विशिष्ट ग्रंथ हैं पर वे आर्ष नहीं हैं। उसमें भी ग्रहों की दशा चलती है और मुंथा नाम का एक कल्पित ग्रह भी रहता है।

जीवन की भावी घटनाओंको जानने के लिये ऊपर प्रधान पद्धतियों का उल्लेख किया गया। इसके अतिरिक्त पाराशर होरा शास्त्र में अनेक दशाओं का उल्लेख है जिन पर अलग से समझने-समझाने के लिये कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं है और न उन दशाओं का फल इत्थंभूत घटता ही देखा गया है। वे **(Verified)** नहीं हैं उनमें खोज की आवश्यकता है। प्रामाणिक टीका तथा कुण्डलियों में प्रयोग के प्रमाण के अभाव में उन सब दशाओं के फल पर पूरा विश्वास नहीं किया जा सकता।

कोई भी दशापद्धति हो वह फलादेश में सर्वांगपूर्ण नहीं हो सकती। ग्रहातिरिक्त विश्व की अदृष्ट शक्तियों का भी मनुष्य की जीवन चर्या में हाथ है और साथ ही साथ प्रत्येक मनुष्य का जीवन उतना संकीर्ण नहीं है कि उसमें बाहरी शक्तियां प्रवेश कर सकती ही नहीं। इस लिए किसी भी पद्धति से जाना गया जातक–फलादेश सर्वदा वैसा ही घटे जैसा ग्रह स्थिति से घटना चाहिये, ऐसा नहीं होता। कम से कम फलादेश की शुभ या अशुभ की मात्रा में तो अंतर पड़ ही जाता है। कभी कभी तो देखा गया है कि निर्धारित अरिष्ट जातक को बिला कोई कष्ट दिए यों ही व्यतीत हो जाते हैं। लेखक के मत से इसके दो प्रधान कारण हैं। एक गणितागत ग्रहों के स्थानों की अशुद्धि जो पंचांगों की विषमता के कारण होती है। इसका एक मनोरंजक उदाहरण लेखक द्वारा निर्मित एक कुण्डली का है। लेखक का एक ही पुत्र है जिसका जन्म शुभ सम्वत् २००० भाद्रपद कृष्ण ६ शनिवार को काशी में प्रातः ४।२४ वादन समय (स्टै० टाइम) में हुआ। श्री बापूदेव पंचांग से उस समय भरणी नक्षत्र का भभोग ६०।३९ भुक्त ५९।५४ तथा भोग्य ०।४४।३० था और श्री विश्व पंचांगानुसार भरणी का भभोग ६०।१२, भुक्त ४६।५० तथा भोग्य १३।२२ था। श्री बापूदेव की गणना के अनुसार जन्म में विंशोत्तरी शुक्र भोग्य वर्षादि ०।२।२८ तथा श्री विश्वपंचांगानुसार शुक्र महादशा भोग्य वर्षादि ४।५।८ है। इन दोनों का अंतर वर्षादि ४।२।१० है। यह अंतर असह्य है। लेखक दोनों पंचांग-कर्ताओं के आदरणार्थ यह नहीं लिखना चाहता कि फल किस पंचांग द्वारा निर्धारित दशा में घट रहा है।

ज्योतिष फलादेश का निर्धारित मात्रा में न घटने का एक कारण दार्शनिक भी है। भारतीय दार्शनिकों का मत है कि मनुष्य का जन्म तथा उसका दुःख सुख का भोग उसके पिछले जन्म के पुण्यापुण्य हेतु पर आधारित है। लेखक के मत से वह दुःख सुख इस जन्म के जन्म कालिक ग्रहों तथा दशाओं के समय में प्रस्फुटित होता है। जिस प्रकार बीज में उसके सभी अवयव समाए हुए रहते हैं और उनका प्रस्फुटन अनुकूल भूमि तथा अवसर के अनुकूल वातावरण में होता है उसी प्रकार मनुष्य के संचित पूर्वजन्म के संस्कारों तथा पुण्यापुण्य कर्माशयों का प्रस्फुटन ग्रहों की अनुकूल तथा विपरीत अवस्थाओं में होता रहता है। पुण्यापुण्य, उपयुक्त अनुपयुक्त कर्माशय के फल का नाम प्रारब्ध है। प्रारब्ध के साथ साथ इस जन्म में उसका क्रियमाण (किए हुए कर्म) का भी संचय होता रहता है। लेखक का मत है कि मनुष्य का प्रारब्ध जबतक बली रहता है, ग्रहों के फल निर्धारित मात्रा में होते रहते हैं और जब क्रियमाण प्रबल हो जाता है तो ग्रहों का प्रभाव या ग्रहों की सूचना अक्षुण्ण हो जाती है। इस लिए लेखक के मत से जो लोग सांसारिक चक्र में फंसे सांसारिक वासनाओं और सामाजिक तथ्यों के बीच उलझे रहते हैं उनका अपना (आत्मीय) कुछ नहीं रहता तो उन पर ग्रहों का प्रभाव अत्यधिक होता है अथवा उन्हें भोग वैसा ही होता है जैसे वे ग्रह सूचना देते हैं। जो लोग इससे ऊपर उठ चुके होते हैं उन पर ग्रहों का प्रभाव, विशेषतया मानसिक प्रभाव बहुत कम होता है जिससे निर्धारित उपयुक्त वा अनुपयुक्त फल की अनुभूति वैसी नहीं होती जैसी सांसारिक पुरुष की। शारीरिक अरिष्ट तथा मृत्यु को कोई पार नहीं कर सकता इसलिए सब किसी की मृत्यु होती है। चूंकि निधन ग्रहों की संभावित निधनावस्था में ही प्रायः संभव है इस लिए उनका निर्धारित रहना तर्कसंगत है जिसका अध्ययन प्रयास इस ग्रंथ का उद्देश्य है। मनुष्य अल्पज्ञ है इस लिए उसकी कोई भी जानकारी इत्थं भावी ही हो यह संभव नहीं।

——:०:——

गोलाध्याय

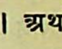
आकाश में जितने चमकते पिण्ड दिखाई देते हैं, समय-समय पर दिखाई पड़ जाते हैं या दुर्बीन से दिखाई पड़ सकते हैं वे सब अगणित होते हुए भी उनकी संज्ञाएं नियत हैं। जो पिण्ड सूर्य के चारों ओर परिक्रमा कर रहे हैं उनकी संज्ञा ग्रह है। जो पिण्ड ग्रहों की परिक्रमा कर रहे हैं वे सब तत्तद् ग्रहों के उपग्रह हैं। सूर्य तारा या तारिका है। तारा उसे कहते हैं जिनकी वास्तविक गति (दृश्यमान नहीं) उपलब्ध न होती हो और वे स्थिरप्राय हों। ताराओं के सापेक्ष स्थान में परिवर्तन नहीं सा होता है। विशिष्ट तारासमूह का नाम नक्षत्र है। नक्षत्र का अर्थ है "न क्षरतीति नक्षत्रः" जिसका क्षरत्व न होता हो। जिस तारासमूह का विशिष्ट नाम कोई नक्षत्र हो उस समूह के सब से अधिक चमकने वाले या प्रख्यात तारा को उस नक्षत्र का योगतारा कहते हैं। अर्थात् जिस तारा से विशिष्ट नक्षत्र (तारासमूह) का अविलंब ज्ञान हो सके वह उस नक्षत्र विशेष का योगतारा है। नक्षत्रों को मिला कर जो विशिष्ट स्वरूप बनते हैं उनका नाम पृथक्-पृथक् राशि है। इस लिए तारा, तारासमूह (नक्षत्र), नक्षत्र समूह (राशि) है। जो राशि क्रांतिवृत्त के आस-पास पड़ती है उसे फलित में मेष, वृष, मिथुनादि १२ राशियां कहते हैं। तारा तथा ग्रहों की पहचान यह है कि आकाश में जो पिण्ड टिमटिमाते (Twinckling) हैं वे तारे हैं और जिनका प्रकाश एकरस रहता है वे ग्रह हैं। आकाश में ध्यान से देखने पर तारा तथा ग्रहों की पहचान हो जाती है। सभी ग्रह क्रांतिवृत्त के आस-पास ही रहते हैं। क्रांतिवृत्त की सीमा विषुववृत्त (भूमध्यरेखा का आकाशीय विस्तार) से उत्तर $२३\frac{१}{२}^\circ$ तथा दक्षिण $२३\frac{१}{२}^\circ$ तक है और सभी ग्रह इस सीमा से उत्तर दक्षिण ८° तक ही रहते हैं अर्थात् सभी ग्रहों की कक्षा भू कक्षा (क्रांतिवृत्त) से $२३^\circ + ८^\circ = ३१^\circ$ भू मध्य रेखा से उत्तर दक्षिण की सीमा के भीतर है। इसका अपवाद दो अवान्तर ग्रह हैं। इस लिए सभी ग्रह आकाश में भूपृष्ठ के ३१°, ३२° अक्षांस के उत्तर वा दक्षिण के भीतर ही दिखाई पड़ते हैं। ताराओं, ग्रहों, उपग्रहों अवान्तर ग्रहों के अतिरिक्त आकाश में धुधले बादल सरीखे तारिकाओं के कुछ विशिष्ट पुञ्ज दिखाई देते हैं। उन्हें नेबुला कहते हैं। ऐसा एक पुञ्ज आकाशगङ्गा में दिखाई पड़ता है। ये अनेक ताराओं के मिले जुले छिन्न-भिन्न वृहद् पिण्ड हैं। आकाश में कभी कभी पूंछदार तारे दिखाई पड़ जाते हैं। इन्हें ग्रहसमान समझना चाहिए पर इनकी संज्ञा पूंछदार तारा ही है। ये आकाश में कुछ दिनों तक दिखाई देकर फिर लुप्त हो जाते हैं और फिर प्रायः इनका दर्शन नहीं होता। इनका मार्ग गोल वृत्ताकार नहीं है

इस लिए वे लौटते नहीं। पूंछदार तारा जब आकाश में दिखाई देता है तो ज्योतिष लोग उसके आगमन को संसार के लिए एक बड़ा अपशकुन गिनते हैं। उल्काओं की भी संख्या अनगिनत हैं। ये ग्रहों और ताराओं से छूटके हुए भाग हैं।

सूर्य एक तप्त तारा है जिसके चारों ओर पृथ्वी परिक्रमा कर रही है। पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य पिण्ड भी (जो अब तक की जानकारी में संख्या में आठ हैं) सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। इन ग्रहों ने नाम ये हैं। मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, युरेनस, नेपच्यून, प्लूटो। इनके अतिरिक्त सूर्य और पृथ्वी के बीच कुछ अवांतर ग्रह भी हैं जो छिन्न-भिन्न अवस्था में हैं। इनकी गणना सही ग्रहों के बीच में नहीं की गई। ये सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। परिक्रमा करने में इनकी कक्षा (परिक्रमा मार्ग) सूर्य से जिस क्रम में एक दूसरे से आगे है वह इस प्रकार है। बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो। सूर्य से पृथ्वी की कक्षा की दूरी से यदि १ एक संख्या दी जावे तो सूर्य से उपरोक्त ग्रहों की कक्षा की दूरी क्रम से बुध ०·३८७, शुक्र ०·७२३, पृथ्वी १·०, मंगल १·५२३, बृहस्पति ५·२०२, शनि ९·५३९, यूरेनस १९·१८३, नेपच्यून ३०·०५४, प्लूटो ३९·५ इन ग्रहों की सूर्य परिक्रमा का समय क्रमशः इस प्रकार है—बुध ०·२४ वर्ष, शुक्र ०·६२ वर्ष, पृथ्वी १ वर्ष, मंगल १·८८ वर्ष, बृहस्पति ११·८६ वर्ष, शनि २९·४६ वर्ष, यूरेनस ८४·०२ वर्ष, नेपच्यून १६४·७८ वर्ष, प्लूटो २४८ वर्ष। पाश्चात्य फलित ज्योतिष में जातक फलादेश में इन सभी ग्रहों से फल कहा जाता है पर भारतीय आर्ष जातक फलादेश तथा दशापद्धति में केवल मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि की ही मान्यता है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य तथा भारतीय इन दोनों देशों के फलित ज्योतिष में सूर्य, चन्द्रमा, राहु तथा केतु ये भी ग्रह माने गए हैं। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी के साथ-साथ सूर्य की भी परिक्रमा कर रहा है इस लिए उसकी मान्यता उपग्रह में न होकर ग्रहों में की गई है। पृथ्वी से उसका जितना घनिष्ट सम्बन्ध है उतना और किसी आकाशीय पिण्डों से नहीं है इस लिए फलित में चन्द्रमा को केवल ग्रह ही नहीं वरन् एक प्रधान ग्रह माना गया है। और ग्रहों के भी उपग्रह हैं जो उन के साथ ही साथ सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं पर चूंकि उन उपग्रहों का प्रभाव उन्हीं ग्रहों तक सीमित है जिनके वे उपग्रह हैं इस लिए अन्य ग्रहों के उपग्रहों को फलित में नहीं सम्मिलित किया गया। चन्द्रमा से तिथियों का निर्माण, पृथ्वी की ज्वारभाटा तथा जलवायु (मौसम)

की स्थिति, मनुष्य के मन पर पड़ने वाले प्रभावों की महत्ता देखते हुए फलित में इसका बहुत ऊँचा स्थान माना गया है। ऐसा स्थान अन्य ग्रहों के उपग्रह हमारे जीवन में नहीं प्राप्त कर सकते।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रही है पर हम सब के लिए सूर्य ही पृथ्वी की परिक्रमा करता हुआ दिखाई देता है (दैनिक भी, वार्षिक भी) जिस प्रकार वेग से चलती हुई ट्रेन के डब्बे में बैठे हुए व्यक्ति के लिए रेल से बाहर के वृक्षादि चलते दिखाई देते हैं। गणना में यह कहना समान ही अर्थ रखता है कि रेल से अमुक स्थान इतनी दूर पर है अथवा अमुक स्थान से रेल इतनी दूर है। दिशा निर्देश में विपरीत दशा तो कही जायगी पर अंशात्मक कोण तो दोनों स्थिति में एक ही होगा। इस लिए हम पृथ्वी के मनुष्यों के लिए पृथ्वी की गति से उत्पन्न सभी पदार्थ सूर्य प्रसंग में सूर्य की गति के अनुरूप ही कहे जाते हैं। इसी लिए फलित ज्योतिष में पृथ्वी के स्थान पर सूर्य को भी एक ग्रह मान लिया गया। उसका राश्यादि गमन वस्तुतः पृथ्वी की ही राश्यादि गति है।

पृथ्वी के सूर्य-परिक्रमा मार्ग (कक्षा) को क्रांतिवृत्त कहते हैं। पृथ्वी इस
दि. घं. मि. से.
मार्ग से सूर्य की परिक्रमा ३६५. ६. ९. ८.९७ में एक बार कर लेती है। इसे निरयन सौरवर्ष कहते हैं। चन्द्रमा अपने मार्ग (कक्षा में) से पृथ्वी की एक वार
दि. घं. मि. से.
२७. ७. ४३. ११.५४५ में परिक्रमा कर लेता है जिसे निरयन नक्षत्र मास कहते हैं। यह मान चन्द्रमा के एक पूरे भचक्र गमन (सत्ताइसों नक्षत्रों) का समय है। अर्थात् चन्द्रमा २७.३२१६६०८ माध्यम सौर दिवसों में अपनी माध्यम गति से २७ नक्षत्रों को पार करता है जिसे एक नक्षत्रारम्भ से उसी नक्षत्र में पुनः पहुंचने का समय कह सकते हैं। पृथ्वी के सूर्य परिक्रमा की कक्षा का धरातल चन्द्र कक्षा की धरातल से लगभग ५° है। इन दोनों कक्षाओं का धरातल समस्थल पर नहीं है। (यहां धरातल का अर्थ है कक्षा का आकाशीय विस्तार) चूंकि दोनों का धरातल समस्थल पर नहीं है इस लिए ये दो आकाशीय बड़े वृत्त आपस में दो जगह काट करते हैं। (सभी वृत्त परस्पर दो ही जगह काट करते हैं) जैसे क  ख

पृथ्वी कक्षा (क्रांति वृत्त) की धरातल पर चन्द्रकक्षा का धरातल जहां दो जगहों पर काट (संपात) करता है उन्हें राहु तथा केतु कहा जाता है। दो संपात बिन्दुओं में से जिस बिन्दु से चन्द्रमा अपनी कक्षा में दक्षिण से उत्तर की ओर

जाता है उसे राहु कहते हैं, तथा उससे १८०° दूर स्थित दूसरे संपात को केतु कहते हैं। वृत्तों के संपात विन्दु सदा एक दूसरे से १८०° दूर ही रहते हैं। यह संपात विन्दु क्रांतिवृत्त में उत्तर से दक्षिण विलोम गति से लगभग १९° प्रतिवर्ष की गति से खिसक रहा है। इसी को राहु केतु की विलोम गति कहते हैं। इन संपात विन्दुओं पर जब सूर्य और चन्द्रमा की अंशात्मक युति होती है तब ग्रहण की स्थिति पैदा हो जाया करती है। चन्द्र या सूर्य ग्रहण पृथ्वी की एक विशेष घटना है जिसका प्रभाव देहधारियों पर पड़ता है। अन्य ग्रहों का भी ग्रहण लगता है पर उससे पृथ्वी के प्रकाश तापादि का विक्षेप नही पड़ता इस लिए फलित में राहु केतु का सम्मिलित किया जाना तर्क सम्मत है। इस दृष्टि से चन्द्र-राहु या चन्द्र-केतु की युति कुण्डली में अच्छा योग नही गिना जाता। राहु केतु को तम ग्रह माना गया है पर दशाओं में परिस्थिति वश ये शुभ भी हो जाते हैं। चन्द्रमा के साथ शनि की युति भी गोचर में अरिष्टप्रद मानी गयी है।

भारतीय फलित ज्योतिष में यूरेनस (हार्शेल) नेपच्यून तथा प्लूटो का कोई स्थान नहीं है। इन ग्रहों का पता इस वीसवीं सदी में लगा है जब कि हमारे प्रायः सभी फलित ग्रंथ इसके पूर्व के हैं। संभव है आर्ष ऋषिओं को इनका पता हो पर इन तीनों ग्रहों की पृथ्वी से दूरी का ध्यान रखकर तथा राशिगमन के दीर्घकाल का ध्यान कर इसे छोड़ दिया गया हो। जो हो नक्षत्र दशाओं में इनका कोई स्थान नहीं है। विशेष बात यह है कि २७ नक्षत्रों की दशाओं में प्रत्येक नक्षत्र के स्वामी नियत हैं, उनका क्रम नियत है तथा दशावर्ष भी नियत हैं। देखा जाता है कि इन उपरोक्त तीन ग्रहों के अर्थात् हार्शेल, नेपच्यून तथा प्लूटो के विना सम्मिलित किए अन्य नव ग्रहों की दशा का फल तत्तद् ग्रहों के दशा काल में होता दिखाई देता है। इससे यह आवश्यक नहीं जान पड़ता कि दशापद्धतियों में इन्हें सम्मिलित किया जाए। दूसरा पक्ष यह है कि जिस प्रकार विंशोत्तरी आदि दशाओं में राहु केतु का स्थान तो है पर उनकी राशि वही होती है जिस राशि पर वे जिस कुण्डली में बैठे हों ऐसी स्थिति में उस राशि के दो स्वामी मान लिए जाते हैं। इसी प्रकार इन ग्रहों की यदि राशि स्थिर हों तो दशापद्धति में उन राशियों के दो स्वामी जान लेने पर तारतम्य से फलादेश कहना अधिक फलद होगा। ऐसा प्रयास कर किसी ज्योतिषी महोदय ने अपना पक्ष उपस्थित किया हो ऐसा देखा नहीं गया। पाश्चात्य ज्योतिष में ये ग्रह (यूरेनस, नेपच्युन, प्लूटो) जातक फलादेश में सम्मिलित कर लिए गए हैं। इनका फल भी इनके स्वभावादि के अनुसार कहा जाता है पर

लेखक के मत से अभी उनका फल निर्धारण करना समीचीन नहीं है क्योंकि इन ग्रहों का राशिगमन काल दीर्घ है और जब तक सैकड़ों आवृत्तियों का फल कुण्डलियों में न मिला लिया गया हो, फलनिर्धारण संशयात्मक ही रहेगा। प्लूटो तो पता लगने के समय से अभीतक एक राशि भी पूरा पार नहीं कर पाया है इस लिए उसका फलादेश निर्धारित करना तो हास्यास्पद है।

नक्षत्रदशा पद्धतियों में सिवाय विंशोत्तरी के अन्य पद्धतियों में राहु का कोई स्थान है ही नहीं। यह विस्मय की बात है कि अष्टोत्तरी तथा योगिनी में केतु की दशा तो है पर राहु की नहीं। इसी लिए लेखक ने विंशोत्तरी दशा को ही प्रामाणिक मानकर उस पर भाष्य लिखा। इस कालचक्र दशा में भी राहु-केतु के दशावर्ष नियत नहीं हुए हैं पर फलादेश में राहु-केतु को सम्मिलित कर लिया गया है। "जीवो जीवे जीवो यदा राहुः सौरिर्वक्री रविः स्थितः" अर्थात् जीवराशि में यदि राहु जीव वक्री शनि, रवि ये हों तो पाप योग होता है। कालचक्र दशा में राहु को सर्वदा पापी माना है।

पृथ्वी जिस मार्ग से सूर्य की परिक्रमा करती है उसके आकाशीय विस्तार पर जो तारे—तारामण्डल हैं उन्हें ही फलित क्षेत्र के नक्षत्र कहते हैं जोकि आकाश में सर्वत्र सभी दिशा में तारे तथा ताराओं का समूह है। इन्ही नक्षत्रों में सूर्य चलता दिखाई देता है इसी प्रकार चन्द्रकक्षा के धरातल पर पड़ने वाले नक्षत्र चान्द्र नक्षत्र कहे जाते हैं। अन्य ग्रहों के भी ऐसे ही नक्षत्र हैं पर ये सब क्रांतिवृत्त से उत्तर दक्षिण ८° की दूरी के भीतर ही हैं इसी लिए फलित में क्रान्तिवृत्त धरातल के उत्तर-दक्षिण ८° ८° अर्थात् १६° चौड़ी एक सड़क पर दृश्यमान नक्षत्रों को ही फलित ज्योतिष में राशि-क्षेत्र माना है अन्य नक्षत्रों को नहीं। पर जब किसी ग्रह या चन्द्रमा का आकाशीय स्थान निर्धारण करना होता है तो उसका माप क्रांतिवृत्त ही होता है। जो ग्रह अपनी कक्षा में जिस समय जहाँ होगा तत्तुल्य उसका आकाशीय विस्तार क्रांतिवृत्त में जहां पड़ेगा उस समय का वही ग्रहस्पष्ट क्रांति-विषुव संपात से आगे उसके अंशादिकों में माना जाएगा। क्रांतिवृत्त तथा विषुववृत्त का संपात समस्त ग्रह स्पष्ट (ग्रहस्थाननिर्देश) का आरम्भ स्थान है। विषुव वृत्त पृथ्वी के भूमध्य रेखा के आकाशीय विस्तार का वृत्त है और चूंकि पृथ्वी अपनी कक्षा (क्रांतिवृत्त) पर लगभग २३½° झुकी है इस लिए पृथ्वी का विषुव वृत्त उसके क्रांतिवृत्त में दो जगह (काट) संपात करता है। प्रथम संपात को सायन मेषादि विन्दु कहते हैं। और दूसरे को तुलादि विन्दु। सभी ग्रहों के स्थान

निर्देशक आरम्भ विन्दु सायन मेषादि विन्दु हैं। पर यह विन्दु विलोम गति से दक्षिण-पश्चिम की ओर क्रांतिवृत्त में ५०·२६" विकला की वार्षिक गति से घसक रहा है जिससे प्रत्येक वर्ष क्रांतिवृत्त धरातल के आकाशीय विस्तार पर दिखाई पड़ने वाले तारे तथा उनसे संलग्न तारे क्रांतिवृत्त धरातल में अपने पूर्व स्थान से प्रत्येक वर्ष ५०·२६" विकला सायन संपात विन्दु से उत्तर पूर्व क्रांतिवृत्त में दिखाई पड़ते हैं। चूंकि सभी ग्रहों का नाक्षत्रिक तथा राशि संबन्धी फल ग्रहों तथा नक्षत्रों इन दोनों के तारतम्य से होता है इस लिए भारतीय फलित ज्योतिष में ग्रहों के पृथ्वी सापेक्ष स्थान निर्धारण (ग्रहोदय) श्रृंगोन्नति, ग्रह छाया आदि विषयों को छोड़ फलित के सभी पदार्थों में सायन स्थान से नहीं प्रत्युत उन नक्षत्रों से कहा जाता है जिसका स्वरूप प्रत्यक्ष है। दृश्यमान नक्षत्र परत्व से फलादेश की परिपाटी निरयन परिपाटी कही गई है। भारत में सर्वत्र निरयन जन्म कुण्डली तथा सभी ग्रहों के निरयन स्थान से फलादेश कहने व जानने की परिपाटी है। पाश्चात्य देशों में सायन ग्रहों से फल कहा जाता है। इस समय दोनों का अन्तर लगभग २३° का है। लेखक के मत से फलित में निरयन गणना ही वैज्ञानिक है सायन नहीं। इस संबन्ध में लेखक के लघुपाराशरी भाष्य के परिशिष्ट "ख" को पढ़ना चाहिए। वहाँ लेखक ने विस्तार से सायन-निरयन गणना पर विवेचना की है।

—— o ——

गणिताध्याय

समस्त ग्रहों का आकाशीय स्थान-निर्देश क्रांति-वृत्त के निरयन या सायन अंशादिक भागों में किया जाता है। क्रांतिवृत्त एक बड़ा वृत्त है। सभी वृत्त ३६० अंशों के होते हैं इस लिए क्रांतिवृत्त भी ३६०° का होता है। इसे भचक्र भी कहते हैं। इस भचक्र के बारह समान भागों को राशियां कहते हैं। इन भागों के आकाशीय विस्तार में तारों का समूह है और प्रत्येक ३०° के एक समूह को एक राशि कहते हैं। उन राशियों का नाम नाम से मिलते जुलते तारा समूह के स्वरूपों के अनुसार पड़ा है जैसे मेष राशि मेढ़े के स्वरूप जैसी है। इन राशियों में वृश्चिक राशि का स्वरूप तो ठीक विच्छू जैसा है। भचक्र का बारहवां हिस्सा एक राशि ३०° की है। जिस प्रकार भचक्र का द्वादश भाग एक राशि है उसी प्रकार उसका २७ वां भाग एक नक्षत्र है। ३६०° का बारहवां भाग ३०° है और उसका २७ वां भाग १३° २०′ है। इस तरह एक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं (१३° २०′ × २¼ नक्षत्र = ३०°)। एक नक्षत्र ४ भागों मे बांटा जाता है जिसे चरण कहते हैं इस लिए किसी भी नक्षत्र के एक चरण का माप ३° २०′ होता है। एक राशि में नौ चरण होते हैं (३° २०′ × ९ = ३०)

एक भचक्र = ३६०° = १२ राशि

एक राशि = ३६०°/१२ = ३०° = १८००′ कला

एक राशि = २¼ नक्षत्र = १८००′

एक राशि = २¼ × ४ = ९ नक्षत्र-चरण = १८००′ कला

एक राशि = १८००′ = १०८००″ विकला

एक राशि = ३०° अंश

१° अंश = ६०′ कला = ३६००″ विकला

१′ कला = ६० विकला = ३६०० पर वि०

एक भचक्र = २७ नक्षत्र = ३६०°

एक भचक्र = २९ × ४ = १०८ नक्षत्र-चरण = ३६०°

एक नक्षत्र = ३६०°/२७ = १३° २०′ = ८००′ कला

एक नक्षत्र = नक्षत्र के चार चरण

एक नक्षत्र चरण = १३°२०′/४ = ३°२०′

एक नक्षत्र = एक राशि का सवा दो वा भाग = ३०°/२¼ = १३° २०′ = ८००′ कला

एक नक्षत्र = १३°२०′ = ८००′ कला = ४८०००″ विकला

एक भचक्र में १२ राशियां अथवा २७ नक्षत्र अथवा १०८ नक्षत्र चरण होते हैं। राशियों के नाम, नक्षत्रों के नाम तथा चरणों की संख्या इस ग्रंथ की सारणी में दी हुई है। फलित ज्योतिष में जहाँ कहीं केवल राशियों की चर्चा होती है उससे तात्पर्य चन्द्रमा की ही राशि से होता है। फलादेश में जहाँ यह कहा गया हो कि जातक की राशि मीन है तो उसका अर्थ होगा कि उस जातक के जन्म समय में चन्द्रमा मीन राशि पर था। इसी प्रकार जिस किसी का नक्षत्र रेवती है उससे तात्पर्य यह है कि उस जातक के जन्म समय में चन्द्रमा रेवती नक्षत्र में था। व्यवहार में चन्द्रनक्षत्र को केवल नक्षत्र कहते हैं। पंचांगों में प्रत्येक दिवस के आगे तिथि तथा नक्षत्र का नाम दिया हुआ होता है। वहाँ नक्षत्र से तात्पर्य चन्द्र नक्षत्र से होता है। वहाँ नक्षत्र के आगे घटी पल दिए हुए होते हैं जिससे तात्पर्य है कि उस दिन का वह अंकित नक्षत्र उस दिन के सूर्योदय काल से उतनी घटी पल पर समाप्त होगा। पत्रों में (जब तक कोई विशेष उल्लेख न हो) सर्वत्र तिथि, नक्षत्र के समाप्ति का ही समय घटी पलों में दिया गया होता है। उदाहरणः—यदि किसी

घ. प.

दिन रेवती के आगे ३०।३५ लिखा हो तो उसका अर्थ होगा कि उस वार को

घ. प.

चन्द्रमा उस दिन के सूर्योदय समय से ३०।३५ तक रेवती नक्षत्र में रहेगा। उस दिन यदि सूर्योदय ६ बज कर १० मिनट पर हो तो उस दिन रेवती सूर्योदय से

घ. प. घं. मि० घं. मि. घं. मि. घं. मि.

आगे ३०।३५ = १२।१४ तक अर्थात् ६।१० + १२।१४ = १८।२४ तक अर्थात् = मध्यान्होत्तर सायं ६ बज कर २४ मिनट पर चन्द्रमा रेवती को छोड़ कर अश्विनी में प्रवेश करेगा। यदि किसी का जन्म उस दिन सायं ६।२४ के पहले का है तो उसका जन्म नक्षत्र रेवती तथा राशि मीन होगी। रेवती नक्षत्र मीन राशि का अंग है। अब यदि किसी का जन्म उस दिन सायं ६।२४ के उपरान्त का हो तो उसका जन्म नक्षत्र रेवती के बाद वाले नक्षत्र अश्विनी का है और राशि मेष है।

पंचांगों में नक्षत्र के आगे जो घटी पल दिया रहता है वह उस नक्षत्र की भोग सीमा दी गई होती है और उस दिन के पूर्व दिवस के सामने इस नक्षत्र के पहले वाले नक्षत्र का अंत और वर्तमान नक्षत्र का आरंभ समय दिया हुआ होता है। एक नक्षत्र का समाप्ति काल दूसरे नक्षत्र का आरंभ काल होता है इस लिए जिस दिन किसी नक्षत्र की जब समाप्ति होती है उस समय उसके आगे वाले नक्षत्र का आरंभ होता है उसी प्रकार जिस दिन जिस नक्षत्र की समाप्ति होती है उस दिन से

पूर्व वाले दिन में उस नक्षत्र का आरंभ काल और उस नक्षत्र से पूर्व वाले नक्षत्र का समाप्ति काल होता है। एक नक्षत्र की समाप्ति दूसरे का आरंभ, एक का आरंभ पूर्व की समाप्ति है। एक नक्षत्र के पूरे भोग काल को भभोग या सर्वर्क्ष कहते हैं। जातक का जिस समय जन्म हो उस समय तक उसका जन्म नक्षत्र जितना बीत चुका हो उसे भयात या भुक्त कहते हैं और जन्म समय से नक्षत्र को जितना भोगना शेष रह गया हो उसे भोग्य कहते हैं। भभोग—भयात = भभोग्य, भयात + भोग्य = भभोग, भभोग–भोग्य = भभुक्त या भयात यहाँ भ अक्षर का अर्थ नक्षत्र है।

सूर्योदय के उपरान्त जितने घटी पल विपल या घं. मिंट सेकेन्ड पर जातक का जन्म होता है उसे इष्ट या सूर्योदयादिष्ट कहते हैं। यदि किसी का जन्म किसी दिन, दिन के १० बजे का है और उस दिन सूर्योदय ६ बजे का है तो वहाँ उस जातक का इष्टकाल सूर्योदय से ४ घण्टे का अथवा १० घटी होगा जिसे सूर्योदयादिष्टम् घट्यादि १०।०० लिखा जाएगा।

यदि किसी के जन्म समय में, सूर्योदयादिष्ट १० घटी हो, उस दिन रेवती नक्षत्र
घ. प.
का मान ३०।३५ हो और उस दिन के पूर्व वाले दिन में उत्तराभाद्रपदा का मान
घ. प. घ. प. घ. प. घ. प.
२९।२५ हो तो २९।२५ से जन्म वाले दिन २९।२५ तक ६० घटी होगी, २९।२५ से
घ. प. घ. प. घं. घ. प.
३०।३५ तक १।१० और होंगे, इस तरह रेवती का पूरा मान (भभोग) ६० + १।१०
घ. प. घ. प.
= ६१।१० होगा उस दिन रेवती का अंत ३०।३५ पर है और इष्ट १० घटी है तो
घ. प. घ. प. घ. प. घ. प.
रेवती का अंत इष्ट काल से ३०।३५–१०।० = २०।२५ पर होगा। यह २०।२५ रेवती नक्षत्र का भोग्य काल है। भभोग ६१।१० में–२०।२५ भोग्य घटाया तो शेष
घ. प.
४०।४५ यह रेवती का भुक्त वा भयात काल होगा। अब यदि किसी का जन्म सूर्योदयात् इष्ट ३०।३५ के बाद अर्थात् रेवती के अन्तकाल के बाद का यदि ४०।३५
घ. प. घ. प.
पर हो तो वहाँ उसका जन्म नक्षत्र अश्विनी होगा और भभुक्त ४०।३५–३०।३५ = १० घटी होगा। भभोग के लिए जन्म दिवस के अगले दिवस के अश्विनी के समाप्तिकाल को देखना होगा। यदि दूसरे दिन अश्विनी का मान २९।२५ हो तो

जन्म दिवस के रेवती अन्त के ३०।३५ से दूसरे दिन के अश्विनी के अंत २९।२५
घ. प.
तक ६० घटी में १।१० कम समय होगा। ३०।३५–२९।२५ = १।१०; ६०–१।१०
घ प.
= ५८।५० यह इष्टकाल ४०।३५ पर अश्विनी का भभोग काल है। भभोग ५८।५०
घ. प.
में भुक्त १० घटी को घटाने से ५८।४० यह अश्विनी का भोग्य काल होगा।

जन्मकालिक इष्ट में चन्द्रमा जिस नक्षत्र में हो, उस नक्षत्र के भुक्तकाल के अनुपात से चन्द्रमा का स्पष्ट बनाया जाता है। एक नक्षत्र का मान १३°२०′ = ८००′ कला होता है। यदि किसी जातक का जन्म रेवती का हो और जातक के इष्टकाल में रेवती भुक्त १० घटी और भोग या सर्वर्क्ष ६० घटी का हो तो चन्द्र स्पष्ट इस प्रकार बनेगा।

$$(\text{गत नक्षत्र} \times ८००') + \frac{८००' \times \text{भुक्त}}{\text{भभोग}}$$

यहाँ गत नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा २६ वां नक्षत्र है। भभोग ६० घटी = भुक्त १० घटी है

$$(२६ \times ८००') + \left(\frac{८००' \times १०}{६०}\right) = २०८००' + \frac{८००'}{६} = २०८००' + १३३'२'' =$$

$$२०९३३'।२'' = \left(\frac{२०९३३'}{६०}\right) + २'' = ३४८° ५३' ०२'' = \overset{\text{रा}}{११}\ १८° ५३' ०२''$$

अस्तु यहाँ चन्द्र स्पष्ट मीन राशि के अठारह अंश, त्रैपन कला तथा दो विकला है।

नक्षत्र भभोग भयात जानने की रीति का एक उदाहरणः—

श्री शुभ सम्वत् २०१९ मार्ग शीर्ष शुक्ल २ वार बृहस्पति को प्रातः १० बज के ३ मिंट पर (स्टैंडर्ड टाइम) जिस किसी का जन्म हो तो (काशी में)
घं. मि.
(क) उस दिन का सूर्योदय (स्टैंडर्ड टाइम से) ६।२७ पर है। जातक का
घं. मि. घं. मि. घं. मि.
जन्म प्रातः १०।३ पर है इसलिए १०।३ में ६।२७ घटाया तो लब्धि हुई ३।३६ अर्थात्
घं. मि. घं. मि.
जातक का जन्म सूर्योदय से ३।३६ बाद का है। ३।३६ = ९ घटी इस ९ घटी को सूर्योदयादिष्टम् अथवा इष्ट कहते हैं।

(ख) उस दिन वार बृहस्पति को पंचांग में मूलनक्षत्र का मान ४६ घ. २० प. है। इसका अर्थ है कि उस दिन मूल नक्षत्र का अन्त उस दिन के सूर्योदय काल से ४६।२० उपरान्त हो जाएगा यह मूल का मान जातक के इष्ट से अधिक है अर्थात् जातक के जन्म के उपरान्त का है। जन्म समय (इष्ट) ९ घटी से ४६ घ. २० प. पर अर्थात् ४६।२० में ९ घटी घटाया तो ३७ घ. २० प. लब्धि हुई। यह जन्म समय से ३७ घ. २० प. पर मूल का अंत होगा। अस्तु जातक के लिये ३७।२० नक्षत्र मूल का भोग्य काल है। भोग्य का अर्थ है अभी भोगने को बाकी है।

(ग) जातक के जन्म दिवस वार बृहस्पति के पिछले दिन वार बुध को पंचांग में ज्येष्ठा नक्षत्र का अंत ४३ घ. ४५ प. पर अंकित है। ज्येष्ठा का अंत मूल का आरम्भकाल है। वार बुध ४३ घ. ४५ प. से वार बृहस्पति ४३।४५ तक पूरे ६० घटी होते हैं। वार बृहस्पति को मूल का अंत ४६।२० है इस लिए ६० घ. + (४६ घ. २० प. – ४३ घ. ४५ प. = ६० + २।३५ = ६२ घ. ३५ प. यह मूल नक्षत्र के पूरे भोग काल हुए। इसे भभोग या सर्वर्क्ष कहते हैं।

(घ) भभोग काल में भोग्य घटाने से नक्षत्र का भुक्त या भयात काल होता है। यहाँ भभोग ६२।३५ में भोग्य ३७।२० घटाया तो शेष २५।१५ यह मूल का भुक्त काल हुआ। अर्थात् जातक के जन्म काल में उसके जन्म के पहले ही मूल नक्षत्र २५ घ. १५ प. बीत चुका था।

उपरोक्त चारों पदार्थों को क्रम से इस प्रकार जानना चाहिए। उपरोक्त उदाहरण में जातक का इष्ट ९ घटी, सूर्योदय ६ घ. २७ प., मूल भोग (सर्वक्ष) ६२ घ. ३५ प.; भुक्त (भयात) २५।१५; भोग्य ३७।२०.

एक दूसरा उदाहरण :—

श्री शुभ संवत् २०१९ मार्गशीर्ष शुक्ल २ वार बृहस्पति को किसी का जन्म रात्रि के २ बज के १ मिनट पर हो।

(क) उस दिन का सूर्योदय ६घं. २७ मि. है। प्रातः ६।२७ से सायं ६।२७ तक तक १२ घंटे हुए। पुनः सायं ६।२७ से रात्रि १२ बजे तक ५ घं. ३३ मि. हुआ, पुनः मध्यरात्रि १२ से २।१ बजे तक २ घं. १ मि. हुआ। इन सब का योग १२ घं. + ५ घं. ३३ मि. + २घं. १ म. = १९ घं. ३४ मि. तत्तुल्य ४८ घ. ५५ प. यह जातक का सूर्योदयादिष्ट हुआ।

(ख) उस दिन मूल नक्षत्र का भोग ४६।२० तक है। यह जातक के इष्ट काल से कम है। इसका अर्थ हुआ कि जातक के जन्म काल से पूर्व ही मूल नक्षत्र की समाप्ति हो चुकी थी इष्ट समय पर पूर्वाषाढ़ नक्षत्र था। सूर्योदय से ४६।२० तक मूल था तदुपरान्त पू. षा. नक्षत्र का आरम्भ ४६।२० से हुआ। इष्ट ४८ घ. ५५ प. है इस लिए जन्म काल में ४८।५५ – ४६।२० = २घ. ३५ प. यह पू. षा. बीत चुका था। अस्तु, यहां २ घ. ३५ प. पूर्वाषाढ़ का भयात वा भुक्त है।

(ग , जन्म समय उस दिन पू. षा. का आरम्भ अर्थात् मूल का अन्त) ४६।२० से है। यह पू. षा. नक्षत्र जन्म दिवस के दूसरे दिन वार शुक्र को ४८।०० पर समाप्त होता है (उ. षा. का आरम्भ)। अब जन्म दिवस के ४६।२० से वार शुक्र (दूसरे दिन) के ४६।२० तक ६० घटी हुई। पू. षाढ़ का अन्त ४८।०० है इस लिए दूसरे दिन ४८।०० – ४६।२० = १ घ. ४० प. यह ६० घटी के उपरान्त का समय पू. षाढ़ के पूरे भोग का समय है अर्थात् यहां पू. षाढ़ का भभोग काल ६०।०० + १।४० = ६१ घ. ४० प. है।

भभोग में भुक्त घटाने से नक्षत्र का भोग्य काल होता है। यहां भभोग ६१।४० में भुक्त २।३५ घटाया तो शेष ५९।०५ यह भोग्य काल हुआ जिसका अर्थ है कि जातक के जन्म काल से ५९ घ. ०५ प. तक पू. षाढ़ नक्षत्र रहेगा।

उपरोक्त चारों पदार्थ इस प्रकार हुए :—

यहां जातक का इष्ट ४८ घ. ५५ प. (सूर्योदय ६ घ. २७ मि.) नक्षत्र पू. षा. का भभोग ६१।४०. भुक्त २।३५ तथा भोग्य ५९।०५ है।

भभोग भयात से चन्द्रस्पष्ट करने की रीति का एक और उदाहरण :—

मूल का भभोग ६२ घ. ३५ प. = ३७५५ प. भुक्त २५ घ. १५ प. = १५१५ प. हो तो :—

एक नक्षत्र का भोग मान १३° २०′ = ८००′ कला है।

नक्षत्र क्रम में मूल नक्षत्र की संख्या १९ वीं है और मूल से पहले ज्येष्ठा नक्षत्र मूल का गत नक्षत्र है जिसकी क्रम संख्या १८ है। गत नक्षत्र १८ × ८००′ = १४४००′ कला। यहां गत नक्षत्र से तात्पर्य है कि जन्म काल में १८ नक्षत्र बीत चुका तत्तुल्य चन्द्रमा को १४४०० कलाएं बीत चुकी और वर्तमान नक्षत्र मूल के १५१५ पल तुल्य चन्द्रमा की कलाएँ भी बीत चुकीं। यहां चन्द्रमा की ८०० कलाएँ मूल नक्षत्र के भभोग ६२।३५ = ३७५५ पल में व्यतीत होती हैं। अस्तु, यहां जब चन्द्रमा

३७५५ पल में ८०० कला भोगता है तो वह मूल के भुक्त २५ घ.१५प. = १५१५ पल में कितने अंशादि भोगेगा। इसका फल त्रैराशिक से इस प्रकार होगा:—

३७५५ में $८००'$ कला तो १५१५ कला में $= \frac{८०० \times १५१५}{३७५५} = \frac{८०० \times ३०३}{७५१} =$ $\frac{२४२४००'}{७५१} = ३२२'।४६''।१०''' \cdots = ५^\circ।२२'।४६''।१०'''$ यह मूल के भुक्त का चन्द्र स्पष्ट हुआ। अब इस स्पष्ट में गत नक्षत्र तक के व्यतीत हुए चन्द्र स्पष्ट १४४०० कलाओं को जोड़ने से जन्मकालिक चन्द्र स्पष्ट होगा। यहां $१४४००' = २४०^\circ = ८$ राशि। ८ राशि $+ ५^\circ।२२'।४६''।१०''' =$ रा. $८।५^\circ।२२'।४६''।१०'''$ यह मूल के भभोग ६२ घ.३५ प. तथा भुक्त २५।१५ का चन्द्र स्पष्ट है।

अथवा:—(गत नक्षत्र संख्या $\times १३^\circ २०'$) + वर्तमान नक्षत्र के $\left(\frac{\text{भुक्त पलादि} \times ८००'}{\text{भभोग}}\right)$ = चन्द्र स्पष्ट।

यहां $(१३^\circ २०' \times १८) + \left(\frac{१५१५' \times ८००'}{३७५५}\right) = (१८ \times ८००') + ५^\circ।२२'।४६''।$ $१०''' =$ रा. $८।५^\circ।२२'।४६''।१०'''$

नक्षत्र के भभोग भयात से नक्षत्र के चरण तथा चरण के भोग भुक्त तथा भोग्य काल जानने की रीति।

एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं इस लिए किसी भी नक्षत्र के भभोग मान को चार से भाग देने पर लब्धि उस चरण का भोग मान होता है। यदि किसी नक्षत्र का जन्म कालिक भभोग ६० घ. ४० प. हो तो उस नक्षत्र का चरण मान $\frac{६०।४०}{४} =$ घ. प. १५।१० होगा। प्रथम चरण १५ घ. १० प. तक, द्वितीय चरण १५।१० से ३०।२० तक, तृतीय चरण ३०।२० से ४५।३० तक तथा चतुर्थ चरण ४५।३० से ६०।४० तक होगा।

अब यदि जन्म समय किसी नक्षत्र का भभोग ६०।४० तथा भुक्त २० घ.५ प. हो तो यह भुक्त नक्षत्र के द्वितीय चरण के मान १५।१० से ३०।२० के बीच में पड़ेगा अस्तु उसका जन्म उक्त नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ माना जायगा।

यहां भभोग ६० घ. ४० प. = ३६४० पल, भुक्त २०।५ = १२०५ पल है। नक्षत्र-भभोग के चरण का मान $\frac{३६४०}{४}$ पल = ९१० पल हुआ। प्रथम चरण का मान ० से ९१० पल तक, द्वितीय का ९१० से १८२० पल तक, तृतीय का मान १८२० से

२७३० पल तक तथा चतुर्थ का मान २७३० से ३६४० पल तक होगा। भुक्त के पल १२०५ हैं जो नक्षत्र के द्वितीय चरण मान ९१० पल से १८२० पल के भीतर है अस्तु जन्म नक्षत्र के द्वितीय चरण का है।

यहां भभोग ३६४० पल, भुक्त १२०५ पल हैं। द्वितीय चरण का मान ९१० से १८२० पल तक है। नक्षत्र भुक्त १२०५ पल है इस लिए द्वितीय चरण के आरम्भ ९१० पल से १२०५ पल तक द्वितीय चरण का जन्मकालिक भुक्त मान १२०५–९१० = २९५ पल होगा। तथा १८२०–१२०५ = ६१५ पल द्वितीय चरण का भोग्यकाल होगा। भुक्त + भोग्य = भोग, अस्तु २९५ + ६१५ = ९१० पल द्वितीय चरण का भोग काल है।

अस्तु उपरोक्त उदाहरण में भभोग ६०।४० भभुक्त २०।५ के अनुसार यहां नक्षत्र चरण काल ९१० प. भुक्त २९५ पल और भोग्य ६१५ पल होगा।

नक्षत्र चरण के भोग भुक्त भोग्य से काल चक्र दशा का संबंध है। काल चक्र दशा नक्षत्र के चरण से चलती है। उस दशा में चरण की नवमांश राशि के दशावर्ष के अनुसार से चरण भोग भुक्त के अनुपात से महादशा का भुक्त भोग काल निकाला जाता है। विंशोत्तरी दशा में नक्षत्र के स्वामियों के दशावर्ष के अनुसार नक्षत्र भभोग भयात से दशा बनाई जाती है। वहां नक्षत्र से दशा का आरम्भ होता है।

नक्षत्र भभोग भयात से विंशोत्तरी दशा आनयन—

यदि किसी का जन्म भरणी नक्षत्र का हो। भरणी भभोग ६०।४० भुक्त २०।५ हो तो विंशोत्तरी में भरणी नक्षत्र का स्वामी शुक्र है जिसकी महादशा का वर्ष २० नियत है।

भभोग ६०घ.४०प. = ३६४० पल, भुक्त २०घ.५प. = १२०५ पल भभोग ३६४० पल में शुक्र २० वर्ष तो १२०५ में कितने वर्ष = $\frac{२० \times १२०५}{३६४०}$ वर्ष = ६व.७मा.१३दि.३०घ. यह शुक्र का भुक्त काल होगा। २० वर्ष में घटाने से अर्थात् व.२०–व.६म.७।१३।३० = वर्षादि १३।४।१५।३० यह क्र का भोग्य काल होगा। यहां भुक्त काल का अर्थ है कि उपरोक्त भभोग भयात वश जातक के जन्म के पहले ही उसकी शुक्र की महादशा वर्ष के ६।७।१३।३० व्यतीत हो चुके और जन्म समय से उसके शुक्र की महादशा के वर्षादि १३।४।१५।३० व्यतीत होने को हैं। अर्थात् जन्म

समय से आरम्भ होकर शुक्र की महादशा जन्म समय से १३।४।१५।३० तक रहेगी। इसके बाद फिर क्रम से सूर्य के बाद चन्द्रादि की दशा चलती रहेगी।

विंशोत्तरी महादशा सारणी नीचे दी जाती है

नक्षत्र	अश्विनी मघा मूल	भरणी पू. फा. पू. षा.	कृतिका उ.फा. उ. षा.	रोहिणी हस्त श्रवण	मृगशिरा चित्रा धनिष्ठा	आर्द्रा स्वाती शत भषा	पुनर्वसु विशाखा पू. भाद्र.	पुष्य अनुराधा उ.भाद्र	आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती
नक्षत्र स्वामी	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	बृहस्पति	शनि	बुध
महादशा वर्ष	७	२०	६	१०	७	१८	१६	१९	१७

विंशोत्तर में प्रत्येक ग्रह की महादशा में नवग्रहों की अन्तरदशा तथा प्रत्येक अन्तर में नवग्रहों का प्रत्यन्तर चलता है। ग्रह की महादशा में उसी ग्रह से अन्तर का आरंभ होकर महादशा ग्रह क्रम के अनुसार अंत होता है। विंशोत्तरी महादशा, अन्तर, प्रत्यन्तर की सारिणि इसी ग्रन्थ में अन्यत्र दी गई है। विशेष विवरण के लिये लेखक की पुस्तक "लघुपाराशरी भाष्य" को पढ़ना चाहिए। विंशोत्तरी दशा में कारक तथा मारक ग्रहों का निर्णय कर फल कहा गया है। लेखक का सुझाव है कि कालचक्रान्तरगत मारक राशियों की दशा के समय विंशोत्तरी के मारक ग्रहों के समय का भी आनयन करके देखना चाहिये। कालचक्र मारक राशि की दशा के समय यदि विंशोत्तरी की भी मारक दशा आती हो तो मारक अरिष्ट और उग्र हो जाता है।

नक्षत्र चरणभोग, चरणभुक्त से कालचक्रदशा आनयन की रीति

ध्रुवाः—$\frac{\text{नक्षत्र चरण परमायु वर्ष} \times \text{नत्रक्ष चरण भुक्त (भयात)}}{\text{नक्षत्र चरण भोग}}$ = वर्षादि भुक्त महादशा

कालचक्र में प्रत्येक नक्षत्र चरण की एक परमायु होती है। उसी परमायु वर्ष को नक्षत्रचरण का महादशा वर्ष मानना चाहिए।

कालचक्र दशान्तरगत नक्षत्रों के चरण की परमायु वर्ष जानने की गणना

$\frac{\text{(गत नक्षत्र संख्या} \times \text{४) + वर्तमान नक्षत्रचरण}}{\text{१२}}$ = लब्धि को "क" शेष को "ख" मानो।

$\frac{\text{"ख"}}{\text{४}}$ = शेष "ग"। अब यदि "क' सम अंक हो और "ग" १ तो वर्तमान नक्षत्र चरण का परमायु वर्ष १००, ग" २ तो ८५; "ग" ३ = ८३ वर्ष, "ग" ४ = ८६

वर्ष। "क" यदि विषम अंक हो तो "ग" १ = ८६; "ग" २ = ८३, "ग" ३ = ८५ तथा "ग" ४ = १०० वर्ष होगा।

	ग १	ग २	ग ३	ग ४	
"क" सम अंक	१००	८५	८३	८६	परमायु वर्ष
"क" विषम अंक	८६	८३	८५	१००	परमायु वर्ष

(१) उदाहरण:-स्वाती के तृतीय चरण का परमायुवर्ष (महादशावर्ष) कितना होगा। स्वाती का गत नक्षत्र चित्रा है। चित्रा की नक्षत्र संख्या १४ है। वर्तमान स्वाती के तृतीय चरण की संख्या ३ है।

$\frac{(१४ \times ४)+३}{१२} = \frac{५६+३}{१२} = \frac{५९}{१२}$ = लब्धि ४, शेष ११. लब्धि ४ = "क"। शेष ११ = "ख" शेष ११ को ४ से भाग दिया $\frac{११}{४}$ तो शेष ३ बचा शेष ३ = "ग"। यहाँ "क" ४ सम अंक है और ग ३ अंक है। उपरोक्त सारणी में "क" सम, ग ३ की परमायु ८३ वर्ष है।

(२) अश्विनी प्रथम चरण की परमायु क्या होगी। यहाँ अश्विनी का गत नक्षत्र ० शून्य है क्योंकि अश्विनी से नक्षत्र क्रम चलता है। अश्विनी के प्रथम चरण की संख्या १ है। ०×४+१ = ०+१ = १ यहाँ १ ही "ग" है और 'क" ० है। ० सम अंक है और "ग" १ है अस्तु परमायु १०० वर्ष है।

(३) अश्विनी, भरणी, कृतिका तक इनके चरणों की सभी संख्या १२ से कम है अस्तु वहाँ गत नक्षत्र संख्या ×४ "क" है और नक्षत्रचरणसंख्या ही "ग" है

कृतिका ३ चरण की परमायु = गतनक्षत्र भरणी २×४ = ८ यह सम अंक "क" है और कृतिका का तृतीय चरण "ग" ३ है। इसलिए परमायु ८३ वर्ष है।

नोट:—प्रत्येक नक्षत्र चरण की परमायु संख्या (वर्ष) सारणी संख्या २ में क्रम से दी गई है।

उदाहरण:—भरणी भभोग ६०घ.४०प. = ३६४० पल, भुक्त २०।५ = १२०५ पल

नक्षत्र भभोग भयात से नक्षत्र चरण के भोग, भुक्त जानने की रीति ऊपर दी जा चुकी है। उससे यहाँ भरणी के द्वितीय चरण का भोग ९१० पल, भुक्त २९५ पल है। भरणी के द्वितीय चरण का परमायु वर्ष ८५ हैं। अस्तु भरणी द्वितीय चरण का भुक्त $\frac{८५ \times १२०५}{३६४०}$ वर्ष होगा $\frac{१०२४२५}{३६४०}$ वर्ष = वर्षादि २८।०१।२० भुक्त है।

वर्ष८·५ – २८व.१मा.२०दि. = वर्षादि५६।१०।१०यह भोग्यायु है। अस्तु उपरोक्त भरणी द्वितीय चरण भभोग भयात पर जातक की परमायु ८५ वर्ष, उसमें से जन्मकाल के पूर्व ८व.१मा.२०दि. बीत गया और शेष वर्षादि ५६।१०।१० जन्मारंभ से भोगने को बाकी है। नक्षत्र चरण के भोग काल को परमायु कहते हैं। यह उस नक्षत्र चरण की महादशा वर्ष है जिसमें नौ राशियों की भुक्ति हो जाती है। प्रत्येक नक्षत्र चरण में नौ राशियों की भुक्ति (दशा) होती है और उन नौ राशियों के दशा वर्षों का योग ही परमायु है। परमायु में से भुक्त वर्षादि को घटाने से भोग्यायु होती है जो उस चरण सम्बधी जातक की भोग्यायु मानी जाती है।

उदाहरण :—प्रथम वर्ग के किसी भी नक्षत्र के द्वितीय चरण का भोग काल ९०० पल हो, भुक्त ३२० पल तो वहां दशा क्रम कैसा होगा।

(प्रथम वर्ग के द्वितीय चरण का महादशा वर्ष ८५ है)

$$\frac{\text{नक्षत्र चरण महादशा वर्ष} \times \text{नक्षत्र चरण भुक्त पल}}{\text{नक्षत्र चरण भोग काल (पलों में)}} = \text{काल चक्र महादशा भुक्त काल।}$$

महादशा वर्ष–भुक्त काल=जन्म कालिक भोग्य काल

यहां $\frac{\text{८५ (महादशा वर्ष)} \times \text{३२०}}{\text{९००}}$ = ३४ वर्ष। यह ३४ वर्ष महादशा का भुक्त काल है। ८५ वर्ष–३४ वर्ष = ५१ वर्ष भोग्य हैं। भोग्य को भोग्यायु कहते हैं। महादशा वर्ष को परमायु कहते हैं। यहां भुक्त ३४ वर्ष है अस्तु, कृत्तिकादि प्रथम वर्ग के नक्षत्रों के द्वितीय चरण का दशा क्रम इस प्रकार होगा।

राशि क्रम :—	मकर	कुम्भ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	योग
दशा वर्ष :—	४	४	१०	७	१६	९	२१	५	९	८५ वर्ष

यहां कृत्तिका द्वितीय चरण की महादशा के वर्ष ३४ पूर्व जन्म में बीत चुके। इस प्रकार यहा मकर के ४ कुम्भ के ४, मीन के १०, वृश्चिक के ७ तुला के ९ वर्ष व्यतीत हो चुके, वतमान तुला के ७ वर्ष भोगने को हैं। अस्तु यहां जन्म कालिकदशा का आरम्भ तुला के भोग्य ७ वर्ष से होगा जिसके लिखने की रीति विंशोत्तरी दशावत् निम्न है।

जन्म संवत् २०२० सूर्य १।२ हो तो :—

	७	६	४	५	३	
राशि	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	
संवत्	२०२०	२०२७	२०३६	२०५७	२०६२	२०७१
	१	१	१	१	१	१
	२	२	२	२	२	२

इस चक्र के उपरान्त कृत्तिका के तृतीय चरण की दशा चलेगी। तब वहां तृतीय चरणानुसार देह जीव राशियां बदल जाएंगी।

उपरोक्त चक्र में कर्क, मिथुन मण्डूक राशि, सिंह मर्कटी, मकर देह तथा मिथुन जीव राशि हैं। यहां देह राशि की दशा जन्म के पूर्व ही समाप्त हो चुकी तथा वृश्चिक (सिंहावलोक) राशि की भी दशा अप्राप्य है।

अन्तर का ध्रुवा:—

$$\frac{\text{राशिदशा वर्ष} \times \text{अन्तर राशि दशा वर्ष}}{\text{परमायु}} = \text{अन्तर वर्षादि}$$

(१) उदाहरण:—परमायु १०० वर्ष, धनु की दशा में मिथुन के अन्तर का क्या मान होगा।

$$\frac{\text{धनु १० वर्ष} \times \text{मिथुन ९ वर्ष}}{\text{पूर्णायु १००}} = \frac{१० \times ९}{१००} = \frac{९०}{१००} \text{वर्ष} = \text{० वर्ष, १० मा., २४ दि.}$$

धनु में मिथुन के अन्तर का चन्द्र अपसव्य नक्षत्र ५, ६, ११, १२, १७, १८, २३, २४ के चतुर्थ चरण में, अश्विन्यादि १० नक्षत्रों के प्रथम चरण में पड़ता है।

(२) पुष्य द्वितीय चरणमें परमायु ८५ मकर में कर्क के अन्तर का क्या मान होगा।

$$\frac{\text{मकर दशा वर्ष ४} \times \text{कर्क दशा वर्ष २१}}{\text{परमायु ८५ वर्ष}} = \frac{४ \times २१}{८५} = \frac{८४}{८५} \text{वर्ष} = \text{० वर्ष, ११}$$

मा. २५ दि. ४५ घ. ५३ प.।

चन्द्रस्पष्ट से कालचक्रदशा बनाने की रीति

चन्द्रस्पष्ट को कला में परिणत करके उसे २००′ कला से भाग देना चाहिए। लब्धि गत नक्षत्र चरणों की संख्या होगी और शेष कलाएँ वर्तमान जन्म नक्षत्र की भुक्त कला होंगी। वर्तमान जन्म नक्षत्र की जो अंशराशि हो उसके परमायु वर्ष को भुक्त कलाओं से गुणाकर उसमें १००′ कला का भाग देने पर जो उपलब्ध हो वह जन्म नक्षत्र के भुक्त वर्षादि काल होंगे। परमायु वर्ष में इस भुक्त वर्षादि को घटाने से दशा का भोग्य वर्षादि काल अर्थात् जन्म से भोग्य वर्षादि काल होगा।

उदाहरण—चन्द्रस्पष्ट ३।०६।५० पर काल चक्रदशा बनानी है।

$$३।०६।५० = ५८१०' \text{ कला } \frac{५८१०'}{२००'} = \text{लब्धि २९ तथा शेष १०′ होते हैं।}$$ अर्थात्

जन्म समय में नक्षत्रों के २९ चरण व्यतीत हो चुके, वर्तमान तीसवें नक्षत्र-चरण का जन्म है। तीसवें चरण में १०′ भी बीत चुकी है। तीसवाँ चरण आठवें नक्षत्र का दूसरा है, अस्तु, चन्द्रस्पष्ट ३।०६।५० पर जातक का जन्म पुष्य नक्षत्र के द्वितीय

चरण के १०′ भुक्त होने पर हुआ है और उसे पुष्य नक्षत्र के द्वितीय चरण के १९०′ कला भोगने को है। पुष्य नक्षत्र के द्वितीय चरण की अंशराशि कन्या है परमायु ८५ वर्ष है अब अनुपात लगाया तो- जब २००′ में परमायु ८५ वर्ष

तो भुक्त १०′ में $\frac{८५ \times १०}{२००}$ = ४ वर्ष ३ माह भुक्त होंगे। परमायु ८५ में ४ व०।३ माह घटाया तो भोग्य वर्षादि ८०।९ प्राप्त होंगे।

पुष्यनक्षत्र कालचक्रक्रम में सव्य क्रम है और उसके द्वितीय चरण की दशा का आरम्भ कुंभ राशि से होता है और उपरान्त व्युत्क्रम से मकर धनु को चलकर फिर क्रम से मेष से कन्या तक चलती है। चूँकि यहाँ पुष्य नक्षत्र के द्वितीय चरण के ४ वर्ष ३ माह व्यतीत हो चुके हैं। आरम्भ में कुंभ की ४ वर्ष दशा बीत गई तथा मकर की भी ३ वर्ष में ३ माह बीत गए इसलिए ४ व०-३ माह = ३ व० ९ माह मकर शेष रहे। जन्म से मकर की दशा का आरम्भ होगा जिसकी दशा ३ वर्ष ९ माह रहेगी। उपरान्त दशाक्रम यथावत् चलेगा।

इसे निम्न प्रकार से लिखना चाहिए। (जन्म सं० २०१९, सूर्य ३।२० चन्द्र ३।०६।५०) पुष्य द्वितीय चरण भुक्त १०′ भोग्य १९०′ कन्यांश परमायु ८५ भुक्त वर्षादि ४।३ भोग्य वर्षादि ८०।९ सव्यदशा क्रम। देहराशि कुम्भ तदीशो शनिः, जीवराशि कन्या तदीशो बुधः। जन्मतः मकर भुक्त ०।३

	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	
	शनि	वृहस्पति	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	
वर्ष ० मास ३	३ ९	१०	७	१६	९	२१	५	९	
संवत् सूर्य राशि अंश	२०१९ ३ २०	२०२३ ०० २०	२०३३ ०० २	२०४० ०० २०	२०५६ ०० २०	२०६५ ०० २०	२०८६ ०० २०	२०९१ ०० २०	२१०० ०० १०

कन्या की समाप्ति पर पुष्य के तृतीय चरण की दशा चलेगी। तब यहाँ देह और जीवराशियाँ बदल जाएँगी।

उपर्युक्त दशाचक्र में कन्या जीवराशि है, धनु के उपरान्त मेष की दशा सिंहावलोक गति संज्ञक है।

विंशोत्तरीदशा से कालचक्रदशा बनाने की रीति।

यदि किसी का जन्म राहु की महादशा भोग्य ३।५।२३ वर्षादि तथा भुक्त वर्षादि १४।६।७ हो चन्द्रमा तुलाराशि में हो तो, (राहु की महादशा १८ वर्ष की होती है) राहु आर्द्रा स्वाती तथा शतभिषा नक्षत्रों का स्वामी है। चद्रमा तुला में है। तुला के अन्तर्गत स्वाती नक्षत्र है। अस्तु जन्म स्वाति नक्षत्र का हुआ। स्वाति का विंशोत्तरी मान १८ वर्ष, उसके एक चरण का मान ४ व० ६ माह है, द्वितीय का ९ वर्ष, तृतीय का १३ व० ६ माह तथा चतुर्थ का १३ व० ६ माह से १८ व० तक है। यहाँ राहु भुक्त १४।६।७ है जो चतुर्थ चरण के अन्तर्गत है, अस्तु जन्म स्वाति के चतुर्थ चरण का है। १४ व० ६ माह ७ दि० में से १३ व० ६ माह घटाया तो शेष १ वर्ष ० माह ७ दिन स्वाति के चतुर्थ चरण का राहु भुक्त हुआ।

कालचक्र में स्वाति चतुर्थ चरण के परमायु वर्ष ८६ हैं।

४ व०।६ माह (१६२० दिन) में ३६७ दिन (१।०।७) भुक्त

तो ८६ वर्ष (३०९६० दिनों) में—

$$\frac{३६७ \times ३०९६०}{१६२०} \text{ दिन} = \frac{११३६२३२०}{१६२०} = \text{दिवस} = १९ \text{ व० } ५ \text{ माह } २३ \text{ दि०}$$

४६ घटी = यह स्वाती नक्षत्र चतुर्थ चरण का भुक्तकाल हुआ इसे ८६ में घटाने से वर्षादि ६६।६।६।१४ भोग्य होगा। इस पर से पूर्व रीति के अनुसार कालचक्रदशा बन जायगी।

नक्षत्रचरण की अंशराशि को जानने की गणना।

जन्मकालिक गत नक्षत्र की संख्या को ४ से गुणाकर उसमें १२ का भाग देने पर जो लब्धि हो यदि वह लब्धि सम अङ्क हो तो भाजित अङ्क के शेष अंक में वर्तमान नक्षत्र चरण की संख्या को जोड़ने पर जो संख्या हो वह उस जन्मनक्षत्र चरण की अंशराशि होगी। गत नक्षत्र को ४ से गुणाकर उसमें १२ का भाग देने पर यदि लब्धि विषम अंक की हो तो शेष अंक ही जन्मकालिक नक्षत्र के प्रथम चरण की अंशराशि होगी।

उदाहरण—

(क) स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण की कौन सी अंशराशि होगी ?

स्वाति नक्षत्र १५ वाँ नक्षत्र है। गत नक्षत्र १४ वाँ है। $\frac{१४ \times ४}{१२} =$

लब्धि ४ शेष अंक ८ हुआ। लब्धि (अंक ४) सम है इसलिए शेष अंक ८ में वर्तमान नक्षत्र के द्वितीय चरण में २ को जोड़ने पर फल ८+२=१० हुआ। १० मकर राशि है इसलिए स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण की अंशराशि मकर है।

(ख) ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण की कौन सी अंशात्मक राशि होगी ?

ज्येष्ठा के गत नक्षत्र अनुराधा की संख्या १७ है। $\frac{१७ \times ४}{१२}$ लब्धि ५ शेष ८। यहाँ लब्धि ५ विषम संख्या है और शेष संख्या ८ में ज्येष्ठा के तृतीय चरण की संख्या (३ में १ मकर) संख्या २ को जोड़ने से ८+२=१० मकर राशि ज्येष्ठा के तृतीय चरण को अंशराशि है।

अंश राशियों के परमायुवर्ष जानने की सारणी

अंशराशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
अंशराशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
अंशराशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
परमायुवर्ष	१००	८५	८३	८६

प्रथम पंचम नवम अंशराशि के परमायु वर्ष १००
द्वितीय षष्ट दशम ,, ,, ८५
तृतीय सप्तम एकादश ,, ,, ८३
चतुर्थ अष्टम द्वादश ,, ,, ८६
होते हैं।

कालचक्रदशा में राशियों के दशावर्ष इस प्रकार होते हैं:—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	धनु	मकर
राशि	वृश्चिक	तुला	कन्या	×	×	मीन	कुम्भ
राशि स्वामी ग्रह	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	गुरु	शनि
दशावर्ष	७	१६	९	२१	५	१०	४

काल चक्र दशा में राहु केतु की दशा नहीं होती पर यदि किसी राशि में राहु या केतु बैठा हो तो उस राशि को पापाक्रान्त कहा जाता है।

कालचक्र दशा का आधार

कालचक्र दशा का आधार चन्द्र नक्षत्र है। प्रत्येक दशा का आरम्भ नक्षत्र के चरण से होता है। नक्षत्र २७ हैं और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। इस तरह २७ नक्षत्रों के १०८ चरण होते हैं। इन १०८ चरणों के १०८ दशाचक्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र चरण में नवराशियों को दशा होती है। इस तरह एक चन्द्र भचक्र (२७ नक्षत्रों में १०८ ९ = ९७२ बार राशियों की दशा भुगत जाती है और राशियों की दशा का मूल आरम्भ स्थान अश्विनी का प्रथम चरण है। अश्विनी के प्रथम चरण की दशा का आरम्भ मेष राशि से होता है। अश्विनी में मेष से लेकर धनु तक नव राशियों का दशा चलती है इसके उपरान्त अश्विनी के द्वितीय चरण की दशा का आरम्भ मकर से मीन तक सव्यक्रम से, उपरान्त वृश्चिक से व्युत्क्रम से मिथुन तक नव राशियों को दशा होती है। सव्य दशा का क्रम मेष से मीन तक १२ राशियों का फिर वृश्चिक से धनु तक व्युत्क्रम से चलता रहता है। अपसव्य नक्षत्रों में दशा का क्रम धनु से तथा फिर व्युत्क्रम से मीन से मेष तक चलता रहता है। चूंकि प्रत्येक नक्षत्र चरण में नौ राशियों की ही दशा रहती है और राशियां बारह हैं इस लिए किसी भी नक्षत्र चरण में कोई भी एक क्रम पूरा नहीं हो पाता।

कालचक्र दशा क्रम के अनुशार २७ नक्षत्रों को २ श्रेणी तथा ४ वर्ग में विभाजित किया जा सकता है तथा राशियों की दशाओं को भी २ श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है। नक्षत्रों की दो श्रेणी हैं। एक सव्य दूसरी अपसव्य आरम्भ से प्रथम तीन नक्षत्र सव्य नक्षत्र है, उपरान्त के तीन नक्षत्र अपसव्य नक्षत्र हैं, इसके उपरान्त के तीन नक्षत्र सव्य नक्षत्र हैं। इसी प्रकार प्रत्येक तीन नक्षत्रों की एक श्रेणी है। इसी प्रकार राशियों की भी दो श्रणी हैं। एक सव्य दूसरो अपसव्य, पर बारहों राशियां सव्य तथा वे ही अपसव्य पुनरावृत्ति में हो जाती हैं।

नक्षत्रों की श्रेणी

सव्य नक्षत्र :—अश्विनी (१), भरणी (२), कृत्तिका (३), पुनर्वसु (७), पुष्य (८) आश्लेषा (९), हस्त (१३), चित्रा (१४), स्वाती (१५), मूल (१९) पूर्वाषाढ (२०), उत्तराषाढ (२१), पूर्वाभाद्रपद (२५), उत्तराभाद्रपद (२६), रेवती (२७)।

अपसव्य नक्षत्र :—रोहिणी (४), मृगशिरा (५), आर्द्रा (६), मघा (१०), पू० फाल्गुनी (११), उत्तरा फाल्गुनी (१२), विशाखा (१६), अनुराधा (१७), ज्येष्ठा (१८), श्रवण (२२), धनिष्ठा (२३), शतभिषा (२४)।

उपरोक्त सव्य तथा अपसव्य नक्षत्रों का पृथक् पृथक् वर्गीकरण इस प्रकार है।—

प्रथम श्रेणी

- **१० सव्य नक्षत्र प्रथमवर्ग :**—अश्विनी (१), कृत्तिका (३), पुनर्वसु (७); आश्लेषा (९), हस्त (१३), स्वाती (१५), मूल (१९), पू.षा. (२१), पू.भाद्र. (२५), रेवती (२७)।
- **५ सव्य नक्षत्र द्वितीयवर्ग :**—भरणी (२), पुष्य (८), चित्रा (१४), पू.षाढ (२०), उ.भाद्रपद (२६)।

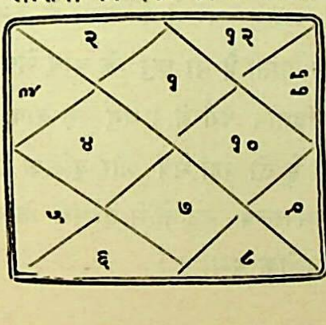
द्वितीय श्रेणी

- **४ अपसव्य नक्षत्र तृतीयवर्ग :**—रोहिणी (४), मघा (१०), विशाखा (१६), श्रवण (२२)।
- **८ अपसव्य नक्षत्र चतुर्थवर्ग :**—मृगशिरा (५), आर्द्रा (६), पू. फा. (११), उ. फा. (१२), अनुराधा (१७), ज्येष्ठा (१८), धनिष्ठा (२३), शतभिषा (२४)।

सव्य नक्षत्रों में दशा का क्रम

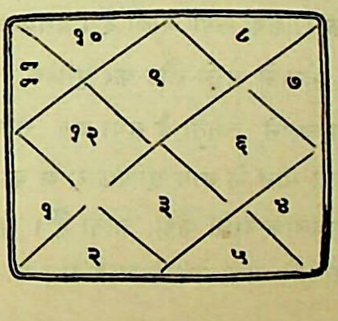
(राशियों की दशा)

राशियों की दशा का सव्य क्रम

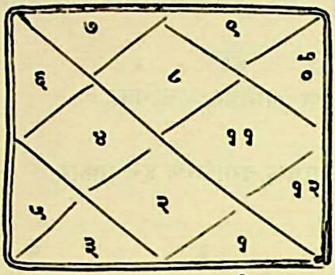


अपसव्य नक्षत्रों में दशा का क्रम (राशियां)

राशियों का सव्य क्रम

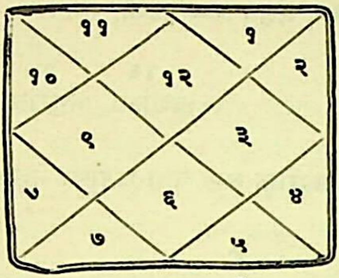


राशियों का अपसव्य क्रम



सव्य नक्षत्र के प्रथम वर्ग की दशा, क्रम से प्रथम चरण से मेष से आरंभ हो कर मीन तक, फिर वृश्चिक से धनु तक, फिर मेष से मीन तक जाकर समाप्त हो जाती है। सव्य नक्षत्र के द्वितीय वर्ग के प्रथम चरण का आरंभ वृश्चिक से अपसव्य रीति से धनु तक, फिर मेष से मीन तक, फिर वृश्चिक से धनु तक चल कर समाप्त हो जाता है।

राशियों का अपसव्य क्रम



अपसव्य नक्षत्र (तृतीय वर्ग) की दशा का आरम्भ धनु से सव्य मार्ग से वृश्चिक तक, फिर मीन से अपसव्य मार्ग से मेष तक, फिर धनु से सव्य मार्ग से वृश्चिक तक पहुँच कर समाप्त हो जाती है।

अपसव्य (चतुर्थ वर्ग) के नक्षत्रों की दशा का आरम्भ मीन से अपसव्य मार्ग से मेष तक, फिर धनु से सव्य मार्ग से वृश्चिक तक, फिर मीन से अपसव्य मार्ग से मेष तक जाकर दशाओं की समाप्ति हो जाती है।

सव्य नक्षत्रों की दशाओं की आवृत्ति मेष और वृश्चिक से तथा अपसव्य नक्षत्रों की दशाओं की आवृत्ति धनु और मेष राशियों से है। दशाओं का यह आरम्भ स्थान है इसलिए जब मेष से दशा चल कर मीन तक आती है तो उसके बाद वह क्रम उलट कर अपने दूसरे आरम्भ स्थान पर आ जाती हैं इस लिए ये राशियां सिंहावलोक राशियां कही जाती हैं। प्रथम वर्ग के सव्य नक्षत्र चरणों की दशा के क्रम में जब मीन से आगे लौट कर वृश्चिक पर दशा आ जाती है या धनु के बाद मेष की दशा चलने लगती है तथा जब सव्य नक्षत्र (द्वितीय वर्ग में) धनु के बाद मेष की वा मीन के बाद वृश्चिक राशि की दशा आती है तो वहां मेष और वृश्चिक राशि सिंहावलोक राशि कही जाती हैं। इसी प्रकार अपसव्य नक्षत्रों में वृश्चिक के बाद मीन राशि तथा मेष के बाद धनु की दशा सिंहावलोक दशा है।

उपरोक्त राशियों की दशा क्रम में जब सव्य नक्षत्रों की दशा वृश्चिक राशि से अपसव्य मार्ग से चल कर धनु तक पहुँचती है तो बीच में दो विक्षेप पड़ते हैं। वहां कन्या के बाद सिंह की दशा न आ कर उसके आगे की कर्क राशि में कूद पड़ती है और फिर वहां से सिंह में लौट आती है और पुनः कूद कर मिथुन को पकड़ लेती है। इसके उपरान्त यथा क्रम (अपसव्य क्रम से) धनु तक चली जाती है। इसी प्रकार अपसव्य नक्षत्रों की दशा कुम्भ में जब धनु से सव्य मार्ग से वृश्चिक तक दशा चलती है तो वहां भी दो विक्षेप पड़ते हैं। मिथुन के बाद सिंह, सिंह के बाद कर्क, कर्क के बाद कन्या की दशा आती है इन विक्षेपक राशियों की निम्न संज्ञाएं हैं।

सव्य नक्षत्र दशा क्रम में व्युत्क्रम (उलटे) चलने वाली राशियों की दशा में कन्या के बाद वाली कर्क राशि तथा सिंह के बाद मिथुन राशि मण्डूक गति संज्ञक राशियां हैं और वहां कर्क के बाद वाली सिंह राशि मर्कटी संज्ञक राशि है। इसी प्रकार अपसव्य नक्षत्रों की दशा क्रम में जहां धनु से आगे मकर कुम्भादि सव्यक्रम से दशा चल रही हो वहां मिथुन के बाद सिंह तथा कर्क के बाद वाली कन्या राशि मण्डूक गति संज्ञक राशि है तथा इसके बीच की कर्क राशि मर्कटी संज्ञक राशि हैं। सव्य नक्षत्र दशा क्रम में मीन के बाद वृश्चिक की, धनु के बाद वाली मेष राशि तथा अपसव्य नक्षत्र दशा क्रम में वृश्चिक के बाद मीन की तथा मेष के बाद धनु की दशा सिंहावलोक गति संज्ञक है।

परमायु तथा देह जीव राशियों की संक्षिप्त सारणी | **वर्ग १ तथा २ (सव्य नक्षत्रों की) देह राशि तथा दशा क्रम**

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	चरण	देह पति	नक्षत्र वर्ग १	राशि	न. वर्ग २	राशि
समस्त सव्य नक्षत्रों की महादशा (परमायु वर्ष)	१००	८५	८३	८६	१	मं.	१ मेष	सव्य	८ वृश्चिक	अप सव्य
					२	शनि	१० मकर	सव्य	१२ कुम्भ	,,
समस्त अपसव्य नक्षत्रों की महादशा (परमायु वर्ष)	८६	८३	८५	१००	३	शुक्र	२ वृष	अप सव्य	७ तुला	सव्य
					४	चं.	४ कर्क	सव्य	४ कर्क	अप सव्य

नक्षत्र वर्ग ३ तथा अपसव्य नक्षत्रों की
जीवराशियां तथा राशियों का दशाक्रम

चरण	जीवेश	नक्षत्र वर्ग ३		नक्षत्र वर्ग ४	दशा क्रम
		जीवराशि	राशि क्रम	जीवराशि	अप सव्य
१	वृहस्पति	९ धनु	सव्य	१२ मीन	अप सव्य
२	बुध	६ कन्या	सव्य	३ मिथुन	अप सव्य
३	बुध	६ कन्या	अप सव्य	३ मिथुन	अप सव्य
४	वृहस्पति	१२ मीन	सव्य	९ धनु	अप सव्य

सव्य नक्षत्रों के प्रत्येक चरण की दशा का आरंभ जिस राशि से होता है उसे देहराशि कहते हैं और अपसव्य नक्षत्रों के प्रत्येक चरण की दशा का आरंभ जीव राशि से होता है। इस लिए इन दोनों सारिणियों में सव्य नक्षत्र चरण की देह राशियां तथा अपसव्य नक्षत्र के चरणों को जीवराशियां दे दी गई है। दशा का आरंभ जिस राशि से होता है वह राशि वहाँ सव्यक्रम से चल रही है या अपसव्य क्रम से वह बात भी सारणी में दे दी गई है ताकि आरंभ राशि से अंत राशि तक की दशाओं की गणना सरलता से हो जाय।

उदाहरणः—सव्य नक्षत्र के प्रथम वर्ग के ३ चरण में देहराशि वृष है और वहाँ वह अपसव्य है इस लिए वहाँ प्रथम वर्ग के नक्षत्रों के तृतीय चरण की दशा का क्रम इस प्रकार होगाः—२, १, १२, ११, १०, ९—१, २, ३,।

सव्य नक्षत्रों में राशियों की सव्यदशा क्रम में मीन के बाद वृश्चिक तथा अपसव्य दशा में धनु के बाद मेष की दशा आती है। इसके विपरीत अपसव्य नक्षत्र में राशियों की सव्यदशा क्रम में वृश्चिक के बाद मीन तथा अपसव्य दशा-क्रम में मेष के बाद धनु की दशा आती है। ये राशियां अन्तर क्रम में सिंहावलोक राशि कही जाती हैं। बीच में जो विक्षेप पड़ते हैं उन्हें पहले बताया जा चुका है। फिर भी पुनरावृत्ति की जाती है।

सव्य नक्षत्र में राशियों का दशाक्रमः—१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० ११, १२—८, ७, ६, ४, ५, ३, २, १, १२, ११, १०, ९—१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ इत्यादि।

अपसव्य नक्षत्रों में राशियों का दशाक्रमः—९, १०, ११, १२, १, २, ३, ५, ४, ६, ७, ८—१२, ११ १० ९, ८, ७, ६, ५, ४, ३, २, १—९, १०, ११, १२ १, २, ३, ५, ४, ६, ७, इत्यादि।

उदाहरणः—तृतीय वर्ग के अपसव्य नक्षत्र के द्वितीय चरण की आरंभ राशि (जीवराशि) ६ कन्या है और वह सव्य क्रम की राशि है इसलिए वहां दशा का क्रम इस प्रकार होगाः—६ ७, ८—१२, ११, १०, ९, ८, ७,

नक्षत्रों के उपरोक्त चतुरस्र वर्गानुसार राशियों की दशा क्रम का चक्र

प्रथम वर्ग के १० सव्य नक्षत्र

नक्षत्र सं०	१	३	७	९	१३	१५	१९	२१	२५	२७
नक्षत्र	अश्विनी,	कृतिका,	पुनर्वसु	आश्लेषा,	हस्त,	स्वाती,	मूल	पूर्वाषाढ,	पूर्वाभाद्रपद,	रेवती

(सव्य नक्षत्र)

चरण	१ प्रथम चरण	२ द्वितीय चरण	३ तृतीय चरण	४ चतुर्थ चरण
राशियों की दशा	सव्य क्रम	सव्य क्रम	अपसव्य क्रम	सव्य क्रम
	१	१०	२	४
	२	११	१	५
	३	१२	१२	६
	४	अपसव्य क्रम *८*	११	७
	५	७	१०	८
	६	६	९	९
	७	[४]	सव्य क्रम *१*	१०
	८	(५)	२	११
	९	[३]	३	१२

द्वितीय वर्ग के ५ सव्य नक्षत्र

२	८	१४	२०	२६
भरणी,	पुष्य,	चित्रा,	पू. षाढ,	उ. भाद्रपद

(सव्य नक्षत्र)

१ प्रथम चरण	२ द्वितीय चरण	३ तृतीय चरण	४ चतुर्थ चरण
अपसव्य दशा क्रम	अपसव्यक्रम	सव्यदशा क्रम	अपसव्य दशा क्रम
८	११	७	[४]
७	१०	८	(५)
६	९	९	[३]
[४]	सव्यदशा क्रम *१*	१०	२
[५]	२	११	१
[३]	३	१२	१२
२	४	अपसव्यक्रम *८*	११
१	५	७	१०
१२	६	६	९

तृतीय वर्ग के ४ अपसव्य नक्षत्र

४ रोहणी, १० मघा, १६ विशाखा, २२ श्रवण (अपसव्य नक्षत्र)

राशियों की दशा

१ प्रथम चरण		२ द्वितीय चरण		३ तृतीय चरण		४ चतुर्थ चरण	
सव्य दशा क्रम	*९*	सव्य क्रम	[६]	अपसव्य दशा क्रम	६	सव्य दशा क्रम	१२
	१०		७		५		१
	११		८		४		२
	१२	अपसव्यदशा क्रम	*१२*		३		३
	१		११		२		[५]
	२		१०		१		(४)
	३		९	सव्य क्रम	*९*		[६]
	[५]		८		१०		७
	(४)		७		११		८

चतुर्थ वर्ग के ८ अपसव्य नक्षत्र

५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा ११ पू. फा., १२ उ. फा., १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा २३ धनिष्ठा, २४ शतभिष (अपसव्य नक्षत्र)

१ प्रथम चरण		२ द्वितीय चरण		३ तृतीय चरण		४ चतुर्थ चरण	
अपसव्य दशा क्रम	*१२*	अपसव्य क्रम	३	सव्यदशा क्रम	३	अपसव्यदशा क्रम	९
	११		२		[५]		८
	१०		१		(४)		७
	९	सव्यदशा क्रम	९		(६)		६
	८		१०		७		५
	७		११		८		४
	६		१२	अपसव्य क्रम	*१२*		३
	५		१		११		२
	४		२		१०		१

उपरोक्त सारणी में जो राशि * * स्टार कोष्टक में है वह सिंहावलोक गति संज्ञक है। जो [ ] कोष्ठक में है वह मण्डूक गति सञ्ज्ञक राशि है और जो ( ) ब्राकेट में है वह मर्कटी राशि है।

सव्य नक्षत्र के प्रत्येक चरण की आरंभ राशि देह संज्ञक राशि तथा अपसव्य नक्षत्र के चरणारंभ की राशि जीव संज्ञक राशि है। सव्य नक्षत्र की अन्तिम तथा अपसव्य नक्षत्र की आरंभ राशि जीव है।

और सव्य नक्षत्र के चरणारंभ की राशि तथा अपसव्य नक्षत्रों की चरणांत राशि देह संज्ञक राशि है।

प्रत्येक राशि के दशावर्ष उनके स्वामियों के अनुसार नियत हैं।

ग्रहः—	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशिः—	५	४	१, ८·	३, ६.	९, १२.	२, ७	१०,११
दशा वर्षः—	५	२१	७	९	१०	१६	४

काल चक्र दशा में राहु, केतु की दशा नहीं होती, पर राहु पापी ग्रह माना गया है। यह ग्रह (राहु) तथा सूर्य, मंगल, शनि जिस राशि में बैठते हैं उस राशि की दशा पापी हो जाती है। स्वगृही ग्रह पापी नहीं होता।

प्रत्येक नक्षत्र चरण में नव (९) राशियों की ही दशा होती है। इन नौ राशियों के दशा वर्षों का योग परमायु वर्ष कहा जाता है। परमायु वर्ष नक्षत्र चरण की समस्त नौ राशियों की दशावर्षों का योग है और उस नक्षत्र चरण की महादशा का वर्ष है। नक्षत्र चरण के दशा वर्षों का योग (परमायुवर्ष) नक्षत्र चरण के जन्म कालिक चरण भोग काल तुल्य होता है अर्थात् जन्म समय के किसी नक्षत्र चरण का भोग काल उस नक्षत्र चरण की महादशा वर्ष (परमायु वर्ष) तुल्य होता है उसमें जन्म समय नक्षत्र चरण की जितनो घटी पलादि व्यतीत हो चुके होते हैं परमायु के अनुपात से उतने ही वर्षादि जन्म के पूर्व व्यतीत हो चुके होते हैं और शेष वर्षादि उस नक्षत्र चरण की जातक दशा होती है।

परमायु वर्षों तथा मण्डूकादि राशियों की सारणी

वर्ग	सव्य प्रथम वर्ग के नक्षत्र				सव्य द्वितीय वर्ग के नक्षत्र			
नक्षत्र	१ अश्विनी, ३ कृत्तिका, ७ पुनर्वसु, ९ आश्लेषा, १३ हस्त, १५ स्वाती, १९ मूल, २१ उ. षा., २५ पू. भा., २७ रेवती।				२ भरणी, ८ पुष्य, १४ चित्रा, २० पू. षाढ, २६ उ. भाद्रपद।			
चरण	१ चरण	२ चरण	३ चरण	४ चरण	१ चरण	२ चरण	३ चरण	४ चरण
परमायु वर्ष	१००	८५	८३	८६	१००	८५	८३	८६
देहराशि	१ मेष	१० मकर	२ वृष	४ कर्क	८ वृश्चिक	११ कुम्भ	७ तुला	४ कर्क
जीवराशि	९ धनु	३ मिथुन	३ मिथुन	१२ मीन	१२ मीन	६ कन्या	६ कन्या	९ धनु
सिंहावलोक राशि	×	८ वृश्चिक	१ मेष	×	८ वृश्चिक	१ मेष	८ वृश्चिक	×
मण्डूकी राशि	×	४, ३ क. मि.	×	×	४, ३ क. मि.	×	×	४, ३ क. मि.
मर्कटी राशि	×	५ सिंह	×	×	५ सिंह	×	×	५ सिंह
नवमांश राशि	१, ९	२, १०	६	४, १२	५	६	७	८

परमायु वर्षों तथा मण्डूकादि राशियों की सारणी।

वर्ग	अपसव्य तृतीय वर्ग के नक्षत्र				अपसव्य चतुर्थ वर्ग के नक्षत्र			
नक्षत्र	४ रोहणी	१६ विशाखा,	१० मघा,	२२ श्रवण।	५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ११ पू. फा. १२ उ. फा., १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा			
चरण	१ चरण	२ चरण	३ चरण	४ चरण	१ चरण	२ चरण	३ चरण	४ चरण
परमायु वर्ष	८६	८३	८५	१००	८६	८३	८५	१००
देहराशि	४ कर्क	७ तुला	११ कुम्भ	८ वृश्चिक	४ कर्क	२ वृष	१० मकर	१ मेष
जीवराशि	९ धनु	६ कन्या	६ कन्या	१२ मीन	१२ मीन	३ मिथुन	३ मिथुन	९ धनु
सिंहावलोक राशि	९ धनु	१२ मीन	९ धनु	×	१२ मीन	९ धनु	८ मीन	×
मण्डूकी राशि	५ सिंह	६ कन्या	+	५, ६ सिं· क·	×	×	५, ६ सिं·क·	×
मर्कटी राशि	४ कर्क	×	×	४ कर्क	×	×	४ कर्क	×
नवमांश राशि	८	७	६	५	४, १२	३, ११	२, १०	१, ९

उपरोक्त सारणी को देखने से ज्ञात होगा कि प्रथम तथा द्वितीय वर्ग के नक्षत्रों की अर्थात् समस्त सव्य नक्षत्रों के प्रथम चरण की परमायु, देहाधिपति, जीवाधिपति एक समान है, इसी प्रकार द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ चरणों की परस्पर परमायु तथा देह जीवाधि पति एक ही है। अन्तर यह है कि प्रथम वर्ग के चारों चरणों के देहाधिपतियों की राशियां क्रम से उनकी प्रथम राशियां है और द्वितीय वर्ग के चरणों में उनके देहाधिपतियों जीवाधिपतियों की अपनी-अपनी राशि दूसरी राशि है।

प्रत्येक नक्षत्र चरण की एक नवमांश राशि होती है उसकी सूची नीचे दी जाती है।

नवमांश राशि तथा उनके महादशा वर्ष (परमायु वर्ष)

नक्षत्र	चरण १ नवमांश राशि वर्ष	चरण २ नवमांश राशि वर्ष	चरण ३ नवमांश राशि वर्ष	चरण ४ नवमांश राशि वर्ष	
१ अश्विनी, ७ पुनर्वसु, १३ हस्त, १९ मूल, २५ पूर्वाभाद्र।	१ मेष १००	२ वृष ८५	३ मिथुन ८३	४ कर्क ८६	राशि वर्ष
२ भरणी, ८ पुष्य, १४ चित्रा, २० पू॰ षाढ २६ उ. भाद्रपद।	५ सिंह १००	६ कन्या ८५	७ तुला ८३	८ वृश्चिक ८६	राशि राशि वर्ष
३ कृत्तिका, ९ आश्लेषा, १५ स्वाती, २२ उ. षाढ़ा., २७ रेवती।	९ धनु १००	१० मकर ८५	११ कुम्भ ८३	१२ मीन ८६	राशि राशि वर्ष
४ रोहणी, १० मघा, १६ विशाखा, २२ श्रवण।	८ वृश्चिक ८६	७ तुला ८३	६ कन्या ८५	५ सिंह १००	राशि राशि वर्ष
५ मृगशिरा, ११ पू॰ फा, १७ अनुराधा, २३ धनिष्ठा।	४ कर्क ८६	३ मिथुन ८३	२ वृष ८५	१ मेष १००	राशि राशि वर्ष
६ आर्द्रा, १२ उ॰ फा., १८ ज्येष्ठा, २४ शतभिषा।	१२ मीन ८६	११ कुम्भ ८३	१० मकर ८५	९ धनु १००	राशि राशि वर्ष

काल चक्र दशा सारणी में प्रत्येक वर्ग के नक्षत्र चरणों के आगे उसकी महादशा (परमायु) के वर्ष दे दिए गए हैं पर वहां नवमांश राशि नहीं दी गई है इस लिए यह सारणी अलग से यहां दी गई है। फलादेश में नवमांश राशि का प्रयोग साधारण है।

नवमांश राशि के महादशा वर्ष
जिसे परमायु वर्ष कहते हैं।

सारणी

नवमांश राशि	परमायु वर्ष	नवमांश राशि	परमायु वर्ष
१ मेष ५ सिंह ९ धनु	१००	३ मिथुन ७ तुला ११ कुंभ	८३
२ वृष ६ कन्या १० मकर	८५	४ कर्क ८ वृश्चिक १२ मीन	८६

उपरोक्त नवमांश राशि के महादशा वर्ष को परमायु वर्ष कहते हैं। यह परमायु वर्ष तत्तद् नक्षत्र चरण की नौ राशियों की दशा वर्षों का योग है इसी लिए इसे नक्षत्र चरण की महादशा वर्ष कह सकते है। किसी भी जातक के लिए नक्षत्र के दो चरणों की महादशा पार करना बहुत कठिन है।

काल चक्रे

सारणी प्रकरण

सारणी संख्या १, २, ३, ४ का स्पष्टी करण

सारणी संख्या ५, ६, ७ संक्षिप्त सारणियां है। सारणी संख्या ६, ७ स्मरण रखने के लिए है।

(१) सारणी संख्या १ में प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण के अन्त पर राश्यादि चन्द्रस्पष्ट तत्तुल्य कला स्पष्ट दिया गया है।

(२) सारणी संख्या २ में नक्षत्र क्रम से प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण की नवमांश राशि तथा उसकी महादशा के वर्ष जिसे परमायु वर्ष भी कहते हैं, दिएगए हैं। इसके अतिरिक्त उसमें नक्षत्र चरण की दशा के आरम्भ तथा अन्तिम राशि का भी नाम दे दिया गया है। सव्य नक्षत्रों के प्रत्येक चरण की दशा का आरम्भ जिस राशि से होता है उसे देह राशि कहते हैं और दशा के अन्त वाली राशि को जीव राशि कहते हैं। अपसव्य नक्षत्रों में इससे उल्टा, जिस राशि से दशा का आरम्भ होता है उसे जीवराशि तथा जिससे अन्त होता है उसे देह राशि कहते हैं।

(३) सारणी संख्या ३ में नक्षत्र क्रम से प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण की महादशा में जिन नौ राशियों की दशा होती है, वह दिया गया है। राशियों के नीचे उन राशियों के दशा वर्ष दे दिए गए हैं और अन्त के कोष्ठक में नौ राशियों की दशा का योग दे दिया गया है। यह योग नक्षत्र चरण की महादशा वर्ष है जिसे परमायु कहते हैं। इस सारणी में

जो राशि ❀ में अंकित है वह उस नक्षत्र चरण की सिंहावलोक राशि है, [ ] क्रांचिट घेरे में अंकित राशि मण्डूकी राशि है तथा ( ) ब्रैकेट में अंकित राशि मर्कटी राशि है। इस सारणी में प्रत्येक नक्षत्र के चौथे चरण की दशाओं की समाप्ति पर उसके आगे वाले नक्षत्र के प्रथम चरण की दशा का आरम्भ होता है। इसी प्रकार प्रत्येक नक्षत्र चरण की दशा की समाप्ति पर उसके आगे वाले चरण से दूसरे चक्र की दशा का क्रम चलता है। (सारणी में जहां चिह्न है उससे तात्पर्य है कि उस राशि से दशा कूद कर दूसरी राशि (मण्डूक राशि) में जाती है, वहां से लौट कर मर्कटी मे आती है चिह्न सिंहावलोक का है)।

(४) सारणी संख्या ४ में नक्षत्रों के चार वर्गों के क्रम से उनके प्रत्येक चरण के नौ राशियों की दशा में उनके प्रत्यन्तर की सारणी दी गई है। इस सारणी में वर्गानुसार नक्षत्रों के प्रत्येक चरण की महादशा वर्ष उसमें नवराशियां की यथा क्रम दशा और उनके दशा वर्ष तथा प्रत्येक राशि में नवराशियों के प्रत्यन्तर दशा, वर्ष, मास, दिवस, घटी, पल में दिया गया है। साथ ही दशा क्रम में जहां ❀ की दशा हो वह राशि सिंहावलोक, [ ] राशि मण्डूकी तथा ( ) मर्कटी राशि अंकित कर दी गई है और साथ ही दशा वाली राशि के स्टार के उपर देह, जीव, सिंहावलोक, मण्डूकी, मर्कटी राशि शब्द भी लिख दिया गया है। सिंहावलोक राशि की दशा में जहां अन्तर सिंहावलोक, मण्डूकी, मर्कटी राशि शब्द भी लिख दिया गया है। सिंहावलोक राशि की दशा में जहां अंतर सिंहावलोक, मण्डूकी, मर्कटी का अन्तर आता है वहां अन्तर वाली राशि में वैसा ही संकेत कर दिया गया है। इस तरह यह सारणी संख्या ४ स्वयं में पूर्ण है। इसी प्रत्येक नक्षत्र चरण की महादशा, दशा, अन्तर दशा तथा दशा व अन्तर में सिंहावलोकादि राशियों का सरलता से पता लग जाता है।

(५) सारणी संख्या ५ में समस्त नक्षत्रों का दशाचक्र उनका वर्गीकरण करके दिया गया है। यह सारणी संक्षिप्त दशा चक्र है।

(६) सारणी संख्या ६ में (सव्य अपसव्य) नक्षत्रों के चारो चरणों की दशा की आरम्भ राशि दी गई है और दशा का क्रम दिया है जिसे स्मरण रखने से कोई भी विना सारणियों के उपयोग के विस्तार कर सरलता है।

सारणी संख्या १, २, ३, ४ का उपयोग

उदाहरण:—नक्षत्र के भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट करने की रीति बताई जा चुकी है। अब चन्द्र स्पष्ट से दशाचक्र बनाने की रीति लिखी जाती है। यदि किसी जातक का जन्म चन्द्रस्पष्ट ७।२४।२० = १४०६० कला हो तो सारणी संख्या १ में १४०६० कला १४,००० कला से अधिक और १४,२०० से कम है इसलिये जातक का जन्म ज्येष्ठा के द्वितीय चरण के गत होने पर ज्येष्ठा के तृतीय चरण का है। १४०६०′ — १४०००′ = ६०′ भुक्त तथा १४,२००′ − १४०६०′ = १४०′ भोग तथा १४०′ + ६०′ = २००′ भोग है। सारणी संख्या २ में ज्येष्ठा तृतीय चरण की नवमांश राशि मकर है और उसकी महादशा (परमायु) के वर्ष ८५ है। अब त्रै राशि से २००′ में ८५ वर्ष तो भुक्त ६०′ में कितने वर्षादि प्राप्त होंगे ? $\frac{८५ \times ६०}{२००}$ = २५ वर्ष ६ मास भुक्त ८५ − २५।६ = ५९ व. ६ मा. भोग्य दशा हुई। ज्येष्ठा तृतीय चरण की दशा चक्र (सारणी सं. ३ में इस प्रकार है)

३ मिथुन वर्ष ९	[५] सिंह ५	(४) कर्क २१	[६] कन्या ९	७ तुला १६	८ वृश्चिक ७	*१२* मीन १०	११ कुम्भ ४	१० मकर ४		९ धनु १०	८ वृश्चिक ७	७ तुला १६ इत्यादि
भुक्त वर्ष ९	भुक्त ५	भुक्त ११ ६	भोग्य ९ ६	भोग्य ९ ०	भोग्य १६ ०	भोग्य ७ ०	भोग्य १० ०	भोग्य ४ ०	भोग्य ४ ०			
जन्म सम्वत् सूर्यराशि अंश												

अपसव्य ज्येष्ठा तृतीय चरण परमायु वर्ष ८५, भुक्त वर्षादि २५।६ भोग्य वर्षादि ५९।६ पूर्वजन्म की मिथुन भुक्त वर्ष ९, कर्क भुक्त वर्षादि ११।६ इह जन्मनि कर्क दशायाञ्जन्म भोग्य वर्षादि ९।६ जीव राशि मिथुन तदीशो बुधः, देहराशि मकर तदीशो शनिः, मण्डूकराशि सिंह तदीशो रवि, मण्डकराशि कन्या तदीशो बुधः, सिंहावलोकराशि मीन तदीशो बृहस्पतिः। द्वितीय (अग्रिमचक्रे) जीवराशि धनु तदीशो गुरुः, देहराशि मेष तदीशो भौम एतद् सर्वं दशायां विचारणीयम्।

सारणी संख्या ४ में ज्येष्ठा नक्षत्र चतुर्थ वर्ग का अपसव्य नक्षत्र है, परमायु वर्ष ८५ है। उसके तृतीय चरण की राशियों की दशा में अन्तर दशा के वर्षादि दिए हुए हैं। वहां कर्कराशि की पूर्वजन्म भुक्तदशा वर्ष ११।६ पर

व.मा.दि.घ.प.

कर्क में कर्क ५।२।७।७।५४

कर्क में कन्या २।२।२०।१८।१४

७।४।२७।२६।०८

कर्क में तुला ३।११।१२।३।३२

११।४।१०।२९।४० यावत् कर्क में तुला का अन्तर व्यतीत होगया।

व.मा.दि.घ.प. व.मा. दि. घ. प. व. मा.दि. घ. प.

११।६।०।०।०—११।४।१०।२९।४० = ०।१।१९।३०।२० यह कर्क में वृश्चिक का भुक्त काल हुआ। कर्क में वृश्चिक के अन्तर का मान वर्षादि १।८।२२।३५।१७ है इस लिए १।८।२२।३५।१७—०।१।१९।३०।२० = वर्षादि १।७।३।४।५७ यह कर्क में वृश्चिक के अन्तर का भोग्यकाल है। अस्तु, यहां जातक का जन्म कर्क की दशा और वृश्चिक के अन्तर में हुआ है। अन्तरदशा चक्र इस प्रकार है:—

कर्क मध्ये अन्तरम् (माण्डूकी मार्ग की दशा)

	८	*१२*	११	१०	३	५	
भुक्तवर्षादि	वृश्चिक	मीन	कुम्भ	मकर	मिथुन	सिंह	अंतरदशा का योग वर्षादि ११।६ है जो जन्मकालिक कर्कराशि की दशा का भोग्य काल है।
०	१	२	०	०	२	१	
१	७	५	११	११	२	२	
१९	३	१९	२५	२५	२०	२४	
३०	४	२४	४५	४५	२८	४२	
२०	५७	४८	५८	५३	१४	२१	
जन्मसंवत् मास दिन							

इसी प्रकार आगे कन्या राशि का अंतर चक्र फिर क्रम से तुल वृश्चिकादि का अंतर चक्र बना लेना चाहिए (सारणी सं० ४ से)

कर्कान्तरम् मीन का अन्तर मण्डूकी में सिंहावलोक का अन्तर है।

सारणी संख्या १

१ नक्षत्र संख्या	२ चरण क्रम सं.	३ नक्षत्र का नाम	४ नक्षत्र चरण	५ चन्द्रस्पष्ट रा ° '	६ चन्द्रस्पष्ट, कला '
				०° ०' से	
१	१	अश्विनी	१	३° २०' तक	२००
,,	२	,,	२	६. ४०	४००
,,	३	,,	३	१०. ००	६००
,,	४	,,	४	१३. २०	८००
२	५	भरणी	१	१६. ४०	१०००
,,	६	,,	२	२०. ००	१२००
,,	७	,,	३	२३. २०	१४००
,,	८	,,	४	२६. ४०	१६००
३	९	कृत्तिका	१	३०. ००	१८००
,,	१०	,,	२	१. ०३. २०	२०००
,,	११	,,	३	१. ०६. ४०	२२००
,,	१२	,,	४	१. १०. ००	२४००
४	१३	रोहिणी	१	१. १३. २०	२६००
,,	१४	,,	२	१. १६. ४०	२८००
,,	१५	,,	३	१. २०. ००	३०००
,,	१६	,,	४	१. २३. २०	३२००
५	१७	मृगशिरा	१	१. २६. ४०	३४००
,,	१८	,,	२	२. ००. ००	३६००
,,	१९	,,	३	२. ०३. २०	३८००
,,	२०	,,	४	२. ०६. ४०	४०००
६	२१	आर्द्रा	१	२. १०. ००	४२००
,,	२२	,,	२	२. १३. २०	४४००
,,	२३	,,	३	२. १६. ४०	४६००
,,	२४	,,	४	२. २०. ००	४८००
७	२५	पुनर्वसु	१	२. २३. २०	५०००
,,	२६	,,	२	२. २६. ४०	५२००
,,	२७	,,	३	३. ००. ००	५४००
,,	२८	,,	४	३. ०३. २०	५६००
८	२९	पुष्य	१	३. ०६. ४०	५८००
,,	३०	,,	२	३. १०. ००	६०००
,,	३१	,,	३	३. १३. २०	६२००
,,	३२	,,	४	३. १६. ४०	६४००

सारणी संख्या १

१	२	३	४	५	६
नक्षत्र संख्या	चरण क्रम स.	नक्षत्र का नाम	चरण	चन्द्रस्पष्ट रा ° '	चन्द्रस्पष्ट कला
१६	६४	विषाखा	४	७.०३.२०	१२, ८००
१७	६५	अनुराधा	१	७.०६.४०	१३, ०००
,,	६६	,,	२	७.१०.००	१३, २००
,,	६७	,,	३	७.१३.२०	१३, ४००
,,	६८	,,	४	७.१६.४०	१३, ६००
१८	६९	ज्येष्ठा	१	७-२०.००	१३, ८००
,,	७०	,,	२	७.२३.२०	१४, ०००
,,	७१	,,	३	७.२६.४०	१४, २००
,,	७२	,,	४	८.००.००	१४, ४००
१९	७३	मूल	१	८.०३.२०	१४, ६००
,,	७४	,,	२	८.०६.४०	१४, ८००
,,	७५	,,	३	८.१०.००	१५, ०००
,,	७६	,,	४	८.१३.२०	१५, २००
२०	७७	पू. षाढ़	१	८.१६.४०	१५, ४००
,,	७८	,,	२	८.२०.००	१५, ६००
,,	७९	,,	३	८.२३.२०	१५, ८००
,,	८०	,,	४	८.२६.४०	१६, ०००
२१	८१	उत्तरा षाढ़	१	९.००.००	१६, २००
,,	८२	,,	२	९.०३.२०	१६, ४००
,,	८३	,,	३	९.०६.४०	१६, ६००
,,	८४	,,	४	९.१०.००	१६, ८००
२२	८५	श्रवण	१	९.१३.२०	१७, ०००
,,	८६	,,	२	९.१६.४०	१७, २००
,,	८७	,,	३	९.२०.००	१७, ४००
,,	८८	,,	४	९.२३.२०	१७, ६००
२३	८९	धनिष्ठा	१	९.२६.४०	१७, ८००
,,	९०	,,	२	१०.००.००	१८, ०००
,,	९१	,,	३	१०.०३.२०	१८, २००
,,	९२	,,	४	१०.०६.४०	१८, ४००
२४	९३	शतभिषा	१	१०.१०.००	१८, ६००
,,	९४	,,	२	१०.१३.२०	१८, ८००
,,	९५	,,	३	१०.१६.४०	१९, ०००
,,	९६	,,	४	१०.२०.००	१९, २००

सारिणी संख्या १

१	२	३	४	५	६
नक्षत्र संख्या	चरण क्रम सं.	नक्षत्र का नाम	नक्षत्र	चन्द्रस्पष्ट रा ° '	चन्द्रस्पष्ट कला '
८	३२	पुष्य	४	३.१६.४०	६४००
९	३३	आश्लेषा	१	३.२०.००	६६००
,,	३४	,,	२	३.२३.२०	६८००
,,	३५	,,	३	३.२६.४०	७०००
,,	३६	,,	४	४.००.००	७२००
१०	३७	मघा	१	४.०३.२०	७४००
,,	३८	,,	२	४.०६.४०	७६००
,,	३९	,,	३	४.१०.००	७८००
,,	४०	,,	४	४.१३.२०	८०००
११	४१	पूर्वा फा.	१	४.१६.४०	८२००
,,	४२	,,	२	४.२०.००	८४००
,,	४३	,,	३	४.२३.२०	८६००
,,	४४	,,	४	४.२६.४०	८८००
१२	४५	उत्तरा फा.	१	५.००.००	९०००
,,	४६	,,	२	५.०३.२०	९२००
,,	४७	,,	३	५.०६.४०	९४००
,,	४८	,,	४	५.१०.००	९६००
१३	४९	हस्त	१	५.१३.२०	९८००
,,	५०	,,	२	५.१६.४०	१००००
,,	५१	,,	३	५.२०.००	१०२००
,,	५२	,,	४	५.२३.२०	१०४००
१४	५३	चित्रा	१	५.२६.४०	१०६००
,,	५४	,,	२	६.००.००	१०८००
,,	५५	,,	३	६.०३.२०	११०००
,,	५६	,,	४	६.०६.४०	११२००
१५	५७	स्वाती	१	६.१०.००	११४००
,,	५८	,,	२	६.१३.२०	११६००
,,	५९	,,	३	६.१६.४०	११८००
,,	६०	,,	४	६.२०.००	१२०००
१६	६१	विशाखा	१	६.२३.२०	१२२००
,,	६२	,,	२	६.२६.४०	१२४००
,,	६३	,,	३	७.००.००	१२६००
,,	६४	,,	४	७.०३.२०	१२८००

सारणी संख्या १

१	२	३	४	५	६
नक्षत्र संख्या	चरण क्रम सं.	नक्षत्र का नाम	चरण	चन्द्रस्पष्ट रा ° '	चन्द्रस्पष्ट '
२४	९६	शतभिषा	४	१०.२०.००	१९, २००
२५	९७	पूर्वा. भाद्र	१	१०.२३.२०	१९, ४००
,,	९८	,,	२	१०.२६.४०	१९, ६००
,,	९९	,,	३	११.००.००	१९, ८००
,,	१००	,,	४	११.०३.२०	२०, ०००
२६	१०१	उत्तरा भाद्रपदा	१	११.०६.४०	२०, २००
,,	१०२	,,	२	११.१०.००	२०, ४००
,,	१०३	,,	३	११.१३.२०	२०, ६००
,,	१०४	,,	४	११.१६.४०	२०, ८००
२७	१०५	रेवती	१	११.२०.००	२१, ०००
,,	१०६	,,	२	११.२३.२०	२१, २००
,,	१०७	,,	३	११.२६.४०	२१, ४००
,,	१०८	,,	४	१२.००.००	२१. ६००

कालचक्रे

सारणी संख्या २

नक्षत्र चरणों की अंश राशि तथा उसके परमायु वर्ष आदि की सारणी

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	नवमां. राशि	परमा. वर्ष	देहरा.	जीव राशि	नक्षत्र संज्ञा	सिंहाव-लोक राशि	मर्कटी राशि	माण्डूकी राशि
१	अश्विनी	१	मेष	१००	मेष	धनु	सव्य	×	×	×
	,,	२	वृष	८५	मकर	मिथुन	,,	वृश्चिक	सिंह	मि. कर्क
	,,	३	मिथुन	८३	वृष	मिथुन	,,	मेष	×	×
	,,	४	कर्क	८६	कर्क	मीन	,,	×	×	×
२	भरणी	१	सिंह	१००	वृश्चिक	मीन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
	,,	२	कन्या	८५	कुम्भ	कन्या	,,	मेष	×	×
	,,	३	तुला	८३	तुला	कन्या	,,	वृश्चिक	×	×
	,,	४	वृश्चिक	८६	कर्क	धनु	,,	×	सिंह	कर्क मि.
३	कृत्तिका	१	धनु	१००	मेष	धनु	,,	मेष	×	×
	,,	२	मकर	८५	मकर	मिथुन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
	,,	३	कुम्भ	८३	वृष	मिथुन	,,	मेष	×	×
	,,	४	मीन	८६	कर्क	मीन	,,	×	×	×
४	रोहिणी	१	वृश्चिक	८६	कर्क	धनु	अपस.	×	सिंह	कर्क मि.
	,,	२	तुला	८३	तुला	कन्या	,,	वृश्चिक	×	×
	,,	३	कन्या	८५	कुम्भ	कन्या	,,	मेष	×	×
	,,	४	सिंह	१००	वृश्चिक	मीन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
५	मृगशिर	१	कर्क	८६	कर्क	मीन	,,	×	×	×
	,,	२	मिथुन	८३	वृष	मिथुन	,,	मेष	×	×
	,,	३	वृष	८५	मकर	मिथुन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
	,,	४	मेष	१००	मेष	धनु	,,	मेष	×	×
६	आर्द्रा	१	मीन	८६	कर्क	मीन	,,	×	×	×
	,,	२	कुम्भ	८३	वृष	मिथुन	,,	मेष	×	×
	,,	३	मकर	८५	मकर	मिथुन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
	,,	४	धनु	१००	मेष	धनु	,,	×	×	×

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	नवमांश राशि	परमायु वर्ष	देह राशि	जीव राशि	नक्षत्र संज्ञा	सिंहावलोक राशि	मर्कटी राशि	माण्डूकी राशि
७	पुनर्वसु	१	मेष	१००	मेष	धनु	सव्य	×	×	×
	,,	२	वृष	८५	मकर	मिथुन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
	,,	३	मिथुन	८३	वृष	मिथुन	,,	मेष	×	×
	,,	४	कर्क	८६	कर्क	मीन	,,	×	×	×
८	पुष्य	१	सिंह	१००	वृश्चिक	मीन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
	,,	२	कन्या	८५	कुम्भ	कन्या	,,	मेष	×	×
	,,	३	तुला	८३	तुला	कन्या	,,	वृश्चिक	×	×
	,,	४	वृश्चिक	८६	कर्क	धनु	,,	×	सिंह	कर्क मि.
९	आश्लेषा	१	धनु	१००	मेष	धनु	,,	मेष	×	×
	,,	२	मकर	८५	मकर	मिथुन	,,	वृश्चिक	सिंह	कर्क मि.
	,,	३	कुम्भ	८३	वृष	मिथुन	,,	मेष	×	×
	,,	४	मीन	८६	कर्क	मीन	,,	×	×	×
१०	मघा	१	वृश्चिक	८६	कर्क	धनु	अ. स.			
	,,	२	तुला	८३	तुला	कन्या	,,			
	,,	३	कन्या	८५	कुम्भ	कन्या	,,			
	,,	४	सिंह	१००	वृश्चिक	मीन	,,			
११	पू. फा.	१	कर्क	८६	कर्क	मीन	,,			
	,,	२	मिथुन	८३	वृष	मिथुन	,,			
	,,	३	वृष	८५	मकर	मिथुन	,,			
	,,	४	मेष	१००	मेष	धनु	,,			
१२	उ. फा.	१	मीन	८६	कर्क	मीन	,,			
	,,	२	कुम्भ	८३	वृष	मिथुन	,,			
	,,	३	मकर	८५	मकर	मिथुन	,,			
	,,	४	धनु	१००	मेष	धनु	,,			
१३	हस्त	१	मेष	१००	मेष	धनु	सव्य			
	,,	२	वृष	८५	मकर	मिथुन	,,			

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	नवमांश राशि	परमायु वर्ष	दशा संज्ञा	देह राशि	जीव राशि
	हस्त	३	मिथुन	८३	,,	वृष	मिथुन
	,,	४	कर्क	८६	,,	कर्क	मीन
१४	चित्रा	१	सिंह	१००	,,	वृश्चिक	मीन
	,,	२	कन्या	८५	,,	कुम्भ	कन्या
	,,	३	तुला	८३	,,	तुला	कन्या
	,,	४	वृश्चिक	८६	,,	कर्क	धनु
१५	स्वाती	१	धनु	१००	,,	मेष	धनु
	,,	२	मकर	८५	,,	मकर	मिथुन
	,,	३	कुम्भ	८३	,,	वृष	मिथुन
	,,	४	मीन	८६	,,	कर्क	मीन
१६	विशाखा	१	वृश्चिक	८६	अपसव्य	कर्क	धनु
	,,	२	तुला	८३	,,	तुला	कन्या
	,,	३	कन्या	८५	,,	कुम्भ	कन्या
	,,	४	सिंह	१००	,,	वृश्चिक	मीन
१७	अनुराधा	१	कर्क	८६	,,	कर्क	मीन
	,,	२	मिथुन	८३	,,	वृष	मिथुन
	,,	३	वृष	८५	,,	मकर	मिथुन
	,,	४	मेष	१००	,,	मेष	धनु
१८	ज्येष्ठा	१	मीन	८६	,,	कर्क	मीन
	,,	२	कुम्भ	८३	,,	वृष	मिथुन
	,,	३	मकर	८५	,,	मकर	मिथुन
	,,	४	धनु	१००	,,	मेष	धनु

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	सव्य अपसव्य	नवमांश राशि	परमायु वर्ष	देहराशि	जिवराशी
१९	मूल	१	सव्य	मेष	१००	मेष	धनु
	,,	२	,	वृष	८५	मकर	मिथुन
	,,	३	,,	मिथुन	८३	वृष	मिथुन
	,,	४	,,	कर्क	८६	कर्क	मीन
२०	पू. षाढ	१	,,	सिंह	१००	वृश्चिक	मीन
	,,	२	,,	कन्या	८५	कुम्भ	कन्या
	,,	३	,,	तुला	८३	तुला	कन्या
	,,	४	,,	वृश्चिक	८६	कर्क	धनु
२१	उ. षाढ	१	,,	धनु	१००	मेष	धनु
	,	२	,,	मकर	८५	मकर	मिथुन
	,,	३	,,	कुम्भ	८३	वृष	मिथुन
	,,	४	,,	मीन	८६	कर्क	मीन
२२	श्रवण	१	अपसव्य	वृश्चिक	८६	कर्क	धनु
	,,	२	,,	तुला	८३	तुला	कन्या
	,,	३	,,	कन्या	८५	कुम्भ	कन्या
	,,	४	,,	सिंह	१००	वृश्चिक	मीन
२३	धनिष्ठा	१	,,	कर्क	८६	कर्क	मीन
	,,	२	,,	मिथुन	८३	वृष	मिथुन
	,	३	,,	वृष	८५	मकर	मिथुन
	,,	४	,,	मेष	१००	मेष	धनु
२४	शतभिषा	१	,	मीन	८६	कर्क	मीन
	,,	२	,,	कुम्भ	८३	वृष	मिथुन
	,,	३	,,	मकर	८५	मकर	मिथुन
	,,	४	,,	धनु	१००	मेष	धनु
२५	पू.भाद्रप.	१	सव्य	मेष	१००	मेष	धनु
	,,	२	,	वृष	८५	मकर	मिथुन

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	सव्य अपसव्य	नवमांश राशि	परमायु वर्ष	देहराशि	जिव राशी
	पू. भा. प.	३	सव्य	मिथुन	८३	वृष	मिथुन
	"	४	"	कर्क	८६	कर्क	मीन
२६	उ. भाद्रप.	१	"	सिंह	१००	वृश्चिक	मीन
	"	२	"	कन्या	८५	कुम्भ	कन्या
	"	३	"	तुला	८३	तुला	कन्या
	"	४	"	वृश्चिक	८६	कर्क	धनु
२७	रेवती	१	"	धनु	१००	मेष	धनु
	"	२	"	मकर	८५	मकर	मिथुन
	"	३	"	कुम्भ	८३	वृष	मिथुन
	"	४	"	मीन	८६	कर्क	मीन

—:※:—

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी

संख्या	नक्षत्र	चरण										नवमांश राशि तथा महादशावर्षों का योग
१	आश्वि.	१	मेष वर्ष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	वर्ष मेष १००
	,,	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	*कर्क* २१	(सिंह) ५	*मिथुन* ९	वृष ८५
	,,	३	वृष १६	मेष ७	मीन ०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	मिथुन ८३
	,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	कर्क ८६
२	भरणी	१	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	*कर्क* २१	(सिंह) ५	*मिथुन* ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	सिंह १००
	,,	२	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	कन्या ८५
	,,	३	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या १०	तुला ८३
	,,	४	*कर्क* २१	(सिंह) ५	*मिथुन* ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ८६

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा उनके दशावर्ष की सारणी

	नक्षत्र	चरण										नवमांश राशि तथा महादशा वर्षांकायांग
३	कृत्ति.	१	[मेष] वर्ष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	धनु १००
	,,	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	*कर्क* २१	(सिंह) ५	*मिथुन* ९	मकर ८५
	,,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कुम्भ ८३
	,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मीन ८६
अप स य ४	रोहिणी	१	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	*सिंह* ५	(कर्क) २१	वृश्चिक ८६
	,,	२	(कन्या) ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	तुला ८३
	,,	३	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	कन्या ८५
	,,	४	मीन १०	मेष ६	वृष १६	मिथुन ९	*सिंह* ५	(कर्क) २१	*कन्या* ९	तुला १६	वृश्चिक ७	सिंह १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नवराशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी

	नक्षत्र	चरण										नवमांश राशि तथा महादशा वर्षों का योग
५	मृग.	१	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	कर्क ८६
	,,	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ८३
	,,	३	मिथुन ९	*सिंह* ५	(कर्क) २१	*कन्या* ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	वृष ८५
	,,	४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मेष १००
६	आर्द्रा	१	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मीन ८६
	,	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	कुम्भ ८३
	,,	३	मिथुन ९	*सिंह* ५	(कर्क) २१	*कन्या* ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	मकर ८५
	,,	४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नवराशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी

	नक्षत्र	चरण										नवमांश राशि तथा महादशावर्षों का भोग
सव्य ७	पुनर्वसु	१	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मेष १००
	,,	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	*कर्क २१	(सिंह) ५	*मिथुन ९	वृष ८५
	,,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मक ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	मिथुन ८३
	,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	कर्क ८६
८	पुष्य	१	[वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	* कर्क २१	(सिंह) ५	*मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	सिंह १००
	,,	२	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	कन्या ८५
	,,	३	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	तुला ८३
	,,	४	* कर्क २१	(सिंह) ५	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ८६

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी ।

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	नवमांश राशि तथा महादशा वर्षांक योग
अप सव्य ९	आश्ले.	१	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धसु १०	धनु १००
	,,	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	❀कर्क २१	(सिंह) ५	❀मिथुन ९	मकर ८५
	,,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कुम्भ ८३
	,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मीन ८६
१०	मघा	१	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	❀सिंह ५	(कर्क) २१	वृश्चिक ८६
	,,	२	❀कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	तुला ८३
	,,	३	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	कन्या ८५
	,,	४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	❀सिंह ५	(कर्क) २१	❀कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	सिंह १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी ।

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	नवमांश राशि तथा महादशावर्षोंकायोग
११	पू.फा.	१	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	कर्क ८६
	,,	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ८३
	,,	३	मिथुन ९	✽सिंह ५	(कर्क) २१	✽कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	वृष ८५
	,,	४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मेष १००
१२	उ.फा.	१	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मीन ८६
	,,	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	कुम्भ ८३
	,,	३	मिथुन ९	✽सिंह ५	(कर्क) २१	✽कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	मकर ८५
	,,	४	धनु	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशा वर्ष की सारणी ।

नक्षत्र संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	नवमांश राशि तथा महादशावर्षोंकायोग
सव्य १३	हस्त	१	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मेष १००
	,,	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	*कर्क २१	(सिंह) ५	*मिथुन ९	वृष ८५
	,,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	मिथुन ९
	,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	कर्क ८६
१४	चित्रा	१	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	*कर्क २१	(सिंह) ५	*मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	सिंह १००
	,,	२	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	कन्या ८५
	,,	३	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	तुला ८३
	,,	४	*कर्क २१	(सिंह) ५	*मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ८६

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी । **सारणी संख्या ३**

नक्षत्र	संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	न.राशि पर द.व.का योग
सव्य	१५	स्वाती	१	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	धनु १००
,,		,,	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या १०	* कर्क * २१	(सिंह) ५	*मिथुन* ९	मकर ८५
,,		,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मीन १०	कुम्भ ८३
,,		,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	(कर्क) २१	मीन ८६
अपस. अप	१६	विशाखा	१	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	* सिंह * ५	तुला १६	वृश्चिक ८६
,,		,	२	* कन्या * ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] ०१	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	कुम्भ ४	तुला ८३
,,		,,	३	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	वृश्चिक ७	कन्या ८५
,,		,,	४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	*सिंह* ५	(कर्क) २१	*कन्या* ९	तुला १६	कर्क २१	सिंह १००
,,	१७	अनुराधा	१	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	वृष १६	कर्क ८६

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरण में तव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी ।

नक्षत्र	संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	न.राशपर. द.व.कयो
,,		अनुराधा	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ८३
,,		,,	३	मिथुन ९	*सिंह ५	(कर्क) २१	* कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	वृष ८५
,		,,	४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मेष १००
,,	१८	ज्येष्ठा	१	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मीन ८६
,,		,,	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	कुम्भ ८३
,,		,,	३	मिथुन ९	*सिंह ५	(कर्क) २१	* कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	मकर ८५
,,		,,	४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १००
सव्य	१९	मूल	१	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मेष १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशवर्ष की सारणी ।

नक्षत्र	संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	न.राशि पर. द.व.का योग
,,		मूल	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	* कर्क २१	(सिंह) ५	मिथुन ९	वृष ८५
,,		,,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	मिथुन ८३
,,		,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	कर्क ८६
,,	२०	पू. षाढ़	१	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	* कर्क २१	(सिंह) ५	* मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	सिंह १००
,,		,,	२	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	कन्या ८५
,,		,,	३	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	तुला ८३
,,		,,	४	* कर्क २१	(सिंह) ५	[मिथुन] ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ८६
,,	२१	उ. षाढ़	१	[मेष] ७	वृष १३	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	धनु १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी।

नक्षत्र	संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	न.राशि पर. द.व.का योग
,,		उ. षढ़	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	* कर्क २१	(सिंह) ५	* मिथुन ९	मकर ८५
,,		,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कुम्भ ८३
,,		,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मीन ८६
अप सव्य	२२	श्रवण	१	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	* सिंह ५	(कर्क) २१	वृश्चिक ८६
,,		,,	२	* कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	तुला ८३
,,		,,	३	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	कन्या ८५
,,		,,	४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	* सिंह ५	(कर्क) २१	* कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	सिंह १००
,,	२३	धनिष्ठा	१	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	कर्क ८६

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी ।

नक्षत्र	संख्य	नक्षत्र	चरण	राशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	न.राशि पर. द.व.का योग
,,		धनिष्ठा	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ८३
,,		,,	३	मिथुन ९	* सिंह ५	(कर्क) २१	❀ कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	वृष ८५
,,		,,	४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मेष १००
अप सव्य	२४	शतभिषा	१	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मीन ८६
,,		,,	२	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	[धनु] १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	कुम्भ ८३
,,		,,	३	मिथुन ९	❀सिंह ५	(कर्क) २१	* कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	[मीन] १०	कुम्भ ४	मकर ४	मकर ८५
,,		,,	४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १००
सव्य	२५	पू. भाद्र पदा	१	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मेष १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी ।

नक्षत्र	संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	न.राशि पर. द.व. का योग
,,		पू. भा. प.	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	* कर्क २१	(सिंह) ५	* मिथुन ९	वृष ८५
,,		,,	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	मिथुन ८३
,,		,,	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	कर्क ८६
,,	२६	उ. भाद्र पदा	१	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	* कर्क २१	(सिंह) ५	* मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	सिंह १००
,,		,,	२	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	कन्या ८५
,,		,,	३	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	तुला ८३
,,		,,	४	* कर्क २१	(सिंह) ५	* मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ८६
सव्य	२७	रेवती	१	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	धनु १००

सारणी संख्या ३

नक्षत्र चरणों में नव राशियों की दशा तथा उनके दशावर्ष की सारणी ।

नक्षत्र	संख्या	नक्षत्र	चरण	राशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	न.राशि पर. द.व.का योग
"		रेवती	२	मकर ४	कुम्भ ४	मीन १०	[वृश्चिक] ७	तुला १६	कन्या ९	* कर्क २१	(सिंह) ५	* मिथुन ९	मकर ८५
"		"	३	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुम्भ ४	मकर ४	धनु १०	[मेष] ७	वृष १६	मिथुन ९	कुम्भ ८३
"		"	४	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ७	कुम्भ ४	मीन १०	मीन ८३

कालचक्रे अन्तर दशा सारणी [संख्या ४]

निम्न लिखित नक्षत्रों की काल चक्रान्तरगत राशियों की दशा में प्रत्यन्तर दशाचक्र

नक्षत्र संख्या— १ ३ ७ ९ १३ १५ १९ २१ २५ २७

सव्य नक्षत्र का नाम—अ., कृ., पुन., आश्ले., हस्त, स्वाती, मूल, उ.षा., पू.भा., रेव.

प्रथम चरण (परमायु वर्ष १००)

१ मेषान्तरम् (दशा वर्ष ७) (देहान्तरम्) (सिंहावलोक)

राशि संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.
व	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मा	५	१	७	५	४	७	१	५	८
दि	२६	१३	१६	१९	६	१६	१३	२६	१२
घ	२४	१२	४८	१२	०	४८	१२	२४	०

२. वृषान्तरम् (दशा वर्ष १६)

राशि संख्या	२	३	४	५	६	७	८	९	१
राशि	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मे.
व	२	१	३	[illegible]	१	२	१	१	१
मा	६	५	४	९	५	६	१	७	१
दि	२१	८	९	१८	८	२१	१३	६	१३
घ	३६	२४	३६	८०	२४	३६	१२	०	१२

३. मिथुनान्तरम् (दशा वर्ष ९)

राशिसंख्या	३	४	५	६	७	८	९	१	२
राशि	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मे.	वृ.
व	०	१	०	०	१	०	०	०	१
मा	९	१०	५	९	५	७	१०	७	५
दि	२१	२०	१२	२१	८	१६	२४	१६	८
घ	३६	२४	००	३६	२४	४८	००	४८	२४

४. कर्कान्तरम् (दशा वर्ष २१)

राशिसंख्या	४	५	६	७	८	९	१	२	३
राशि	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मे.	वृ.	मि.
व	४	१	१	३	१	२	१	३	१
मा	४	०	१०	४	५	१	५	४	१०
दि	२७	१८	२०	९	१९	६	१९	९	२०
घ	३६	००	२४	३६	१२	०	१२	३६	२४

५. सिंहान्तरम् (दशा वर्ष ५)

राशिसंख्या	५	६	७	८	९	१	२	३	३
राशि	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	मे.	वृ.	मि.	क.
व	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मा	३	५	९	४	६	४	९	५	०
दि	०	१२	१८	६	०	६	१८	१२	१८
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०

६. कन्यान्तरम् (दशा वर्ष ५)

राशिसंख्या	६	७	८	९	१	२	३	४	५
राशि	कं.	तु.	वृ.	ध.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.
व	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मा	९	५	७	१०	७	५	९	१०	५
दि	२१	८	१६	२४	१६	८	२१	२०	१२
घ	३६	२४	४८	००	४८	२४	३६	२४	००

	७ तुलान्तरम् (दशावर्ष १६)									८ वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशिसंख्या	७	८	९	१	२	३	४	५	६	८	९	१	२	३	४	५	६	७
राशि	तु·	वृ·	ध·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	वृ·	ध·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·
व.	२	१	१	१	२	१	३	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	१
मा·	६	१	७	१	६	५	४	९	५	५	८	५	१	७	५	४	७	१
दि.	२१	१३	६	१३	२१	८	९	१८	८	२६	१२	२६	१३	१६	१९	६	१६	१३
घ.	३६	१०	०	१२	३६	२४	३६	००	२४	२४	००	२४	१२	४८	१२	०	४८	१२

९ धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०) (जीवान्तरम्)

राशि संख्या	९	१	२	३	४	५	६	७	८
राशि	ध·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·
व.	१	०	१	०	२	०	०	१	०
मा.	०	८	७	१०	१	६	१०	७	८
दि.	०	१२	६	२४	६	०	२४	६	१२
घ.	०	००	०	००	०	०	००	०	००

सारणी संख्या ४

नक्षत्र संख्या:— १ ३ ७ ९ १३ १५ १९ २१
नक्षत्र संख्या—अश्विनी कृत्तिका, पुनर्वसु, आश्लेषा, हस्त, स्वाती, मूल, उत्तराषाढ़,
२५ पूर्वाभाद्र, २७ रेवती

द्वितीय चरण

परमायु वर्ष ८५

	१० मकरान्तरम् (दशा वर्ष ४) (देहान्तरम्)									११ कुम्भान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि संख्या	१०	११	१२	८	७	६	४	५	३	११	१२	८	७	६	४	५	३	१०
राशि	म	कुं.	मी.	वृ.	तु.	क.	क.	सिं.	मि.	कुं.	मी	वृ.	तु.	क.	क.	सिं.	मि.	म.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	२	२	५	३	९	५	११	२	५	२	५	३	९	५	११	२	५	२
दिन	५	५	१९	२८	१	२	२५	२४	२	५	१९	२८	१	२	२५	२४	२	५
घटी	४३	४३	१४	३५	३	२८	४५	४२	२८	४३	१४	३५	३	२८	४५	४२	२८	४३
पल	५३	५३	४२	१८	३२	१४	५३	२१	१४	५३	४२	१८	३२	१४	५३	२१	१४	५३

	१२ मीनान्तरम् (दशावर्ष १०)									[८] वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७) (सिंहावलोक)								
राशि संख्या	१२	८	७	६	४	५	३	१०	११	८	७	६	*४	(५)	*३	१०	११	१२
राशि	मी·	वृ·	तु·	क·	क·	सिं·	मि·	म·	कुं·	वृ·	तु·	क·	क·	सिं·	मि·	म·	कुं·	मी·
वर्ष	१	०	१	१	२	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	०	०	०
मास	२	९	१०	०	५	७	०	५	५	६	३	८	८	४	६	३	३	९
दिन	३	२६	१७	२१	१९	१	२१	१९	१९	२७	२४	२६	२२	२८	२६	२८	२८	२६
घटी	३१	२८	३८	१०	२४	४५	१०	२४	२४	३१	३१	४९	३५	१४	४९	३५	३५	२८
पल	४१	१४	४९	३५	४२	५३	३५	४३	४३	४६	१०	२५	१७	७	२५	१८	१८	१४

	७ तुलान्तरम् (दशावर्ष १६)									६ कन्यान्तरम् (दशावर्ष ९)								
राशि संख्या	७	६	४	५	३	१०	११	१२	८	६	४	५	३	१०	११	१२	८	७
राशि	तु·	क·	क·	सिं·	मि·	म·	कुं·	मी·	वृ·	क·	क·	सिं·	मि·	म·	कुं·	मी·	वृ·	तु·
वर्ष	३	१	३	०	१	०	०	१	१	०	२	०	०	०	०	१	०	१
मास	०	८	११	११	८	९	९	१०	३	११	२	६	११	५	५	०	८	८
दिन	४	९	१३	८	९	१	१	१७	२४	१३	२०	१०	१३	२	२	२१	२६	९
घटी	१४	५२	३	४९	५२	३	३	३८	२१	३	२८	३५	३	२८	२८	१०	४९	५२
पल	७	५६	३२	२५	५६	३२	३२	४९	११	३२	१४	१८	३२	१४	१४	३५	२५	५६

	४ कर्कान्तरम् (दशावर्ष २१) (माण्डूकी) दशा									(५) सिंहान्तरम् (दशावर्ष ५) (:कँटी)								
राशि	*४	(५	*३	१०	११	१२	[८	७	६	(५	*३	१०	११	१२	[८	७	६	*४
राशि	क·	सिं·	मि·	म·	कुं·	मी·	वृ·	तु·	क·	मि·	मि·	म·	कुं·	मी·	वृ·	तु·	क·	क·
वर्ष	५	१	२	०	०	२	१	३	२	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	२	२	२	११	११	५	८	११	२	३	६	२	२	७	४	११	६	२
दिन	७	२४	२०	२५	२५	१९	२२	१३	२०	१५	१०	२४	२४	१	२८	८	१०	२४
घटी	४५	४२	२८	४५	४५	२४	३५	३	२८	५२	३५	४२	४२	४५	१४	४९	३५	४२
पल	५३	२१	१४	५३	५३	४३	१७	३२	१४	५६	१८	२१	२१	५३	७	२५	१८	२१

	३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९) (जीवान्तर) (माण्डूकी) दशा								
राशि	*३	१०	११	१२	[८	७	६	*४	(५
राशि	मि·	म·	कुं·	मी·	वृ·	तु·	क·	क·	सिं·
वर्ष	०	०	०	१	०	१	०	२	०
दिन	११	५	५	०	८	८	११	२	६
मास	१३	२	२	२१	२६	९	१३	२०	१०
घटी	३	२८	२८	१०	४९	५२	३	२८	३५
पल	३२	१४	१४	३५	२५	५६	३२	१४	१८

नक्षत्र संख्याः—१ ३ ७ ९ १३ १५ १९ २१ २५

नक्षत्र सव्य—अश्वि, कृत्ति. पुनर्वसु, आश्ले, हस्त, स्वाती, मूल, उ. षा., पू. भा., २७ रेवती

तृतीय चरण

(परमायु वर्ष ८३)

	(देहान्तरम्) २ वृषान्तरम् (दशावर्षं १६)									१ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	२	१	१२	११	१०	९	१	२	३	१	१२	११	१०	९	१	२	३	२
राशि	वृ·	मे·	मी·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·	मे·	मी·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·	वृ·
वर्ष	३	१	१	०	०	१	१	३	१	०	०	०	०	०	०	१	०	१
मास	१	४	११	९	९	११	४	१	८	७	१०	४	४	१०	७	४	९	४
दिन	०	५	३	७	७	३	५	०	२४	२	३	१	१	३	२	५	३	५
घटी	२१	५७	५८	३५	३५	५८	४७	२१	३४	३१	३६	२६	२६	२६	२१	४७	१५	४७
पल	४१	००	३३	२५	२५	३३	००	४१	४२	४८	५२	४५	४५	५२	४८	००	१०	००
	१२ मीनान्तरम् (दशावर्ष १०)									११ कुम्भान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	१२	११	१०	९	१	२	३	२	१	११	१०	९	१	२	३	२	१	१२
राशि	मी·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	मी·
वर्ष	१	०	०	१	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	२	२	५	४	९	५	९	४	५
दिन	१३	२३	२३	१३	०३	३	०	३	३	९	९	२३	१	७	६	७	१	२३
घटी	४४	२९	२९	४४	३६	५८	२१	५८	३४	२३	२३	२९	२६	३५	८	३५	२६	२९
पल	६	३८	३८	६	१२	३३	४२	३३	५२	५२	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८
	१० मकरान्तरम् (दशावषं ४)									९ धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०)								
राशि	१०	९	१	२	३	२	१	१२	११	९	१	२	३	२	१	१२	११	१०
राशि	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	मी·	कुं·	ध·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	मी·	कुं·	म·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	१	१	०	१	०	०
मास	२	५	४	९	५	९	४	५	२	२	१०	११	१	११	११	२	५	५
दिन	९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३
घटी	२३	२९	२६	३५	८	३५	२६	२९	२३	४४	३६	५८	२१	५८	३६	४४	२९	२९
पल	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८	५२	६	५२	३३	४२	३३	५२	६	३८	३८

	(सिंहावलोक) १ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)									२ वृषान्तरम् (दशावर्ष १४)								
राशि	१	२	३	२	१	१२	११	१०	९	२	३	२	१	१२	११	१०	९	१
राशि	मे.	वृ.	मि.	वृ.	मे.	मी.	कुं.	मं.	ध.	वृ.	मि.	वृ.	मे.	मी.	कुं.	म.	ध.	मे.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	०	०	०	३	१	३	१	१	०	०	१	१
मास	७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	१	८	१	४	११	९	९	११	४
दिन	२	५	३	५	२	३	१	१	३	०	२४	०	५	३	७	७	३	५
घटी	३१	४७	१५	४७	३१	३६	२६	२६	३६	२१	३४	२१	४७	५८	३५	३५	५८	४७
पल	४८	००	१०	००	४८	५२	४५	४५	५२	४१	४२	४१	००	३३	२५	२५	३३	००

	(जीवान्तरम) ३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९)								
राशि	३	२	१	१२	११	१०	९	१	२
राशि	मि.	वृ.	मे.	मी.	कुं.	म.	ध.	मे.	वृ.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	१
मास	११	८	९	१	५	५	१	९	८
दिन	२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४
घटी	९९	३४	१५	२१	८	८	२१	१५	३४
पल	३२	४२	१०	४२	४०	४०	४२	१०	४२

नक्षत्र संख्याः—१ ३ ७ ९ १३ १५ १९ २१ २५ २७
सव्य नक्षत्रः—अश्विनी, कृत्तिका पुनर्वसु, आश्लेषा हस्त, स्वाती मूल, उ.षा. पू.भा., रेवती

चतुर्थ चरण

पूर्णायु ८६ वर्ष

	(देहान्तरम्) ४ कर्कान्तरम् दशावर्ष २१)									५ सिंहान्तरम (दशावर्ष ५)								
राशि	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	५	६	७	८	९	१०	११	१२	४
राशि	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	क.
वर्ष	५	१	२	३	१	२	०	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	१	२	२	१०	८	५	११	११	८	३	६	११	४	६	२	२	६	२
दिन	१६	१९	११	२६	१५	९	२१	२१	९	१४	८	४	२६	२९	२३	२३	८	१९
घटी	२	३२	९	३०	२०	४	३७	३७	४	३९	२२	५३	३०	१८	४३	४३	२२	३२
पल	४७	५	४६	४२	५६	११	४१	४१	११	४	२०	१	४२	९	१५	१५	२०	५

	६ कन्यान्तरम् (दशावर्ष ९)								
राशि	६	७	८	९	१०	११	१२	४	५
राशि	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	क·	सिं·
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	२	०
मास	११	८	८	०	५	५	०	२	६
दिन	९	२	२३	१६	०	०	२६	११	८
घटी	४	४७	४३	४४	३१	४१	४४	९	२२
पल	११	२६	१५	४०	५१	५:	४०	४६	२०

	७ तुलान्तरम् (दशावर्ष १६)								
राशि	७	८	९	१०	११	१२	४	५	६
राशि	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	क·	सिं·	क·
वर्ष	२	१	१	०	०	१	३	०	१
मास	११	३	१०	८	८	१०	१०	११	८
दिन	२१	१८	९	२७	२७	९	२६	४	२
घटी	७	५०	४६	५४	५४	४६	३०	५३	४७
पल	४१	१४	२	२६	२६	२	४२	१	२६

	८ वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	८	९	१०	११	१२	४	५	६	७
राशि	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	क·	सिं·	क·	तु·
वर्ष	०	०	०	०	०	१	०	०	१
मास	६	९	३	३	९	८	४	८	३
दिन	२५	२३	२७	२७	२३	१५	२६	२३	१८
घटी	६	१	१२	१२	१	२०	३०	४२	५०
पल	५९	२४	३३	३३	२४	५६	४२	१५	१४

	९ धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०)								
राशि	९	१०	११	१२	४	५	६	७	८
राशि	ध·	म·	कुं·	मी·	४	सिं·	क·	तु·	वृ·
वर्ष	१	०	०	१	२	०	१	१	०
मास	१	५	५	१	५	६	०	१०	९
दिन	२६	१७	१७	२६	९	२५	१६	९	२३
घटी	३६	२६	२६	३६	४	१८	४४	४६	१
पल	१६	३०	३०	१६	१३	९	४०	२	२४

	१० मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	१०	११	१२	४	५	६	७	८	९
राशि	म·	कुं·	मी·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	२	२	५	११	२	५	८	३	५
दिन	६	६	१७	२१	५३	०	१७	२७	१७
घण्टा	५८	५८	२६	३७	४३	४१	५४	२	२६
पल	३७	३७	३०	४१	१५	५१	२६	२३	३०

	११ कुमान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	११	१२	४	५	६	७	८	९	१०
राशि	कुं·	मी·		सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	म·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	२	५	११	२	५	८	३	५	२
दिन	६	१७	२१	५३	०	२७	२७	१७	६
घण्टा	५८	२६	३७	४३	४१	५४	१२	२६	५८
पल	३७	३०	४१	१५	५१	२६	२३	३०	३७

	१२ मीनान्तरम् (दशावर्ष १०) (जीवान्तरम्)								
राशि	१२	४	५	६	७	८	९	१०	११
राशि	मी·	क·	सिं·	क·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·
वर्ष	१	२	०	१	१	०	१	०	०
मास	१	५	६	०	१०	९	१	५	५
दिन	२६	९	२९	१६	९	२३	२६	१७	१७
घण्टा	३६	४	१८	४४	४६	१	३६	२६	२६
पल	१६	१३	९	४०	२	२४	१६	३०	३०

कालचक्रे अन्तरदशा सारणी संख्या ४

नक्षत्र संख्याः— २ ८ १४ २० २६

सव्य नक्षत्रः—भरणी, पुष्य, चित्रा, पूर्वाषाढ, उत्तरभाद्रपद

प्रथम चरण

(परमायु वर्ष १००)

	[८] वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७) (देहान्तरम्) (सिंहावलोक)									७ (तुलांतर दशावर्ष १६)								
राशि	[८	७	६	*४	(५	*३	२	१	१२	७	६	४	५	३	२	१	१२	८
राशि	वृ·	तु·	कं·	क·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	तु·	क·	क·	सिं·	मे·	वृ·	मे·	मी·	वृ·
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०	२	१	३	०	१	२	१	१	१
माह	५	१	७	५	४	७	१	५	८	६	५	४	९	५	६	१	७	१
दिन	२६	१३	१६	१९	६	१६	१३	२६	१०	२१	८	९	१८	८	२७	१३	६	१३
घटी	२४	१२	४८	१२	०	४८	१२	२४	००	३६	२४	३६	००	२४	३६	१२	००	१२
पल	००	००	००	००	०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	६ कन्यान्तरम् (दशावर्ष९)									*४ कर्कान्तरम् (दशावर्ष२१) (माण्डूकी)								
राशि	६	४	५	३	२	१	१२	८	७	*४	(५	*३	२	१	१२	[८	७	६
राशि	कं·	कं·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	वृ·	तु·	कं·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	वृ·	तु·	वृ·
वर्ष	०	१	०	०	१	०	०	०	१	४	१	१	३	१	२	१	३	१
माह	९	१०	५	९	५	७	१०	७	५	४	०	१०	४	५	१	५	४	१०
दिन	२१	१०	१०	२१	८	१६	२४	१६	८	२७	१८	२०	९	१९	६	१९	९	२०
घटी	३६	२४	००	३६	२४	४८	००	४८	२४	३६	००	२४	३६	१२	०	१२	३६	२४
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	(५)सिंहान्तरम् (दशावर्ष५) (मर्कटी)									३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९) (माण्डूकी								
राशि	(५	*३	२	१	१२	[८	७	६	*४	*३	२	१	१२	[८	७	६	*४	(५
राशि	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	वृ·	तु·	क·	कं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	वृ·	तु·	कं·	कं·	सिं·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	०	०	१	०	१	०
माह	३	५	९	४	६	४	९	५	०	९	५	७	१०	७	५	९	१०	५
दिन	०	१२	१८	६	०	६	१८	१२	१८	२१	८	१६	२४	१६	८	२१	२०	१२
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३६	२४	४८	००	४८	२४	३६	२४	००
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	००	००	००	००	००	००	०२	००

	२वृषांतरम् (दशावर्ष १६)									१ मेषान्तरम् (दशावर्ष७)								
राशि	२	१	१२	८	७	६	४	५	३	१	१२	८	७	६	४	५	३	२
राशि	वृ·	मे·	मी·	वृ·	तु·	कं·	कं·	सिं·	मि·	मे·	मी·	वृ·	तु·	कं·	कं·	सिं·	मि·	वृ·
वर्ष	३	१	१	१	१	१	३	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	१
माह	६	१	७	१	६	५	४	९	५	५	८	५	१	७	५	४	७	१
दिन	२१	१३	६	१२	२१	८	९	१८	८	२६	१२	२६	१३	१६	१९	६	१६	१३
घटी	३६	१२	०	१२	३६	२४	३६	००	२४	२४	००	२४	१२	४८	१२	०	४८	१२
पल	००	००	०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१

	१२ मीनान्तरम् (दशावर्ष१०) (जीवान्तरम्)								
राशि	१२	८	७	६	४	५	३	२	१
राशि	मी·	वृ·	तु·	क·	क·	सिं·	मि·	वृ·	मे·
वर्ष	१	०	१	०	२	०	०	१	०
माह	०	८	७	१०	१	६	१०	७	८
दिन	०	१२	६	२४	६	०	२४	६	१२
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

नक्षत्र संख्या— २ ८ १४ २० २६

सव्य नक्षत्र—भरणी, पुष्य, चित्रा, पू. षा., उ. भाद्र

द्वितीय चरण

परमायु वर्ष ८५

	(देहान्तरम्) ११कुभान्तरम् (दशावर्ष४)									१०मकरान्तरम् (दशावर्ष४)								
राशि	११	१०	९	१	२	३	४	५	६	१०	२	१	५	३	४	५	६	११
राशि	कुं·	मं·	धं·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	मं·	धं·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	कं·	कुं·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	२	२	५	३	९	५	११	२	५	२	५	३	९	५	११	२	५	२
दिन	५	५	१९	२८	१	३	२५	२४	२	५	१९	२८	१	२	२५	२४	२	५
घटी	४३	१३	१४	३५	३	२८	४५	४२	२८	४३	१४	३५	३	२८	४५	४२	२८	४३
पल	५३	५२	४२	१८	२२	१४	५३	२१	१४	५३	४२	१८	२२	१४	५३	२१	१४	५३

९ धन्वान्तरम् (दशावर्ष१०)

राशि	९	१	२	३	४	५	६	११	१०
राशि	धं·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	कुं·	म·
वर्ष	१	०	१	१	२	०	१	०	०
माह	२	९	१०	०	५	७	०	५	५
दिन	३	२६	१७	२१	१९	१	२१	१९	१९
घटी	३१	२८	३८	१०	२४	४५	१०	२४	२४
पल	४६	१४	४९	३५	४२	५३	३५	४३	४३

(सिंहावलोक) [१]मेषान्तरम् (दशावर्ष७)

राशि	[१	२	३	४	५	६	११	१०	९
राशि	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	कुं·	म·	ध·
वर्ष	०	१	०	१	०	२	०	०	०
माह	६	३	८	८	४	८	३	३	९
दिन	२७	२४	२६	२२	२८	२६	२८	२८	२६
घटी	३१	३१	४९	३५	१४	४९	३५	३५	२८
पल	४६	१०	२५	१७	७	२५	१८	१८	१४

२वृषान्तरम् (दशावर्ष१६)

राशि	२	३	४	५	६	११	१०	९	१
राशि	वृ·	मि·	क·	सिं·	क·	कुं·	म·	ध·	मे·
वर्ष	३	१	३	०	१	०	०	१	१
माह	०	८	११	११	८	९	९	१०	३
दिन	४	९	१३	८	९	१	१	१७	२४
घटी	१४	१२	३	४९	५२	३	३	३८	२१
पल	७	५६	३२	२५	५६	३२	३२	४९	११

३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९)

राशि	३	४	५	६	११	१०	९	१	२
राशि	मि·	क·	सिं·	क·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·
वर्ष	०	२	०	०	०	०	१	०	१
माह	११	२	६	११	५	५	०	८	८
दिन	१३	२०	१०	१३	२	२	२१	२६	९
घटी	३	२८	३५	३	२८	३८	१०	४९	५२
पल	३२	१४	१८	३२	१४	१४	३५	२५	५६

४कर्कान्तरम् (दशावर्ष२१)

राशि	४	५	६	११	१०	९	१	२	३
राशि	क·	सिं·	क·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·
वर्ष	५	१	२	०	०	२	१	३	२
माह	२	२	२	११	११	५	८	११	२
दिन	७	२४	२०	२५	२५	१९	२२	१३	२०
घटी	४१	४२	२८	४५	४५	२४	३५	३	२८
पल	५३	२१	१४	५३	५३	४३	१७	३२	१४

५ सिंहान्तरम् (दशावर्ष ५)

राशि	५	६	११	१०	९	१	२	३	४
राशि	सिं·	क·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·	क·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
माह	३	६	२	२	६	४	११	६	२
दिन	१५	१०	२४	२४	१	२८	८	१०	२४
घटी	५२	२५	४२	४२	४५	१७	४९	३५	४२
पल	५६	१८	२१	२१	५३	७	२५	१८	२१

(जीवान्तरम्) ६कन्यान्तरम् (दशावर्ष९)

राशि	६	११	१०	९	१	२	३	४	५
राशि	क·	कुं·	म·	ध·	मे·	वृ·	मि·	क·	सिं·
वर्ष	०	०	०	१	०	१	०	२	०
माह	११	५	५	०	८	८	११	२	६
दिन	१३	२	२	२१	२६	५	१३	२०	१०
घटी	३	२८	२८	१०	४९	५२	३	२८	३५
पल	३२	१४	१४	३५	३५	५६	३२	१४	१८

नक्षत्र संख्याः— २ ८ १४ २० २६

सव्य नक्षत्रः— भरणी, पुष्य, चित्रा पूर्वाषाढ, उत्तरा भाद्रपदा,

तृतीय चरण

(परमायु वर्ष ८३)

	(देहान्तरम्) ७तुलान्तरम् (दशावर्ष १६)									८वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	७	८	९	१०	११	१२	८	७	६	८	९	१०	११	१२	८	७	६	७
राशि	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	वृ·	तु·	क·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	वृ·	तु·	[illegible]	तु·
वर्ष	३	१	१	०	०	१	१	३	१	०	०	०	०	०	०	१	०	१
माह	१	४	११	९	९	११	४	१	८	७	१०	४	४	१०	७	४	९	४
दिन	०	५	२	७	७	३	५	०	२४	२	३	१	१	३	२	५	३	५
घटी	२१	४७	५८	३५	३५	१८	४७	२१	३४	३१	३६	२६	२६	३६	३१	४७	१५	४०
पल	४१	००	३३	२५	२५	३३	००	४१	४२	४८	५२	४५	४५	५२	४८	००	१०	००

	९ धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०)									१०मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	९	१०	११	१२	८	७	६	७	८	१०	११	१२	८	७	६	७	८	९
राशि	ध·	मं·	कुं·	मी·	वृ·	तु·	क·	तु·	वृ·	मं·	कुं·	मी·	वृ·	तु·	कं·	तु·	वृ·	ध·
वर्ष	१	०	०	१	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	२	२	५	४	९	५	९	४	५
दिन	१३	२३	२३	१३	३	३	०	३	३	९	९	२३	१	७	६	७	१	२३
घटी	४४	२९	२९	४४	३६	५८	२१	५८	३६	२१	२३	२९	२६	३५	८	३५	२६	२९
पल	६	३८	३८	६	५२	३३	४२	३३	५२	५२	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८

	११कुमान्तरम् (दशावर्ष ४)									१२मीनान्तरम् (दशावर्ष १०								
राशि	११	१२	९	७	६	७	८	९	१०	१२	८	७	६	७	८	९	१०	११
राशि	कुं·	मी·	वृ·	तु·	कं·	तु·	वृ·	ध·	म·	मी·	वृ·	तु·		तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०	१	०	०
माह	२	५	४	९	५	९	४	५	२	२	१०	११	१	११	१०	२	५	५
दिन	९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३
घन्टा	२३	२९	२६	३५	८	३५	२६	२९	२३	४४	३६	५८	२१	५८	३६	४४	२९	२९
पल	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८	५२	६	५२	३३	४२	३३	५२	०६	३८	३८

	(सिंहावलोक) [८]वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष७)									७तुलान्तरम् (दशावर्ष१६)								
र शि	[८	७	६	७	८	९	१०	११	१२	७	६	७	८	९	१०	११	१२	८
राशि	वृ·	तु·	कं·	तु·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	तु·	क·	तु·	वृ·	ध·	मं·	कुं·	मी·	वृ·
वर्ष	०	१	०	१	०	०	०	०	०	३	१	३	१	१	०	०	१	१
माह	७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	१	८	१	४	११	९	९	११	४
दिन	२	५	३	५	२	३	१	१	३	८	२४	०	५	३	७	७	३	५
घटी	३१	४७	१५	४७	३१	३६	२६	२६	३६	२१	३४	२१	४७	५८	३५	३५	५८	४७
पल	४८	०	१०	०	४८	५२	४५	४५	५२	४१	४२	४१	००	३३	२५	२५	३३	००

	६कन्यान्तरम् (दशावर्ष९) (जीवान्तरम्)								
राशि	६	७	८	८	१०	११	१२	८	७
राशि	कं·	तु·	वृ·	धं·	मं·	कुं·	मी	वृ·	तु·
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	१
माह	११	८	९	१	५	५	१	९	८
दिन	२१	२४	३	०	६	६	९	३	२४
घटी	१९	३४	१५	२१	८	८	२१	१५	३४
पल	३२	४२	१०	४२	४०	४०	४२	१०	४२

नक्षत्र संख्या— २ ८ १४ २० २८

सव्य नक्षत्र—भरणी, पुष्य, चित्रा, पू.षाढ, उ.भाद्र (स०५)

चतुर्थ चरण

परमायुवर्ष ८६

	(देहान्तरम्) *४ माण्डूकी कर्कान्तरम् (दशावर्ष २१)									*५सिंहान्तरम् दशावर्ष५) (मर्कटा)								
राशि	*४	(५	*३	२	१	१२	११	१०	९	(५	*३	२	१	१२	११	१०	९	*४
राशि	कं·	सिं·	क·	वृ·	मे·	मी·	कुं·	मं·	ध·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	कुं·	मं·	ध·	क·
वर्ष	५	१	२	३	१	२	०	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	१
माह	१	२	२	१०	८	५	११	११	५	३	६	११	४	६	२	२	६	२
दिन	१६	१९	११	२६	१५	९	२१	२१	९	१४	८	४	२६	२९	२३	२३	२९	१९
घटी	२	३२	९	३०	२०	४	३७	३७	४	३९	२२	५३	३०	१८	४३	४३	१८	३२
पल	४७	५	४३	४२	५६	११	४१	४१	११	४	२०	१	४२	९	१५	१५	९	५

	*३मिथुनान्तरम् (दशावर्ष९) माण्डूकी									२वृषान्तरम् [दशावर्ष१६]								
राशि	*३	२	१	१२	११	१०	९	*४	[५	२	१	१२	११	१०	९	४	५	३
राशि	मि·	वृ·	मे·	मी·	कुं·	म·	ध·	क·	सिं·	वृ·	मे·	मी·	कुं·	म·	ध·	क·	सिं·	मि·
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	२	०	२	१	१	०	०	१	३	०	१
माह	११	८	८	९	५	५	०	२	६	११	३	१०	८	८	१०	१०	११	८
दिन	९	२	२३	१६	०	०	१६	११	८	२१	१८	९	२७	२७	९	२६	४	२
घटी	४	४७	४३	४४	४१	४१	७४	९	२२	३७	५०	४६	५४	५४	४६	३०	५३	४७
पल	११	२६	१५	४०	५१	५१	४०	४६	२०	४१	१४	२	२६	२६	२	४२	१	२६

	१मेषान्तरम् (दशावर्ष७)									१२मीनान्तरम् (दशावर्ष१०								
राशि	१	१२	११	१०	९	४	५	३	२	१२	११	१०	९	४	५	३	२	१
राशि	मे·	मी·	कुं·	म·	ध·	कं·	सिं·	मि·	वृ·	मी·	कुं·	म·	ध·	कं·	मि·	मि·	वृ·	मे·
वर्ष	०	०	०	०	०	१	०	०	१	१	०	०	१	२	०	१	१	०
माह	६	९	३	३	९	८	४	८	३	९	५	५	१	५	६	०	१०	९
दिन	२५	२३	२७	२७	२३	१५	२६	२३	१८	२८	१७	१७	२८	९	२९	१६	९	२३
घटी	६	१	१२	१२	१	२०	३०	४२	५०	२६	२६	२६	३६	४	१८	४४	४६	१
पल	५९	४	३३	३६	२४	५६	१२	१५	१४	१६	३०	३०	१६	१३	९	४०	२	२४

	११कुम्भान्तरम् (दशावर्ष४)									१०मकरान्तम् (दशावर्ष४)								
राशि	१९	१०	९	४	५	३	२	१	२१	१०	९	४	५	३	२	१	१२	११
राशि	कुं·	मे·	ध·	कं·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	मं·	धं·	कं·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	कुं·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	७	२	०	०	०
मह	२	०	५	११	२	५	८	३	५	२	५	११	२	५	८	३	५	२
दिन	६	६	१७	२१	५३	०	२७	२७	१७	६	१७	२१	५३	०	२७	२७	१७	६
घटी	५८	५८	२६	३७	४३	४१	५४	१२	२६	५८	२६	३७	४३	४१	५४	१२	२६	५८
पल	३७	३७	३०	४१	१५	५१	२६	२३	३०	३७	३०	४१	१५	११	२६	२३	३०	३०

	(जीवान्तरम्) ९ धन्वान्तरम् (दशावर्ष१०)								
राशि	९	४	५	३	२	१	१२	११	१०
राशि	ध·	क·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	मी·	कुं·	म·
वर्ष	१	२	०	१	१	०	१	०	०
माह	१	५	६	०	१०	९	१	५	५
दिन	२८	९	२९	१६	९	२३	२८	१७	७
घटी	३६	४	१८	४४	४६	१	३६	२६	२६
पल	१६	१३	९	४०	२	२४	१६	३०	३०

कालचक्रे अन्तरदशा सारण संख्या ४

नक्षत्र संख्या— ४ १० १६ २२

तृतीय वर्ग के अपसव्य नक्षत्र रोहणा, मघा विशाखा, श्रवणनवमांश राशिः—८ वृश्चिक

प्रथम चरण

परमायु वर्ष ८६

	जीवराशि ९ धन्वन्तरम् (दशावर्ष १०)									१० मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	९	१०	११	१२	१	२	३	५	४	१०	११	१२	१	२	३	५	४	९
राशि	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	सिं.		म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	सिं.	क.	ध.
वर्ष	१	०	०	१	०	१	१	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	१	५	५	१	९	१०	१०	६	५	२	२	५	३	८	५	२	११	५
दिन	२८	१७	१७	२८	२३	९	१६	२९	९	६	६	१७	२७	२७	८	२३	२१	१७
घटी	३६	२६	२६	३६	१	४६	४४	१८	४	५८	५८	२६	१२	५४	४१	४३	३७	२६
पल	१६	३०	३०	१६	२४	२	५०	९	१३	३७	३७	३०	३३	२६	५१	१५	४१	३०

	११ कुभान्तरम् (दशावर्ष ४)									१२ मीनान्तरम् (दशावर्ष १०)								
राशि	११	१२	१	२	३	५	४	९	१०	१२	१	२	३	५	४	९	१०	११
राशि	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	सिं.	क.	ध.	म.	मी.	मे.	वृ.	मि.	सिं.	क.	ध.	म.	कुं.
वर्ष	०	०	०	०	१	०	०	०	०	१	०	१	१	०	२	१	०	०
मास	२	५	३	८	५	२	११	५	२	१	९	१०	०	६	५	१	५	५
दिन	६	१७	२७	२७	८	२३	२१	१७	६	२८	२३	९	१६	२९	९	२८	१७	१७
घटी	५८	२६	१२	५४	४१	४३	३७	२६	५८	३६	१	४६	४४	१८	४	३६	२६	२६
पल	३७	३०	३३	२६	५१	१५	४१	३०	३७	१६	२४	२	४०		१३	१६	३०	३०

	१ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)									२ वृषान्तरम् (दशावर्ष १६)								
राशि	१	२	३	५	४	९	१०	११	१२	२	३	५	४	९	१०	११	१२	१
राशि	मे.	वृ.	मि.	सिं.	क.	ध.	म.	कुं.	मी.	वृ.	मि.	सिं.	क.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.
वर्ष	०	१	०	०	१	०	०	०	०	२	१	०	३	१	२	२	१	१
मास	६	३	८	४	८	९	३	३	९	११	८	११	१०	१०	८	८	१०	३
दिन	२	१७	२३	२६	१५	२३	७	२७	२३	२१	२	४	२६	९	२७	२७	९	१८
घटी	६	५०	४३	३०	२०	१	१२	१२	१	३७	४७	५३	३०	४६	५५	५४	४६	५०
पल	५९	१४	१५	४२	५६	२४	३३	३३	२४	४१	२६	१	४२	२	२६	२६	२	१४

	३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९)									*५* (माण्डूकी) सिंहान्तरम् (दशावर्ष ५)								
राशि	३	५	४	९	१०	११	१२	१	२	*५	(४	९	१०	११	१२	१४	२	३
राशि	मि·	सिं·	क·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	सिं·	क·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·
वर्ष/	०	०	२	१	०	०	१	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०
मास	११	६	२	०	५	५	०	८	८	३	२	६	६	२	६	४	११	६
दिन	९	८	११	१६	०	०	१६	२३	२	१	१९	२९	२३	२३	२९	२६	९	८
घटी	४	२२	९	४४	४१	४१	४४	४३	४७	३९	३२	१८	४३	४३	१८	३०	५३	२२
पल	११	२०	४६	४०	५२	५२	४०	१५	२६	४	५	९	५	१५	९	४२	३	२०

	(मर्कटी) (४) (देहराशि) कर्कान्तरम् (दशावर्ष २१)								
राशि	(४	९	१०	११	१२	१	२	३	*५
राशि	क·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	सिं·
वर्ष	५	२	०	०	२	१	३	२	१
मास	१	५	११	११	५	८	१०	२	२
दिन	१६	९	२१	२१	९	१५	२६	११	१९
घटी	२	४	३७	३७	४	२०	३०	९	३२
पल	४७	११	४१	४१	११	५६	४२	४६	५

नक्षत्र संख्या— ४ १० १६ २२ नवमांश राशि—७ तुला

नक्षत्र संख्या—रोहणी, मघा, विशाखा, श्रवण

द्वितीय चरण

परमायु वर्ष ८३

	(माण्डूकी *६* (जीवराशि) कन्यान्तरम् (दशावर्ष ९)									७ तुलान्तरम् (दशावर्ष ०६)								
राशि	६	७	८	[१२	११	१०	९	८	७	८	१२	११	१०	९	८	७	६	७
राशि	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	तु·
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	१	०	१
मास	११	८	९	१	५	५	१	९	८	७	१०	४	४	०	७	४	९	४
दिन	२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४	२	३	१	१	३	२	५	३	५
घटी	१९	३४	१५	२१	८	८	२१	१५	३४	३१	३६	२६	२६	३६	३१	४७	१५	४७
पल	३२	४२	१०	४२	४०	४०	४२	०	४२	४८	५२	४५	४५	५२	४८	०	१०	०

८

वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७)

राशि	८	१२	११	१०	९	८	७	६	७
राशि	वृ·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	तु·
माह	०	०	०	०	०	०	१	०	१
वर्ष	७	१०	४	४	१०	७	४	९	४
दिन	२	३	१	१	३	२	५	३	५
घटी	३१	३६	२६	२६	३६	३१	४७	१५	४७
पल	४८	५२	४५	४५	५२	५८	०	१०	०

[१२] (सिंहावलोक)

मीनान्तरम् (दशावर्ष १०)

राशि	१२	११	१०	९	८	७	६	७	८
राशि	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	तु·	वृ·
माह	१	०	०	१	०	[illegible]	१	१	०
वर्ष	२	५	५	२	१०	११	१	११	१०
दिन	१३	२३	२२	१३	३	३	०	३	३
घटी	४४	२९	२९	४४	३६	५८	२१	५७	३६
पल	६	३८	३८	६	५२	३३	४२	३३	५२

११

कुभान्तरम् (दशावर्ष ४)

राशि	११	१०	९	८	७	६	७	८	१२
राशि	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	तु·	वृ·	मी·
माह	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वर्ष	२	२	५	४	९	५	९	४	५
दिन	९	९	२३	१	७	६	७	१	२३
घटी	२३	२३	२९	२६	३५	८	३५	२६	२९
पल	५२	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८

१०

मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)

राशि	१०	९	८	७	६	७	८	१२	११
राशि	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·
माह	०	०	०	०	०	०	०	०	०
वर्ष	२	५	४	९	५	९	४	५	२
दिन	९	२३	१	७	६	७	१	२३	९
घटी	२३	२९	२६	३५	८	३१	२६	२९	२३
पल	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८	५२

९

धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०)

राशि	९	८	७	६	७	८	१२	११	१०
राशि	ध·	वृ·	तु·	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·
माह	१	०	१	१	१	०	१	०	०
वर्ष	२	१०	११	१	११	१०	२	५	५
दिन	१३	२	३	०	३	३	१३	२३	२३
घटी	४४	३६	५८	२१	५८	३६	४४	२९	२९
पल	६	५२	३३	४२	३३	५२	६	३८	३८

८

वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७)

राशि	८	७	६	७	८	१२	११	१०	९
राशि	वृ·	तु·	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·	ध·
माह	०	१	०	१	०	०	०	०	०
वर्ष	७	४	९	४	७	१०	४	४	१०
दिन	२	५	३	५	२	३	१	१	३
घटी	३१	४७	१५	४७	३१	३६	२६	२६	३६
पल	४८	०	१३	०	४८	५२	४५	४५	५२

७

तुलान्तरम् (दशावर्ष १६) देहराशि

राशि	७	६	७	८	१२	११	१०	९	८
राशि	तु·	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·
माह	३	१	३	१	१	०	०	१	१
वर्ष	१	८	१	४	११	९	९	११	४
दिन	०	२४	०	५	३	७	७	३	५
घटी	२१	२४	२१	४७	५८	३५	३५	५८	४७
पल	४१	४२	४१	०	३३	२५	२५	३३	०

कालचक्रे अन्तरदशा सारणी संख्या ४

तृतीय वर्ग के अपसव्य नक्षत्रों की दशा

नक्षत्र संख्याः—४ १० १६ २२

नक्षत्र —रोहणी, मघा, विषाखा, श्रवण,

तृतीय चरण

नवमांशराशिः—६कन्या

(परमायु वर्ष ८५)

	६ (जीवराशि) कन्यातरम् (दशावर्ष ९)									५ सिंहान्तरम् (दशावर्ष ५)								
राशि	६	५	४	३	२	१	९	१०	११	५	४	३	२	१	९	१०	११	६
राशि	क·	सिं·	कृ·	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	सिं·	क	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	क·
वर्ष	०	०	२	१	१	०	१	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०
मास	११	६	२	११	८	८	०	५	५	३	२	६	११	४	७	२	२	६
दिन	१३	१०	२०	१३	९	२६	२१	२	२	१५	२४	१०	८	२८	१	२४	२४	१०
घटी	३	३५	२८	३	५२	४९	१०	२८	२८	५२	४२	३५	४९	१४	४५	४२	४२	३५
पल	३२	१८	१४	३२	५६	२५	३५	१४	१४	५६	९	१८	२५	७	५३	२१	२१	१८

	४ कर्कान्तरम् (दशावर्ष २१)									३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९)								
	४	३	२	१	९	१०	११	६	५	३	२	१	९	१०	११	४	५	६
राशि	कृ·	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	क·	सिं·	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	कृ·	सिं·	क
वर्ष	५	२	३	१	२	१	०	२	१	०	१	०	१	०	०	०	०	२
माह	२	२	११	८	५	११	११	२	२	११	८	८	०	५	५	११	६	२
दिन	७	२०	१३	२२	१९	२५	२५	२०	२४	१३	९	२६	२१	२	२	१३	१०	२०
घटी	४५	२८	३	३५	२४	४५	४५	१८	४२	३	५२	४९	१०	२८	२८	३	३५	२८
पल	५३	१४	३२	१७	४३	१३	५३	१४	२१	३२	५६	२५	३५	१४	१४	३२	१८	१४

	२ वृषान्तरम् (दशावर्ष १६)									२ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	२	१	९	१०	११	६	५	४	३	१	९	१०	११	६	५	४	३	२
राशि	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	क·	सिं·	कृ·	मि·	मे·	ध·	म·	कुं·	क·	सिं·	कृ·	मि·	वृ·
वर्ष	३	१	१	०	०	१	१	३	१	०	०	०	०	०	०	१	०	१
मास	०	३	१०	९	९	८	११	११	८	६	९	३	३	८	४	८	८	३
दिन	४	२४	१७	१	१	९	१८	१३	९	२७	२६	२८	२८	२६	२८	३२	२६	२४
घटी	१४	२१	३८	३	३	५२	३९	३	५२	३१	२८	३५	३५	४९	१४	३५	४९	२१
पल	७	११	४९	३२	३२	५६	२५	३२	५६	४६	१४	१८	१८	३५	७	१७	२५	१०

	९ (सिंहावलोक) धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०)									१० मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	[९	१०	११	६	५	४	३	२	१	१०	११	६	५	४	३	२	१	९
राशि	ध·	म·	कुं·	कं·	सिं·	क·	मि·	वृ·	मे·	मं·	कुं·	कं·	सिं·	क·	मि·	वृ·	मे·	ध·
वर्ष	१	०	०	१	०	२	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	२	५	५	०	७	५	०	१०	९	२	२	५	२	११	५	९	३	५
दिन	३	१९	१९	२१	१	१९	२१	१७	२६	७	७	२	२४	२५	२	१	२८	१९
घटी	३१	२४	२४	१०	४५	२४	१०	३८	२८	४५	४५	२८	४२	४५	२८	३	३५	२४
पल	४६	४३	४२	३५	५३	४२	३५	४९	१४	५३	५३	१४	२१	५३	१४	३२	१८	४२

	११ कुँभान्तरम् (दशावर्ष ४) (देहराशि)								
राशि	११	६	५	४	३	२	१	९	१०
राशि	कुं·	कं·	सिं·	क·	मि·	वृ·	मे·	धं·	मं·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	२	५	२	११	५	५	३	५	२
दिन	७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	७
घटी	४५	२८	४२	४५	२८	३	३५	२४	४५
पल	५३	१४	२१	५३	१४	३२	१८	४२	५३

नक्षत्र संख्या— ४ १० १६ २१

अप सव्य नक्षत्र—रोहणी, मघा, विशाखा, श्रवण,

चतुर्थ चरण

परमायुवर्षः—१०० नवमांशराशिः—५ सिंह

	१२ (जीवराशि) मीनान्तम् (दशावर्ष १०)									१ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	१२	१	२	३	५	४	६	७	८	१	२	३	५	४	६	७	८	१२
राशि	मी·	मे·	वृ·	मि·	सिं·	कं·	कं·	तु·	वृ·	मे·	वृ·	मि·	सिं·	कं·	कं·	तु·	वृ·	मी·
वर्ष	१	०	१	०	०	२	०	१	०	०	१	०	०	१	०	१	०	०
माह	०	८	७	१०	६	१	१०	७	८	५	१	७	४	५	७	१	५	८
दिन	०	१२	६	२४	०	६	२४	६	१२	२६	१३	१६	६	१९	१६	१३	२६	१२
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२४	१२	४८	०	१२	४८	१२	२४	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	२ वृषान्तरम् (दशावर्ष १६)									३मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९)								
राशि संख्या	२	३	५	४	६	७	८	१२	१	३	५	४	६	७	८	१२	१	२
राशि	वृ·	मि·	सिं·	क·	क·	तु·	वृ·	मी·	मे·	मि·	सिं·	क·	क·	तु·	वृ·	मी·	मे·	वृ·
वर्ष	२	१	०	३	१	२	१	१	१	०	०	१	०	१	७	०	०	१
माह	६	५	९	४	५	६	१	६	१	९	५	१०	९	५	७	१०	७	५
दिन	११	८	१८	९	८	२१	१३	३६	१३	२१	१२	२०	२१	८	१६	२४	१६	८
घटी	३६	२४	०	३६	२४	३६	१२	०	१२	३६	०	२४	३६	२४	४८	०	४८	२४
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	५सिंहान्तरम् (दशावर्ष)५ (माण्डूकी)									४ कर्कान्तरम् (दशावष २१) (कर्कटी)								
राशि संख्या	*५	(४	*६	७	८	१२	१	२	३	(४	*६	७	८	१२	१	२	३	*५
राशि	सिं·	कं·	कं·	तु·	वृ·	मी·	मे·	वृ·	मि·	कं·	कं·	तु·	वृ·	मी·	मे·	वृ·	मि·	सिं·
वर्ष	०	१	०	०	०	०	०	०	०	४	१	३	१	२	१	३	१	१
मास	२	०	५	९	४	६	४	९	५	४	१०	४	५	१	५	४	१०	०
दिन	०	१८	१२	१८	६	०	६	१८	१२	२७	२०	९	१९	६	१९	९	२०	१८
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३६	२४	३६	१२	०	१२	३६	२४	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	६कन्यान्तरम (दशावर्ष ९) (माण्डूकी)									७ तुलान्तरम् (दशावर्ष १६)								
राशि संख्या	*६	७	८	१२	१	२	३	*५	(४	७	८	१२	१	२	३	५	४	६
राशि	क·	तु·	वृ·	मी·	मे·	वृ·	मि·	सिं·	क·	तु·	वृ·	मी·	मे·	वृ·	मि·	सिं·	क·	क·
वर्ष	०	१	०	०	०	०	०	०	१	२	१	१	१	०	१	०	३	१
मास	९	५	७	१०	७	५	९	५	१०	६	१	७	१	६	५	९	४	५
दिन	२१	८	१६	२४	१६	८	२१	१२	२०	२१	१३	६	१३	२१	८	१८	९	८
घटी	३६	२४	४८	०	४८	२४	३६	०	२४	३६	१२	०	१२	३६	२४	०	३६	२४
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	९

	८ वृश्चिकान्तरम्(दशावर्ष ७) (देहराशि)								
राशि	८	२	१	२	३	५	४	६	७
राशि	वृ·	मी·	मे·	वृ·	मि·	सिं·	क·	क·	तु·
वर्ष	०	०	०	१	०	०	१	०	३
दिन	५	८	५	१	७	४	५	७	१
मास	२६	१२	२६	१३	१६	६	१९	१६	१३
घटी	२४	०	२४	१२	४८	०	१२	४८	१२
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

कालचक्रे अन्तरदशा सारणी संख्या ४

चतुर्थ वर्ग के अपसव्य नक्षत्र (अष्ट)

नक्षत्र संख्याः— ५ ६ ११ १२ १७ १८ २३ २४

नक्षत्र:—मृगशिरा आर्द्र,पू०फा०, उ०फा०, अनुराधा, ज्येष्ठ,धनिष्ठा, शतभिषा

मृग, पू०फा०, अनु., धनि०, नवमांश, कर्क, आर्द्रा, उ. फा., ज्ये., शत., नवमांश-मीन राशि

प्रथम चरण

(परमायु वर्ष ८६)

	१२ (जीवराशि) मीनान्तरम् (दशावर्ष १०)									११ कुंभान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	११	१०	९	८	७	६	५	४	१२
राशि	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	सिं·	क·	कुं·	म·	ध	वृ·	तु·	क·	सिं·	क·	मी·
वर्ष	१	०	०	१	०	१	१	०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	१	[illegible]	५	१	९	१०	०	६	५	२	२	५	३	८	५	२	११	५
दिन	२८	१७	१७	२८	२३	९	१६	२९	९	६	६	१७	२७	२७	०	२३	२१	१७
घटी	३६	२६	२६	३६	१	४६	४४	१८	४	५८	५८	२६	१२	५४	४१	४३	३७	२६
पल	१६	३०	३०	१६	२४	२	४०	९	१३	३७	३७	३०	३३	२६	५१	२५	४१	३०

	१० मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)									९ धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०)								
राशि	१०	९	८	७	६	५	४	१२	११	९	८	७	६	५	४	१२	११	१०
राशि	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	सिं·	क·	मी·	म·	ध·	वृ·	तु·	कं·	सिं·	क·	मी·	कुं·	म·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१	०	१	१	०	२	१	०	०
मास	२	५	३	१	५	२	११	५	·	१	९	१०	०	६	५	१	५	५
दिन	६	१७	७	२७	०	२३	२१	१७	६	२८	२३	९	१६	२९	९	२८	१७	१७
घटी	५८	२६	१२	५४	४१	४३	३७	२६	५८	३६	१	४६	४४	१८	४	३६	२६	२६
पल	३७	३०	३३	२६	५१	१५	४१	३०	३७	१६	२४	२	४०	९	१३	१६	३०	३०

	८ वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७)									७ तुलान्तरम् (दशावर्ष ९)								
राशि	८	७	६	५	४	१२	११	१०	९	७	६	५	४	१२	११	१०	९	८
राशि	वृ·	तु·	कं·	सिं·	क·	मी·	कुं·	म·	ध·	तु·	कं·	सिं·	क·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·
वर्ष	०		०	०	१	०	०	०	०	२	१	०	३	१	०	०	१	१
मास	६	३	८	४	८	९	३	३	९	११	८	११	१०	१०	८	८	१०	३
दिन	२५	१८	२३	२६	१५	२३	२७	२७	२३	२१	२	४	२६	९	२७	२७	९	१८
घटी	६	५०	४३	३०	२०	१	१२	१२	१	३७	४७	५३	३०	४६	५४	५४	४६	५०
पल	५८	१४	१५	४२	५६	२४	३३	३३	१४	४१	२६	१	४२	२	२६	२६	२	१४

	६ कन्यान्तरम् (दशावर्ष ९)									५ सिंहान्तरम् (दशावर्ष ५)								
राशि	६	५	४	१२	११	१०	९	८	७	५	४	१२	११	१०	९	८	७	६
राशि	क·	सिं·	क·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	सिं·	क·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	कं·
वर्ष	०	०	२	१	०	०	१	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०
मास	११	६	२	०	५	५	०	८	८	३	२	६	२	२	६	४	११	६
दिन	९	८	११	१६	०	०	१६	२३	२	१४	१९	२९	२३	२३	२९	२६	४	८
घटी	४	२२	९	४४	४१	४१	४४	२३	४७	३९	२२	१८	४३	४३	१८	३०	५३	२२
पल	११	२०	४६	४०	५१	५१	४०	१५	५६	४	१५	९	१५	१५	९	४२	१	२०

	४ (देहराशि) कर्कान्तरम् (दशावर्ष २१)								
राशि	४	१२	११	१०	९	८	७	६	५
राशि	क·	मी·	कुं·	म·	ध·	वृ·	तु·	क·	सिं·
वर्ष	५	२	०	०	२	१	३	२	१
माह	१	५	११	११	५	८	१०	२	२
दिन	१६	९	२१	२१	९	१५	२६	११	१९
घटी	२	४	३७	३७	४	२०	३०	९	३२
पल	४७	११	४१	४१	११	५६	४०	४६	५

नक्षत्र संख्या— ५ ६ ११ १२ १९ १८ २२ २४

अपसव्य नक्षत्र—मृगशिरा, आद्रा. पू. फा., उ.फा., अनुराधा, ज्येष्ठ, धनिष्ठा, शतभिषा

द्वितीय चरण

परमायु वर्ष ८३ मृग, पू. फ. अनु धनि की नवमांश राशि मिथुन
आद्र, उ. फा, ज्ये, शत नवमांशि राशि कुम्भ

	३ (जीवराशि) मिथुनान्तरम् (दशावर्ष९)									२ वृषान्तरम् (दशावर्ष १६)							
राशि	३	२	१	९	१०	११	१२	१	२	२	१	९	१०	११	१२	१	२
राशि	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	मी	मे·	वृ·
वर्ष	१	१	०	१	०	०	१	०	१	३	१	१	०	०	१	१	३
मास	११	८	९	१	५	५	१	९	८	१	४	११	९	९	११	४	१
दिन	२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४	०	५	३	७	७	३	५	०
घटी	१९	२४	१५	२१	८	८	२१	१५	३४	२१	४७	५८	३५	३५	५८	४७	२१
पल	३२	४२	१०	४२	४०	४०	४२	१०	४२	४१	०	३३	२५	२५	३३	०	४२

	१ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)									[९] (सिंहावलोक, धन्वान्तरम् (दशावर्ष १०)								
राशि	१	९	१०	११	१२	१	२	३	२	[९	१०	११	१२	१	२	३	२	१
राशि	मे·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	१	०	१	१	०	०	१	१	१	१	१	०
मास	७	१०	४	४	१०	७	४	९	४	२	५	५	२	१०	११	१	११	१०
दिन	२	३	१	१	३	२	५	३	५	१३	२३	२३	१३	३	३	०	३	३
घटी	३१	३६	२६	२६	३६	३१	४७	१५	४७	४४	३९	३९	४४	३६	५८	२१	५८	३६
पल	४८	५२	४५	४५	५२	४८	०	१०	०	६	३८	३८	६	५२	३३	४२	३१	५२

	१० मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)									११ कुम्भान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	१०	११	१२	१	२	३	२	१	९	११	१२	१	२	३	२	१	९	१०
राशि	म·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	ध·	कुं·	मी·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	२	२	५	४	९	५	९	४	५	२	५	४	९	५	९	४	५	२
दिन	९	९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	२३	१	७	६	७	१	२३	९
घटी	२३	२३	२९	२६	३५	८	३५	२६	२९	२३	२९	२६	३५	८	३५	२६	२९	२३
पल	५२	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८	५२	३८	४५	२५	४०	२५	४५	३८	५२

	१२ मीनान्तरम् (दशावर्ष १०)									१ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	१२	१	२	३	२	१	९	१०	११	१	२	३	२	१	९	१०	११	१२
राशि	मी·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	मे·	वृ·	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	मी·
वर्ष	१	०	१	१	१	०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	०	०	०
मास	२	१०	११	१	११	१०	२	५	५	७	४	९	४	७	१०	४	४	१०
दिन	१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३	२	५	३	५	२	३	१	१	३
घटी	४४	३६	५८	२१	५८	३६	४४	२९	२९	३१	४७	१५	४७	३१	३६	२६	२६	३६
पल	६	५२	३२	४१	३३	५२	६	३८	३८	४८	०	१०	०	४७	५२	४५	४५	५२

	९ वृषान्तरम् (दशावर्ष १६)								
राशि	२	३	२	१	९	१०	११	१२	१
राशि	वृ·	मि·	वृ·	मे·	ध·	म·	कुं·	मी·	मे·
वर्ष	३	१	३	१	१	०	०	१	१
मास	१	८	१	४	११	९	९	११	४
दिन	०	२४	०	५	३	७	७	३	५
घटी	२१	३४	२१	४७	५८	३५	३५	५८	४७
पल	४१	४२	४१	०	१३	२५	२५	३१	०

कालचक्रे अन्तरदशा सारणी संख्या ४

चतुर्थ चरण के अष्ट अपसव्य नक्षत्र

नक्षत्र संख्याः— ५ ६ ११ १२ १७ १८ २२ २४

अप-सव्य नक्षत्रः—मृगशिरा, आर्द्रा, पू०फा, उ०फा, अनुराधा, ज्येष्ठ, धनिष्ठा. शतभिषा

नक्षत्रः ५, ११, १७, २३ की नवमांशराशि—वृष

तृतीय चरण ६, १२, १८, २४ नवमांश राशि—मकर

(परमायु वर्ष ८५)

(जीवराशि) ३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष९)

राशि	३	५	४	६	७	८	१२	११	१०
राशि	मि·	सिं·	क·	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·
वर्ष	०	०	२	०	१	०	१	०	०
मास	११	६	२	११	८	८	०	५	५
दिन	१३	१०	२०	१३	९	२६	२१	२	२
घटी	३	३५	२८	३	५२	४९	१०	२८	२८
पल	३२	१८	१४	३२	५६	२५	३५	१४	१४

(माण्डूकी) ५ सिंहान्तरम् (दशावर्ष५)

राशि	*५	(४	*६	७	८	१२	११	१०	३
राशि	सिं·	क·	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·	मि·
वर्ष	०	१	०	०	०	०	०	०	०
मास	३	२	३	११	४	७	२	२	६
दिन	१५	२४	१०	८	२८	१	२४	२४	१०
घटी	५२	४२	३५	४९	१४	४५	४२	४२	३५
पल	५६	२१	१८	२५	१७	५३	२१	२१	१८

(मर्कटी) ४ कर्कान्तरम् (दशावर्ष२१)

राशि	(४	*६	७	८	१२	११	१०	३	*५
राशि	क·	कं·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	मं·	मि·	सिं·
वर्ष	५	२	३	१	२	०	०	२	१
मास	२	२	११	८	५	११	११	२	२
दिन	७	२०	१३	२२	१९	२५	२५	२०	२४
घटी	५४	१८	३	३५	२४	४५	४५	२८	४२
पल	५३	१४	३२	१७	४२	५३	५३	१८	२१

(माण्डूकी) ६ कन्यान्तरम् (दशावर्ष९)

राशि	*६	७	८	१२	११	१०	३	*५	(४
राशि	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·	मं·	मि·	सिं·	क·
वर्ष	०	१	०	१	०	०	०	०	२
मास	११	८	८	०	५	५	११	६	२
दिन	१३	९	२६	२१	२	२	१३	०	२०
घटी	३	५२	४९	१०	२८	२८	३	३५	२८
पल	३२	५६	२५	३५	१४	१४	३२	१८	१४

७ तुलान्तरम् (दशावर्ष१६)

राशि	७	८	१२	११	१०	३	५	४	६
राशि	तु·	वृ·	मी·	कुं·	म·	मि·	सिं·	कं·	क·
वर्ष	३	९	१	०	०	१	०	३	१
मास	०	३	१०	९	९	८	११	११	८
दिन	४	२४	१७	१	१	९	८	१३	९
घन्टा	१४	२१	३८	३	३	५२	४९	३	२
पल	७	११	४९	३२	२२	५६	२५	३२	५६

८ वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष७)

राशि	८	१२	११	१०	३	५	४	६	७
राशि	वृ·	मी·	कुं·	म·	मि·	सिं·	क·	कं·	तु·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	१	०	१
मास	६	९	३	३	८	४	८	८	३
दिन	२७	२६	२८	२८	२६	२८	२२	३६	२४
घन्टा	३१	२८	३५	३५	४९	१४	३५	४९	२०
पल	४६	१४	१८	१८	२५	७	१७	२५	११

	(सिंहावलोक) [१२]मीनान्तरम् (दशावर्ष१०)									११कुंभान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	१२	११	१०	३	#५	(४	#६	७	८	११	१०	३	५	४	६	७	८	१२
राशि	मी·	कुं·	मं·	मि·	सिं·	कं·	क·	तु·	वृ·	कुं·	म·	मि·	सिं·	क·	कं·	तु·	वृ·	मी·
वर्ष	१	०	०	१	०	२	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	२	५	५	०	७	५	०	१०	९	२	२	५	२	११	५	९	३	५
दिन	३	१९	१९	२१	१	१९	२१	१७	२६	७	७	२	२४	२५	२	१	२८	१९
घटी	३१	२४	२४	१०	४५	२४	१०	३८	२८	४५	४५	२८	४२	४५	२८	३	३५	२४
पल	४६	४३	४३	३५	५३	४२	३५	४९	१४	५३	५३	१४	२१	५३	१४	३२	१८	४२

	१० मकरान्तरम् (दशावर्ष ४)								
राशि	१०	३	५	४	६	७	८	१२	११
राशि	म·	मि·	सिं·	क·	क·	तु·	वृ·	मी·	कुं·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	२	५	२	११	५	९	३	५	२
दिन	७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	७
घटी	४५	२८	४२	४५	२८	३	३५	२४	४५
पल	५३	१४	२१	५३	१४	३२	१८	४२	५३

चतुर्थ चरण

नक्षत्र संख्याः—५ ६ ११ १२ १७ १६ २२ २५

अपसव्य नक्षत्रः—मृगशिरा, आर्द्रा, पू.फा., उ.फा., अनुराधा, ज्येष्ठ, धनिष्ठा, शतभिषा,

नक्षत्र ५, २६, १७, २३ की नवमांश राशि मेष परमायु वर्ष १०० नक्षत्र ६, १२, १८, २४ की नवमांश राशि धनु है।

	(जीवराशि) ९ धन्वान्तरम् दशावर्ष १०)									८वृश्चिकान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	९	८	७	६	५	४	३	२	१	८	७	६	५	४	३	२	१	९
राशि	ध·	वृ·	तु·	क·	सिं·	क·	मि·	वृ·	मे·	वृ·	तु·	क·	सिं·	क·	मि·	तु·	मे·	ध·
वर्ष	१	०	१	०	०	२	०	१	०	०	१	०	०	१	०	१	०	०
मास	०	८	७	१०	६	१	१०	७	८	५	१	७	४	५	७	१	५	१२
दिन	०	१२	६	२४	०	६	२४	६	१२	२६	१३	१६	६	१९	१६	१३	२६	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२४	१२	४८	०	१२	४८	१२	२४	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	७ तुलान्तरम् (दशावर्ष ः ६)								
राशि	७	६	५	४	३	२	१	९	८
राशि	तु·	क·	सिं·	क·	मि·	वृ·	मे·	ध·	वृ·
वर्ष	२	१	०	३	१	२	१	१	१
मास	६	५	९	४	५	६	१	७	१
दिन	२१	८	१८	९	८	२१	१३	६	१३
घटी	३६	२४	०	३६	२४	३६	१२	०	१२
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	६ कन्यान्तरम् (दशावर्ष ९)								
राशि	६	५	४	३	२	१	९	८	७
राशि	क·	सिं·	क·	मि·	वृ·	मे·	ध·	वृ·	तु·
वर्ष	०	०	१	०	१	०	०	०	१
मास	९	५	१०	९	५	७	१०	७	५
दिन	२१	१२	२०	२१	८	१६	२४	१६	८
घटी	३६	०	२४	३६	२४	४८	०	४८	२४
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	५ सिंहान्तरम् (दशावर्ष ५)								
राशि	५	४	३	२	१	९	८	७	६
राशि	सिं·	क·	मि·	वृ·	मे·	ध·	वृ·	तु·	क·
वर्ष	०	१	०	०	०	०	०	०	०
मास	३	०	५	९	४	६	४	९	५
दिन	०	१८	१२	१८	६	०	६	१८	१२
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	४ कर्कान्तरम् (दशावर्ष २१)								
राशि	४	३	२	१	९	८	७	६	५
राशि	क·	मि·	वृ·	मे·	ध·	वृ·	तु·	क·	सिं·
वर्ष	४	१	३	१	२	१	३	१	१
मास	४	१०	४	५	६	५	४	१०	०
दिन	२७	२०	९	१९	६	१९	९	२०	१८
घटी	३६	२४	३६	१२	०	१२	३६	२४	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	३ मिथुनान्तरम् (दशावर्ष ९)								
राशि	३	२	१	९	८	७	६	५	४
राशि	मि·	वृ·	मे·	ध·	वृ·	तु·	क·	सिं·	क·
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	०	१
मास	९	५	७	१०	७	५	९	५	१०
दिन	२१	८	१६	२४	१६	८	२१	१२	२४
घटी	३६	२४	४८	०	४८	२४	३६	०	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	२ वृषान्तरम् (दशावर्ष १६)								
राशि	२	१	९	८	७	६	५	४	३
राशि	वृ·	मे·	ध·	वृ·	तु·	कं·	सिं·	क·	मि·
वर्ष	२	१	१	१	२	१	०	३	१
मास	६	१	६	१	६	५	९	४	५
दिन	२१	१३	२६	१३	२१	८	१८	९	८
घटी	३६	१२	०	१२	३६	२४	०	३६	२४
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

	१ मेषान्तरम् (दशावर्ष ७)								
राशि	१	९	८	७	६	५	४	३	२
राशि	मे·	ध·	वृ·	तु·	क·	सिं·	क·	मि·	वृ·
वर्ष	०	०	०	१	०	०	१	०	१
मास	५	८	५	१	७	४	५	७	१
दिन	२६	१२	२६	१३	१६	६	१९	१६	१३
घटी	२४	०	२४	१२	४८	०	१२	४८	१२
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अतिसंक्षिप्त कालचक्रदशा (सारणी संख्या ६)

नक्षत्र संख्या	नक्षत्रवर्ग १	नक्षत्र वर्ग २	नक्षत्र वर्ग ३	नक्षत्र वर्ग ४	वर्ग १,२ समस्त सव्यनक्षत्र (परमायु) महादशा वर्ष	वर्ग ३,४ समस्त अ.स.न. (प.मा.) महा.वर्ष
	१,३,७,९,१३, १५,१९,२१, २५,२७	२,८,१४,२० २६	४,१०,१६ २२	५,६,११,१२, १७,१८,२२, २४		
चरण	आरंभ राशि	आरंभ राशि	आरंराशि	आरंभ राशि		
१	स० १ (मेष)	अ० ८	स० ९	अ० १२	१००	८६
२	स० १० मकर	अ० ११	स० ६	अ० ३	८५	८३
३	अ० २ (वृष)	स० ७	अ० ६	स० ३	८३	८५
४	स० ४ (कर्क)	अ० ४	स० १२	अ० ९	८६	१००

इस संक्षिप्त सारणी में चरण के सामने उस चरण के आरम्भ की दशा (राशि) दी गई है। आरंभ की दशा की राशि किस मार्ग, (क्रम) की राशि है वह भी राशि के साथ ही दी है। स = सव्य मार्ग अ = अपसव्य मार्ग लिख दिया गया है।

उदाहरणः—प्रथम वर्ग के नक्षत्रों के द्वितीय चरण की दशा का आरंभ सव्य मार्ग से मकर से आगे इस प्रकार होगाः—सव्य १० ११,१२—८,७,६,४,५,३। वर्ग १ तथा २ में मीन के उपरान्त वृश्चिक तथा धनु के उपरान्त। अपसव्य राशि क्रम में मेष की दशा क्रम से चलती है तथा वर्ग २,३ अपसव्य नक्षत्र चरणों की दशा क्रम में वृश्चिक के उपरान्त मीन की अपसव्य क्रम से तथा अपसव्य राशि क्रम में मेष के बाद धनु की दशा चलती है। ये बाते पहले भी स्पष्ट की जा चुकी हैं। मण्डूकी तथा मर्कटी राशि का क्रम भी बताया जा चुका है।

नीचे लिखी दशा चक्र में जो राशि ▭ में हैं वह सिंहावलोक हैं। ** स्टार में मण्डूकी तथा ( ) में मर्कटी राशि है।

(संक्षिप्त) काल दशा चक्र (सारणी संख्या ५)

प्रथम वर्ग के १० सव्यनक्षत्र

१ २ ७ ९ १३ १५ १९ २५ २७
अश्विनी, २१ उ.षाढ ।कृत्तिका पुनर्वसु, आश्लेषा हस्त, स्वाती, मूल,पू. भाद्र रेवत

वर्ग	चरण	परमायु वर्ष	देहराशि दशावर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि वर्ष	राशि, द. व.	राशि, द. व.	जीव राशि राशि, द. व.
१	१	१००	१ मेष ७	२ वृष १६	३ मिथुन ९	४ कर्क २१	५ सिंह ५	६ कन्या ९	७ तुला १६	८ वृश्चिक ७	९ धनु १०
	२	८५	१० मकर ४	११ कुम्भ ४	१२ मीन १०	[८] वृश्चिक ७	७ तुला १६	६ कन्या ९	*४* कर्क २१	(५) सिंह ५	*३* मिथुन ९
	३	८३	२ वृष १६	१ मेष ७	१२ मीन १०	११ कुम्भ ४	१० मकर ४	९ धनु १०	[१] मेष ७	२ वृष १६	३ मिथुन ९
	४	८६	४ कर्क २१	५ सिंह ५	६ कन्या ९	७ तुला १६	८ वृश्चिक ७	९ धनु १०	१० मकर ४	११ कुम्भ ४	१२ मीन १०

द्वितीय वर्ग के ५ सव्य नक्षत्र

२ ८ १४ २० २६
भरणी, पुष्य, चित्रा, पू. षाढ़, उ० भाद्रपद

वर्ग	चरण										
२	१	१००	[८] वृश्चिक ७	*७* तुला १६	६ कन्या ९	*४* कर्क २१	(५) सिंह ५	*३* मिथुन ९	२ वृष १६	१ मेष ७	१२ मीन १०
	२	८५	११ कुम्भ ४	१० मकर ४	९ धनु १०	[१] मेष ७	२ वृष १६	३ मिथुन ९	४ कर्क २१	५ सिंह ५	६ कन्या ९
	३	८३	७ तुला १६	८ वृश्चिक ७	९ धनु १०	१० मकर ४	११ कुंभ ४	१२ मीन १०	[८] वृश्चिक ७	७ तुला १६	६ कन्या ९
	४	८६	*४* कर्क २१	(५) सिंह ५	*३* मिथुन ९	२ वृष १६	१ मेष ७	१२ मीनें १०	११ कुंभ ४	१० मकर ४	९ धन १०

तृतीय वर्ग के ४ अपसव्य नक्षत्र

४ १० १६ २२

रोहणी, मघा, विषाखा, श्रवण,

			जीव राशि								देह राशि
	चरण १	८६	९ धनु १०	१० मकर ४	११ कुंभ ४	१२ मीन १०	१ मेष ७	२ वृष १६	३ मिथुन ९	*५* सिंह ५	(४) कर्क २१
३	२	८३	*६* कन्या ९	७ तुला १६	८ वृश्चिक ७	[१२] मीन ११	११ कुंभ ४	१० मकर ४	९ धनु १०	८ वृश्चिक ७	७ तुला १६
	३	८५	६ कन्या ९	५ सिंह ५	४ कर्क २१	३ मिथुन ९	२ वृष १६	१ मेष ७	[९] धनु १०	१० मकर ४	११ कुंभ ४
	४	१००	१२ मीन १०	१ मेष ७	२ वृष १६	३ मिथुन ९	*५* सिंह ५	(४) कर्क २१	*६* कन्या ९	७ तुला १६	८ वृश्चिक ७

चतुर्थ वर्ग के ८ अपसव्य नक्षत्र

५ ६ ११ १२ १७ १८ २३ २४

मृगशिरा, आर्द्रा, पू.फा, उ.फा अनुराधा, ज्येष्ठ, धनिष्ठा, शतभिषा

	चरण										
	१	८६	[१२] मीन १०	११ कुंभ ४	१० मकर ४	९ धनु १०	८ वृश्चिक ७	७ तुला १६	६ कन्या ९	५ सिंह ५	४ कर्क २१
४	२	८३	३ मिथुन ९	२ वृष १६	१ मेष ७	[९] धनु १०	१० मकर ४	११ कुंभ ४	१२ मीन १०	१ मेष ७	२ वृष १६
	३	८५	३ मिथुन ९	*५* सिंह ५	(४) कर्क २१	*६* कन्या ९	७ तुला १६	८ वृश्चिक ७	[१२] मीन १०	११ कुंभ ४	१० मकर ४
	४	१००	९ धनु ९	८ वृश्चिक ७	७ तुला १६	६ कन्या ९	५ सिंह ५	४ कर्क २१	३ मिथुन ९	२ वृष १६	१ मेष ७

सारणी संख्या ७

नक्षत्र चरण के महादशा वर्ष

(अर्थात् नक्षत्र चरण की नवमांश राशि की महादश वर्ष)

	चरण	चरण	चरण	चरण	
	१	२	३	४	
समस्त सव्य नक्षत्र	१००	८५	८३	८६	वर्ष
समस्त अपसव्य नक्षत्र	८६	८३	५५	१०	वर्ष

सारणी संख्या ८

ग्रहों तथा राशियों के दशावर्ष

ग्रहः—	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्थपति	शुक्र	शनि
राशि	५	४	१,८	३ ६	९,१२	२,७	१० ११
दशावर्ष	५	२१	७	९	१०	१६	४

अन्तरदशा का ध्रुवा

महादशा वर्ष = परमायुवर्ष $\frac{\text{दशाधीश} \times \text{अन्तरेश}}{\text{महादशावर्ष}}$ = दशाधीश में अन्तरेश का भोग्य काल

उदाहरणः परमायुवर्ष १००, दशाधीश गुरु, अन्तरेश कन्या का समय जानना हो तो

$$\frac{\text{गुरु } १० \times \text{बुध } ९}{१००} = \frac{९०}{१००} \text{वर्ष} = \text{वर्षादि } ०।१०।२४$$

अर्थात् यह मान किसी भी नक्षत्र चरण में जिसकी महादशा १०० वर्ष हो उसमें धनु में कन्या के अन्तर का वा मीन में मिथुन के अन्तर का काल होगा।

कालचक्र फलाध्याय

(देह-जीव राशियों तथा उनके स्वामियों से अरिष्ट विचार)

प्रत्येक सव्य-नक्षत्र—चरण की दशा की आरम्भ की राशि को देहराशि तथा अन्त वाली राशि को जीव राशि कहते हैं। अपसव्य नक्षत्र—चरण की दशा की आरम्भ राशि को जीव राशि तथा अन्त को देह राशि कहते हैं।

१ (क) जिस किसी राशि में देहराशि का अधिपति तथा जीवाधिपति ये दोनों एक साथ किसी भी पाप ग्रह या पाप ग्रहों के साथ बैठे हों वह राशि निश्चय से मारक होती है। दशाचक्र में जब उस राशि की दशा आती है तो उस दशा में उस जातक का निधन (मृत्यु) होता है। ऐसी स्थिति में यदि देहराशि वा जीवराशि (वा दोनों) पापाक्रांत हुई तो उक्त राशि अर्थात् जहां जीवाधिपति-देहाधिपति पापाक्रांत होकर बैठे हों उस राशि में निश्चय से मृत्यु होती है। पापाक्रांत ग्रह से तात्पर्य सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु, इन ग्रहों के साथ वह ग्रह हो, इनसूर्यादिक में से किसी एक के साथ अथवा इनमें से अनेक के साथ हो। जिस राशि में पापी ग्रह होते हैं वह राशि पापाक्रांत कही जाती है।

(ख) उपरोक्त (क) की स्थिति होने पर यदि पापाक्रांत देह-जीव राशि के अधिपति युत राशि की दशा के पूर्व ही पापाक्रांत देह वा पापाक्रांत जीव राशि की दशा हो तो पापाक्रांत देह वा जीव राशि में ही जातक का निधन संभव होता है।

(ग) उपरोक्त (क) की स्थिति होने पर यदि पापाक्रांत देहाधिपति-जीवाधिपति स्थित राशि की दशा के बाद पापाक्रांत देह या जीव राशि की दशा प्राप्त होती हो और किसी कारण विशेष से जातक पापाक्रांत देहाधिपति-जीवाधिपति-स्थित राशि दशा लांघ जाए अर्थात् पार कर जाए तो आने वाली पापाक्रांत देह या जीवराशि की दशा में निधन होता है।

(घ) पापाक्रांत देहपति-जीवपति जिस राशि में बैठे हों वह राशि यदि देहपति अथवा जीवपति की स्वराशि हो अथवा उसकी उच्चराशि हो अथवा वहाँ शुभग्रहों का बाहुल्य हो तो उस राशि में निधन होना द्विविधा जनक हो जाता है। ऐसी स्थिति में पापाक्रांत देह या जीव राशि ही मारक होती है। यहाँ सर्वत्र—देहप जीवप का अर्थ देहराशि के अधिपति तथा जीवराशि के अधिपति से है।

(२) (क) देहराशि यदि पापाक्रांत हो तो उस राशि की दशा में रोग होता है।

(ख) देहराशि यदि पापाक्रांत हो तथा देहप भी पापाक्रांत हो तो देहराशि तथा देहप स्थित राशि में रोग होता है। इन दोनों राशियों की परस्पर दशान्तर में निश्चय से रोग होता है, देह में बाधा होती है अर्थात् शरीर सम्बन्धी सभी प्रकार के अरिष्ट होते हैं। यहां देहाधिपति जो ग्रह हो तदनुकूल रोग होता है। मंगल होने से विस्फोट ज्वर आदि चोट तथा घटना (**Accident**) होने का भय रहता है।

(ग) देहराशि अग्रही हो, देहप पापाक्रांत हो तो देहप-स्थित राशि में शारीरिक अरिष्ट होता है, देहराशि में साधारण अरिष्ट।

(घ) देहराशि में केवल एक शुभ ग्रह हो, देहाधिपति पापाक्रांत हो तो देहपस्थित राशि की दशा में शारीरिक कष्ट होता है, देहराशि में नहीं, पर देहराशि में जो एक शुभ ग्रह हो उसकी दशा में अवश्य अरिष्ट होता है,

(ङ) स्वगृही देहराशि शुभ प्रद होती है। देहराशि में उच्चस्थ ग्रह बैठा हो और देहप स्थित राशि पापाक्रांत हो तो देहपस्थित राशि में ही अरिष्ट होगा, देह-राशि में नहीं।

(च) देहराशि में उच्च नीचस्थ दोनों ग्रह बैठे हों, देहपस्थित राशि पापाक्रांत हो तो देहराशि सम फलद होती है।

(छ) देहराशि शुभ युत हो देहाधिपति भी शुभ युत हो अथवा देहराशि अग्रही हो तथा देहाधिपति के साथ भी कोई ग्रह न हो तो ये दोनों राशियाँ अरिष्ट प्रद नहीं होतीं। पर यदि देहाधिपति की दूसरी राशि पापाक्रांत हो तो देहराशि की दशा साधारण अरिष्ट प्रद होगी न कि देहपस्थित राशि क्योंकि वहाँ देहराशि का अधिपति, उस अपनी दूसरी राशि का भी अधिपति होकर पापी है। सूर्य चन्द्र को छोड़ अन्य ग्रहों की अपनी दो राशियां होती हैं इ लिए देहराशि का जो अधिपति हो उसकी दूसरी राशि के पापाक्रांत होने पर देहराशि को भी साधारण दोष लग जाता है पर देहराशि का जैसा प्रभाव शरीर पर पड़ता है वैसा देहराशि के अधिपति की दूसरी राशि का नहीं। देहाधिपति की दूसरी राशि पापाक्रांत होने से उस दूसरी राशि की दशा का कुप्रभाव वैसा ही पड़ेगा जैसे अन्य पापाक्रांत राशियों का पड़ता पर देहराशि पापाक्रांत होने से उस दशा में देह सम्बन्धी शारीरिक कष्ट अवश्यं भावी होता है।

(ज) देहराशि का अधिपति यदि जीवराशि में पापाक्रांत होकर बैठा हो तो

देह और जीव राशियां ये दोनों पाप फलद होती है। वहां देहराशि अरिष्ट प्रद तथा जीवराशि मारक हो जाती है।

(झ) देहराशि में एक से अधिक पाप ग्रह हो और देहाधिपति शुभ युत हो तो देहराशि की दशा में अरिष्ट होता है, देहपस्थित राशि में नहीं।

(ञ) पापाक्रांत देहाधिपति के साथ कोई शुभ स्वगृही ग्रह हो तो देहाधिपति-स्थित राशि अरिष्टप्रद न होकर उस एक शुभ ग्रह की दूसरी राशि अरिष्टप्रद होती है।

(ट) देहराशि तथा देहाधिपति स्थित राशियों के बलाबल के तारतम्य से फल होता है।

३. (क) स्व स्वामी युत देहराशि तथा जिस राशि में स्वगृही देहाधिपति हो। अर्थात् स्वस्वामीयुत देहपति की दूसरी राशि मारक नहीं होती।

(ख) देहाधिपति यदि उच्चस्थ हो तो वह उच्च राशि भी मारक नहीं होती पापाक्रांत होने पर भी।

(ग) देहराशि पापाक्रांत न हो, देहप उच्चस्थ हो तो दोनों राशि शुभ होती है!

(घ) देहराशि में यदि देहाधिपति किसी उच्चस्थ ग्रह के साथ हो तो देहराशि मारक नहीं होती चाहे उसमें कितने ही पापग्रह क्यों न बैठे हों।

(ङ) देहराशि में उच्चस्थ नीचस्थ दोनों ग्रह बैठे हों तो भी देहराशि मारक नहीं होती, यदि अधिक पापाक्रांत न हो।

(च) उच्चस्थ ग्रह यदि पापी ग्रह हों तो उच्चस्थ होने के नाते उसका पापत्व नष्ट हो जाता है। उच्च शुभ ग्रह तो अति शुभ होता है।

(छ) देहाधिपति ग्रह स्वयं न पापी होता है और न शुभ (मारक प्रकरण में) यथा अश्विनी के प्रथम चरण में देहराशि मेष है और इसका अधिपति मंगल क्रूर ग्रह है। अब यदि यहां मेष में मंगल हो वा मंगल कहीं अग्रही हो (किसी ग्रह के साथ न हो) वा मेष अग्रही हो तो मेष राशि तथा मंगल ग्रह स्थित राशि पापी नहीं होगी।

(ज) देहराशि शुभ ग्रह युत हो, देहाधिपति भी शुभ युत हो तो दोनों राशियों की दशा शुभ होगी पर देह राशि की दशा शरीर के लिए अत्यन्त सुख दाई तथा स्वास्थ प्रद होगी। देहराशि में एक शुभ ग्रह हो, देहाधिपति पाप युत हो तो

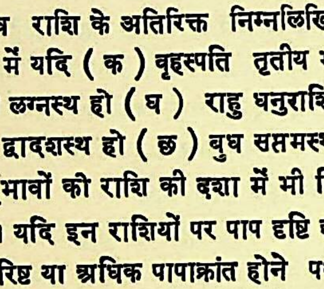
देहराशि स्थित उस एक शुभ ग्रह की राशियां अरिष्ट प्रद होती हैं। एक शुभ ग्रह से तात्पर्य बृहस्पति, शुक्र, बुध, चन्द्रमा इनमें से कोई एक ग्रह हो, चन्द्रमा का महत्त्व सर्वाधिक है।

४. जिस प्रकार देहराशि का उपरोक्त (२) तथा (३) Para में फल कहा गया उसी प्रकार जीवराशि तथा जीवाधिपति स्थित राशि का फल होता है। अन्तर यह है कि देहराशि की दशा में शारीरिक कष्ट होता है और जीवराशि की दशा में जीव पर अर्थात् प्राणों पर अरिष्ट आता है। पापाक्रांत जीवराशि की दशा में मृत्यु भय होता है। इसी लिए देहाधिपति तथा जीवाधिपतियों का पापाक्रांत होकर कहीं भी एकत्र बैठना आयु की दृष्टि से अरिष्टप्रद होता है। देहराशि में जीवाधिपति का जीवराशि में देहाधिपति का पाप ग्रहों के साथ बैठना तो अत्यन्त पापफलद होता है ऐसी दशा में देह वा जीव राशि में मृत्यु अवश्य होती है। देहराशि से जीव राशि का, जीव से देह का किसी भी प्रकार पाप सम्बन्ध होना अर्थात् उस सम्बन्ध में किसी पापग्रह का भी सम्बन्ध होना जातक की आयु के लिए पापफलद होता है।

५. सव्य नक्षत्रों की चरण दशा के अन्तिम राशि की दशा जीव की दशा होती है इसलिए वहाँ किसी जातक की जीव राशि वा जीवाधिपति उपरोक्त नियमानुसार पापी हुए तो जातक को उस दशा-चक्र को पार करना सम्भव नहीं होता। वहाँ भोग्यायु ही जातक की परम आयु होती है। अपसव्य नक्षत्र दशा-क्रम में अन्तिम दशा देहराशि की होती है। देहराशि पापाक्रांत होने से शारीरिक अरिष्ट तो अवश्य होता है पर जीवन समाप्ति की संभावना कम रहती है। पर यदि वह देहाधिपति का जीवाधिपति से किसी भी प्रकार का पाप सम्बन्ध हुआ तो वहां भी जातक के जीवन का अन्त ही समझना चाहिए। अपसव्य में देहराशि शुभ होने से (जीव पापयुत होने पर भी) यदि दोनों का सम्बन्ध न हो तो जातक उस नक्षत्र चरण की पूरी भोग्यायु प्राप्तकर अगले चरण की आयु भी यथाग्रह भोग सकता है। सव्य दशा क्रम में यदि किसी जातक का जन्म चरणारंभ में हो और वहां देहराशि पापक्रान्त तथा देहाधिपति भी पापाक्रांत हो अथवा अपसव्य दशाक्रम में चरणारंभ में किसी का जन्म हो और आरम्भ में जीवराशि की दशा हो, जीवराशि पापाक्रांत हो जीवाधिपति पापाक्रान्त हो या न हो तो ऐसी अवस्थाओं में जातक की

अनुपात भोग्यायु (लगभग पूर्णायु ८३ से १०० होते हुए भी) उसका आरम्भ की राशि में ही देहान्त हो जा सकता है। ऐसी दशा में वह अनुपात आयु नहीं भोगता। अस्तु किसी भी जातक का जन्म चरणारंभ में हो और उसकी आरम्भराशि पापाक्रांत हो अथवा उसमें पापाक्रांत जीवाधिपति वा देहाधिपति बैठे हों अथवा वहाँ दोनों पापाक्रांत होकर बैठे हों तो अनुपात आयु बड़ी लम्बी होते हुए भी जातक अल्पजीवी होगा। वह प्रथम राशि की दशा पर्यन्त ही जीवित रहता है।

६. देह और जीव राशि के अतिरिक्त निम्नलिखित राशियों में भी अरिष्ट होता है। जन्म कुण्डली में यदि (क) वृहस्पति तृतीय भाव में हो (ख) मंगल सप्तमस्थ हो (ग) शनि लग्नस्थ हो (घ) राहु धनुराशि में हो (ङ) चन्द्रमा अष्टमस्थ हो (च) सूर्य द्वादशस्थ हो (छ) बुध सप्तमस्थ हो (ज) शुक्र कर्क वा सिंह राशि में हो तो इन भावों की राशि की दशा में भी निधन हों सकता है यदि उक्त राशि पापाक्रांत हों। यदि इन राशियों पर पाप दृष्टि हो तो भी इन राशियों की दशा में जातक को अरिष्ट या अधिक पापाक्रांत होने पर निधन सम्भव होता है। [जातक पारिजाते] यदि इन राशियों में से कोई देह या जीव राशि भी हुई तो अधिक अरिष्ट प्रद होगी। सिंहावलोक, मण्डूकी, मर्कटी होने पर भी अधिक अरिष्ट प्रद होगी।



उदाहरण: (१) मेष लग्न कुण्डली में यदि मंगल के साथ वा अन्य किसी पापी ग्रह के साथ शुक्र चतुर्थ गृह में हो तो चतुर्थ गृह की कर्क राशि अरिष्टप्रद होगी। अब यदि उस जातक का जन्म प्रथमवर्ग के दश सव्यनक्षत्रों में से किसी

नक्षत्र के द्वितीय चरण का हो तो वहाँ कर्क २ मण्डूक राशि होगी। कर्क में शुक्र होने से तथा वहाँ पापाक्रांत कर्क मण्डूक राशि भी होने से दोहरी पापी हो जाएगी। ऐसी स्थिति में कर्कराशि मारक राशि हो जाएगी। अब यदि वहाँ कर्क में चन्द्रमा भी हो तो स्वस्वामियुत कर्कराशि का मारकत्व दोष बहुत कम हो जाएगा और वह राशि द्विविधा जनक मारक होगी।

(२) जातक का जन्म मीन लग्न का हो, सप्तम में बुध किसी पापी ग्रह के साथ हो तो वहां की कन्या राशि अरिष्टप्रद मात्र होगी, मारक नहीं, क्योंकि वहाँ बुध उच्चस्थ है। वहाँ यदि बुध मंगल के साथ हो तो सप्तम में मंगल एवं बुध के दोहरे पापयोग होने से कन्या मारक हो सकती है या नहीं यह अन्य परिस्थियों पर अवलंबित है। यहाँ बुध उच्चस्थ ही नहीं वरन् स्वगृही भी है इसलिए मारक होने में संदेह है पर अरिष्टप्रद होने में कोई संदेह नहीं।

सिंहावलोक, मण्डूक तथा मर्कटी राशियों से अरिष्ट विचार

(१) मण्डूकराशि यदि पापाक्रांत हो तो उसकी दशा में जातक को महाव्याधि [भयंकर रोग] होती है। यदि मण्डूक राशि पापाक्रांत हुई और उसका अधिपति नीचस्थ वा पापाग्रह के साथ हो तो मण्डूक राशि की दशा में मरण तक हो सकता है। यदि मण्डूक राशि पापाक्रांत न हो और मण्डूक राशि का अधिपति पापयुत हो तो जातक को रोग मात्र होता है। मण्डूक राशि अग्रही हो और उसका स्वामी भी अकेला कहीं बैठा हो तो उसकी दशा में शारीरिक अरिष्ट तो होता ही है पर उग्र नहीं। सारांशतः मण्डूक राशि यदि शुभ ग्रहों से युत न हो तो उसकी दशा में शारीरिक अरिष्ट तो होता ही है। मण्डूक कर्क में मातृ बंधु का विनाश भी होता है और माण्डूकी में पत्नी को अवश्य व्याधि होती है।

(२) मर्कटी राशि की दशा में महद्भय (जीवन को संशय में डालने वाली घटना) होता है। मर्कटी राशि यदि शुभ ग्रहों अथवा उच्चग्रह से युत हो तो दुर्घटना (**accidents**) से जातक को अधिक हानि नहीं होती या वह दुर्घटना से बच जाता है।

(३) सिंहावलोक राशि यदि पापाक्रांत हो और उसका अधिपति भी पापाक्रांत हो तो उसकी दशा में जातक का निधन होता है। सिंहावलोक राशि के पापाक्रांत होने और उसके स्वामी के शुभ युत होने पर मृत्युसमान कष्ट होता है, मृत्यु नहीं होती। सिंहावलोक दशा मण्डूकी तथा मर्कटी से अधिक अरिष्टप्रद है।

(४) जिस नक्षत्र के चरण में सिंहावलोक तथा मण्डूक और मर्कटी राशियों की भी दशा हो तो सिंहावलोक की दशा में मण्डूक मर्कटी के अन्तर में, अथवा मण्डूक वा मर्कटी राशि की दशा में जब सिंहावलोक राशि का अन्तर आता है तो पापाक्रांत होने पर उसमें जातक का निधन होता है। अन्तरेश यदि पापाक्रांत न हुआ अथवा अन्तर राशि शुभयुत हुई तो मृत्यु संशयात्मक हो जाती है। यह सब दशा तथा अन्तर के बलाबल पर होता है।

(५) स्वस्वामियुत अथवा उच्चग्रहयुत सिंहावलोक, मण्डूक, मर्कटी राशि में निधन नहीं होता पर अन्य परिस्थिति अनुकूल न हो, अर्थात् उनमें देहाधिपति वा जीवाधिपति भी हों तो बलाबल से फल होता है।

(६) पापाक्रांत सिंहावलोक वा मण्डूकी राशि यदि जीव या देह राशि भी हो तो उसकी दशा में निधन अवश्य होता है।

(७) जन्म कुण्डली में यदि (क) तृतीय भाव में बृहस्पति हो (ख) लग्न में शनि हो (ग) द्वादश में सूर्य हो (घ) मंगल वा बुध सप्तमस्थ हो (ङ) अष्टमस्थ चन्द्रमा हो (च) धनुराशि में राहु हो (छ) कर्क या सिंह राशि में शुक्र हो और ये राशियाँ पापाक्रांत हों तो ये अरिष्टप्रद होती हैं और यदि इन स्थानों में से किसी में सिंहावलोक वृश्चिक या मेष राशि हो मण्डूक कर्क या मिथुन हो अथवा मर्कटी सिंह राशि हो तो यह योग मारक होगा। साथ ही इनमें से कोई देह या जीव राशि भी हो तो उसकी मारक दशा को कौन लांघ सकता है।

(८) दशाक्रम में यदि कोई राशि उस नक्षत्र की नवमांश राशि हो और वह पापाक्रांत हो तो उसमें भी अरिष्ट होता है।

(९) कोई भी राशि हो यदि वह पापाक्रांत हो उसका अधिपति भी पापाक्रांत हो तो वह राशि सांसारिक कामों में उन्नति की बाधक होगी।

(१०) पापाक्रांत षष्ठ, अष्टम, द्वादश गृह की राशियों की दशा भी उत्तम नहीं होती।

(११) जों राशि अनेक प्रकार से अरिष्टप्रद होती है उसमें अवश्य निधन होता है।

उदाहरण—[क] भरण्यादि पंचसव्य नक्षत्रों [द्वितीय वर्ग के नक्षत्रों] के प्रथम चरण में वृश्चिक राशि देहराशि है तथा वह सिंहावलोक राशि भी है। उसी दशाचक्र में कर्क और मिथुन मण्डूक राशि तथा सिंह मर्कटी राशि है। इनमें से यदि वृश्चिक राशि पापाक्रान्त हुई तथा कर्क मिथुन या सिंह में से जो पापक्रांत हुई तो वृश्चिक में उन राशियों का अन्तर अत्यधिक अरिष्टप्रद होगा। इस दशाक्रम में मिथुन राशि मण्डूक के अतिरिक्त जीवराशि भी है। जहाँ मिथुन पापाक्रांत हो तथा वृश्चिक भी हो तो वृश्चिक में मिथुन तथा मिथुन में वृश्चिक का अन्तर निश्चय से मारक होगा। उपरोक्त नियम ७ के अनुसार मंगल वा बुध सप्तमस्थ हो तो वहाँ का राशि मारक होती है। अब यदि यहाँ मंगल और बुध वृश्चिक कर्क सिंह या मिथुन में सप्तमस्थ हो तो कर्क की दशा में निश्चय से निधन होगा, वृश्चिक और मिथुन राशि होने से निधन संयात्मक होगा, क्योंकि स्वस्वामियुन राशि में [पापाक्रांत होने पर भी] निधन संशयात्मक होता है। यदि सप्तम में कर्क राशि हो और चन्द्रमा अष्टमस्थ हो और सप्तम में बुध हो तो कर्क तथा सिंह ये दोनों राशियाँ विशेष अरिष्ट प्रद होंगी।

[ख] भरण्यादि पंच नक्षत्रों के चतुर्थ चरण में कर्क राशि मण्डूकी तथा देह राशि है। वहाँ सिंह मर्कटी तथा मिथुन मण्डूकी राशि है। कर्क के पापाक्रांत होने पर कर्क राशि विशेष अरिष्टप्रद होगी।

[१२] यदि निम्नलिखित राशियाँ पापाक्रांत हों तो उनमें विशेष अरिष्ट होता है। इन्हें मारक राशि समझना चाहिए।

[क] अश्विन्यादि दश सव्य नक्षत्र प्रथम [वर्ग के नक्षत्र]

१	२	७	३	१३	
अश्विनी,	कृत्तिका,	पुनर्वसु,	आश्लेषा,	हस्त	के द्वितीय चरण की दशा में वृश्चिक, कर्क मिथुन, सिंह राशि की दशाएँ।
१५	१९	२१	२५	२७	
भरणी,	मूल,	उ० षाढ,	पू० भाद्र	रेवती	

[ख] भरण्यादि पंच सव्य नक्षत्र [द्वितीय वर्ग के नक्षत्र]

२	८	१४	२०	२६	के प्रथम चरण की महादशा में वृश्चिक कर्क, मिथुन, सिंह राशि की दशाएँ।
भरणी,	पुष्य,	चित्रा,	पू० षा०,	उ० भाद्र	

[ग] भरण्यादि पंच सव्य नक्षत्र [द्वितीय वर्ग के नक्षत्र]

२	८	१४	२०	२६	के चतुर्थ चरणकी दशाओं में कर्क, मिथुन सिंह राशि की दशाएँ।
भरणी,	पुष्य,	चित्रा,	पू० षा०,	उ० भाद्र	

[घ] रोहिण्यादि चार अपसव्य नक्षत्र [तृतीय वर्ग के नक्षत्र]

४	१०	१६	२२	के प्रथम चरण की दशाओं में धनु, सिंह, कर्क की दशाएँ।
रोहिणी.	मघा,	विशाखा,	श्रवण	

[ङ] रोहिण्यादि चार नक्षत्र के चतुर्थ चरण में सिंह, कर्क, कन्या, की दशाएँ

[च] मृगशिरादि अष्ट नक्षत्र के तृतीय चरण में सिंह, कर्क, कन्या, मीन की दशाएँ।

[छ] मण्डूकी कर्क में यदि राहु हो अथवा उसका अधिपति राहु के साथ हो तो कर्क निश्चय से मारक होता है।

[१३] कालचक्र में कर्क राशि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पापाक्रांत कर्कराशि यदि माण्डूकी या मार्कटी राशि हो और वही यदि देह या जीवराशि हो तो वह निश्चय से मारक होती है और यदि उसमें शुक्र बैठा हो तो उसके मारक होने में कोई संदेह नहीं है लेखक ने पापाक्रांत मण्डूकी या मर्कटी कर्क राशि में अनेक जातकों का निधन होना पाया है।

[१४] निम्नलिखित नक्षत्रों की दशाएँ प्रायः निरापद होती हैं।

[क] अश्विन्यादि दश नक्षत्रों के प्रथम चतुर्थ चरण में कोई विक्षेप नहीं है तृतीय चरण में केवल मेष सिंहावलोक राशि है।

[ख] भरण्यादि पंच नक्षत्रों के द्वितीय चरण में मेष सिंहावलोक है और तृतीय चरण में वृश्चिक सिंहावलोक अरिष्टप्रद है। शेष निरापद है।

[ग] रोहण्यादि चार नक्षत्रों के तृतीय चरण में मेष तथा द्वितीय चरण में वृश्चिक सिंहावलोक है। शेष निरापद हैं।

[घ] मृगशिरादि अष्ट नक्षत्रों के प्रथम चरण की दशाएं विक्षेप विहीन हैं। चतुर्थ चरण में मेष, तृतीय में वृश्चिक तथा द्वितीय में मेष सिंहावलोक है, इनमें कोई माण्डूकी या मर्कटी राशि नहीं है।

[ङ] विना विक्षेप का अर्थ है कि जातक का जीवन विना विक्षेप के चलता रहेगा और जातक दीर्घायु हो सकेगा अर्थात् अन्य कोई राशि अधिक पापाक्रांत न हुई तो जातक उस नक्षत्र की अपनी भोग्यायु पूर्ण भोगेगा।

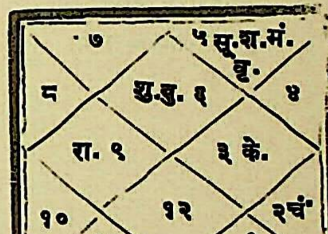
[१५] जिन राशियों का अशुभफल [अरिष्ट] ऊपर कहा गया है वह फल राशि के दशारंभ में अथवा अरिष्टप्रद मण्डूक, देह, जीव वा सिंहावलोक राशि के अन्तर में होता है।

उदाहरण कुण्डलियाँ (देह जीवराशियों से विचार)

भूतपूर्व महाराजा जैपुर

सं. १९१८ भाद्रपद कृष्ण ८ गुरौ इष्टम् ६।५५

रोहणी ४ चरण भोग्य ५७ वर्ष मुक्त ४३ वर्ष

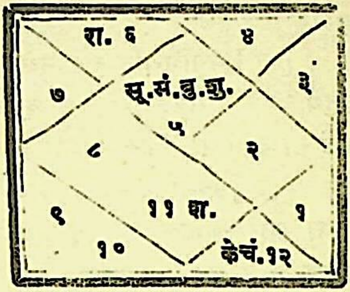


देहराशि वृश्चिक तथा जीवराशि मीन है। देहाधिपति मंगल तथा जीवाधिपति बृहस्पति, ये दोनों पापी सूर्य एवं शनि के साथ सिंह राशि में हैं। इसलिए सिंह राशि तथा मीन व वृश्चिक राशियां मारक हुई। दशा क्रम में मीन अप्राप्य तथा तथा सिंह राशि जन्मारंभ में व्यतीत हो गई। सिंह स्वस्वामी युत राशि है इस लिए मार न सकी। अन्तिम देहराशि वृश्चिक की दशा में, जो जीवाधिपति के साथ पापाक्रांत है निधन हुआ। जन्म काल में सिंह राशि में मारक अन्तर जन्म के पहले ही बीत भी चुका था।

विंशोत्तरी में शनि की महादशा थी। यहां पापी शनि प्रबल मारकेश बृहस्पति के साथ होने से निहन्ता हो गया है।

सं. १९०३ आश्विन कृष्ण २ चन्द्रे इष्टम् ५३।३२

रेवती ३ चरण भुक्त वर्षादि ८।९



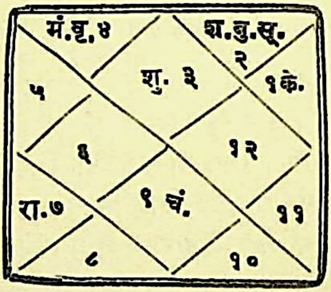
यहां देहराशि वृष तथा जीव मिथुन है। देहाधिपति शुक्र तथा जीवाधिपति बुध, ये दोनो सिंह में मंगल और सूर्य के साथ पापाक्रांत हैं। अस्तु मारक राशि सिंह, वृष तथा मिथुन है। निधन मिथुनारंभ में हुआ। इस दशाक्रम में सिंह की दशा अप्राप्य है। विंशोत्तरी मत से उस समय राहु में बुध का अन्तर था। राहु मारक स्थान स्थित मारक है।

[देह जीव राशियों से विचार]

सं. १९४१ ज्येष्ठ कृष्ण ४ बुधे इष्टम् १०।००

पूर्वा षाठ २ चरणे विंशोत्तरी शुक्र भोग्य १४।११

देहराशि = कुंभ
जीवराशि = कन्या

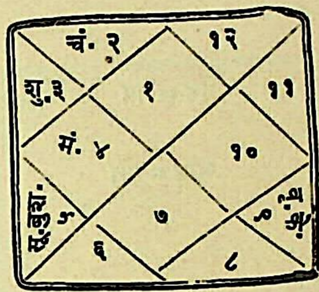


यहां देहाधिपति शनि तथा जीवाधिपति बुध, ये दोनों सूर्य के साथ वृषराशि में पापाक्रांत हैं। अस्तु वृष राशि की दशा में देहान्त हुआ। जन्मारंभ में कुम्भ भोग्य २ वर्ष था जिसमें जन्म से पूर्व मारक अन्तर निकल चुका था विंशोत्तरी मत से उस समय मंगल की महादशा थी। षष्ठेश पापी नीचस्थ मंगल मारक स्थान में प्रबल मारकेश वृहस्पति के साथ है।

सं. १९४६ भाद्रपक्ष कृष्ण ८ रवौ ४१।१७ इष्टम्
कृत्तिका ३ चरण

देहराशि = वृष

जीवराशि = मिथुन

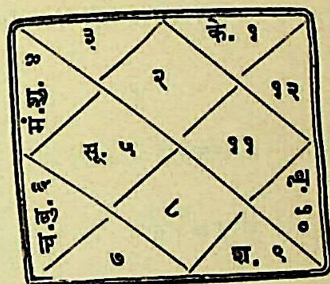


जीवराशि मिथुन में देहाधिपति राहु के साथ पापाक्रांत है अस्तु मिथुन राशि की दशा में देहान्त हुआ। विंशोत्तरी मत से उस समय राहु की महादशा थी। राहु दोहरे मारकेश शुक्र के साथ हैं।

सं.१९५९ भाद्रपक्ष शुक्ल २ गुरौ इष्टम् ४५।१५
हस्त तृतीय चरण। भोग्य वर्षादि ५।६

देहराशि = वृष

जीवराशि = मिथुन

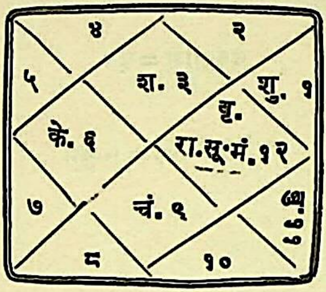


यहां देहराशि का अधिपति शुक्र नीचस्थ मंगल के साथ पापाक्रांत है। कर्क का शुक्र अरिष्ट प्रद भी होता है। अस्तु यहां २ वर्ष की आयु में ही वृष में देहान्त हो गया।

सं. १९१३ चैत्र कृष्ण ७ बुधे इष्टम् १६।४५
मूल १ चरण।

देह = मेष

जीव = धनु

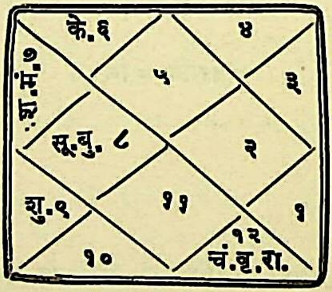


जीवाधिपति वृहस्पति सूर्य मंगल तथा राहु के साथ होकर अत्यन्त पापाक्रांत है। वहीं देहाधिपति मंगल भी पापाक्रांत है। अस्तु मीन राशि निर्विवाद मारक है। पर चूंकि इस दशा क्रम में मीन की तथा मेष की दशा नहीं प्राप्त होगी अस्तु जीवराशि धनु में ४४ वर्ष की आयु में निधन हुआ। उस समय विंशोत्तरी मतानुसार भौम की महादशा थी। पापी षष्ठेश भौम मारकेश वृहस्पति के साथ है और वह वृहस्पति का आत्म सम्बन्धी भी है।

सं. १९९० कार्तिक शुक्ल ११ रवौ इष्टम् ४७।१७
उत्तराभाद्रपदा ४ चरण भोग्य ५८ वर्ष युत २८

देह = कर्क

जीव = धनु



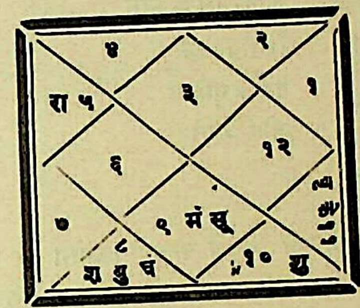
यहां देहाधिपति चन्द्र तथा जीवाधिपति गुरु, ये दोनो मीन राशि में राहु के साथ पापाक्रांत है। अष्टमस्थ चन्द्रमा की यहां मीन राशि स्वयं अरिष्ट प्रद है अस्तु यहां मीन राशि निर्विवाद मारक है जिसमें निधन हुआ।

सं. १९२४ पौष कृष्ण १३ चन्द्रे इष्टम् २७।८
अनुराधा ३ चरण भोग्य ४५ वर्ष

जीव = मिथुन

देह = मकर

अग्रिम चक्रे



जीव धनु, देह = मेष

अग्रिम चक्रमें जीवराशि धनु में देहाधिपति मंगल है और जीवाधिपति वृह-स्पति पापाक्रांत है। धनु की दशा में देहान्त हुआ।

सं. १९१५ भाद्र पद कृष्ण ११ शुक्रे इष्टम् ४३।१५
पुनर्वसु ३ चरण भोग्य ६४



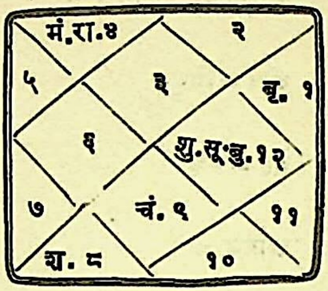
देह = वृष

जीव = मिथुन

जीवाधिपति बुध सूर्य केतु के साथ पापाक्रांत है। जीवराशि में चन्द्रमा है। अस्तु मिथुन में निधन हुआ। देहाधिपति शुक्रभी संभवतः बुध के साथहै। संधो कर है। विंशोत्तरी शुक्र की महादशा थी षष्ठेश शुक्र मारकेश बुध के साथ होना चाहिए तभी मारक योग बनेगा।

सं. १९२६ वैषाख कृष्ण ७ शनौ इष्टम् १२।४१
मूल ४ चरण भोग्य ६२ वर्ष

देहराशि = कर्क
जीवराशि = मीन
द्वितीय चक्रे
देह = वृश्चिक
जीव = मीन



यहां मूल चतुर्थ चरण चक्रभोग कर अग्रिम चक्र के आरम्भ में वृश्चिक राशि। सिंहावलोक राशि तथा देहराशि है। इसका अधिपति मंगल नीचस्थ है तथा राहु के साथ अति पापाक्रांत है। इस सिंहावलोक तथा देहराशि में पापी शनि बैठा है अस्तु वृश्चिक का राशि की दशा में निधन हुआ। उस समय विंशोत्तरी मत से से मारकेश बृहस्पति की महादशा थी।

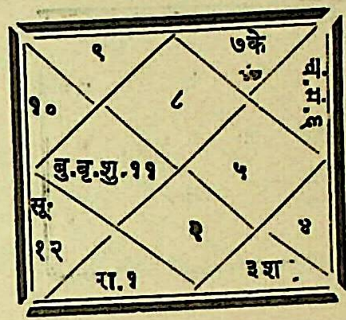
नोटः—

विंशोत्तरी दशा के लिए लेखक की 'लघुपाराशरी भाष्य' नामक पुस्तक देखना चाहिए—
उसमें मारकेशों की तालिका दी गई है।

लेखकः—

निम्नलिखित जन्मकुण्डलियाँ गोलोकवासी (गत) व्यक्तियों की कुण्डलियाँ हैं। विंशोत्तरी दशानुसार जिन ग्रहों में जातक की मृत्यु हुई उसका उल्लेख कारण-सहित कुण्डली के साथ दिया गया है। मारक ग्रह की महादशा (जिसमें मृत्यु हुई) के अतिरिक्त जन्म और मरण के बीच की दशाओं में भी अरिष्ट आए होंगे पर ऐसे अरिष्टों का इतिहास लेखक के पास नहीं है, केवल मरणकाल का समय मिल पाया है। ऐसा संभव है कि बीच में भी अल्प आये हों और जातक को मरणतुल्य कष्ट देकर पार कर गए हों यहाँ केवल उन्हीं मारक ग्रहों की विवेचना की गई है जिसमें उस कुण्डली के जातक की मृत्यु हुई। विंशोत्तरी महादशा के साथ कालचक्र की राशिदशा का भी यहाँ उल्लेख कर दिया गया है।

सं० १९१२ चै. कृ. १ शनौ इष्ट ४३।४२ हस्त चतुर्थ चरण

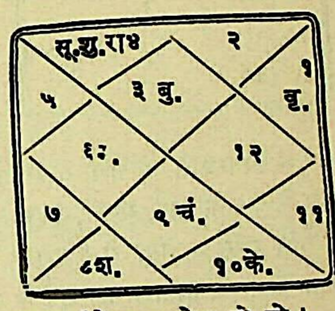


५८ वर्ष की आयु में विंशोत्तरी शनि की महादशा में निधन हुआ। शनि के पूर्व प्रबल मारकेश शुक्र की दशा थी। शनि तृतीयेश होकर पापी है। बृहस्पति शनि की राशि में है और शनि को बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देख रहा है इसलिए शनि का मारकेश से सम्बन्ध है।

मारकैस्सह संबंधात् निहंता पापकृत् शनिः।
अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्येव न संशयः॥

यहाँ शनि बृहस्पति की महादशा को लांघ कर स्वयं मारक हो गया है। कालचक्रांतरगत मण्डूकगतिसंज्ञक कर्क राशि में निधन हुआ। मण्डूक राशि वा उसका अधिपति यदि पापाक्रांत हो तो उसमें निधन होता है।

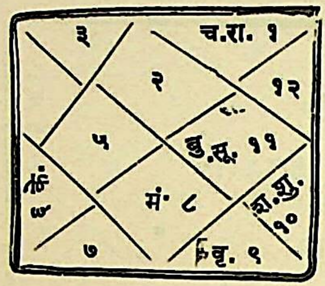
सं० १९२६ आ. शु. १३ पू. षा ३ चरण



विंशोत्तरी राहु की महादशा शुक्र के अन्तर में ४६ से ५० वर्ष की अवस्था में निधन हुआ। तृतीयेश सूर्य के साथ होने से राहु पापी हो गया। द्वितीय में बैठने से वह मारकेश हो गया। उसके साथ द्वादशेश है इसलिए राहु-शुक्र का योग मारक योग है। द्वितीयेश द्वादशेश का योग मारक होता है यदि द्वितीयेश मारकेश हो तो।

कालचक्र दशा में कन्या राशि में निधन हुआ। कन्या यहाँ जातक की जीव-राशि है। जीवराशि में पाप ग्रह होने से उसमें निधन होता है।

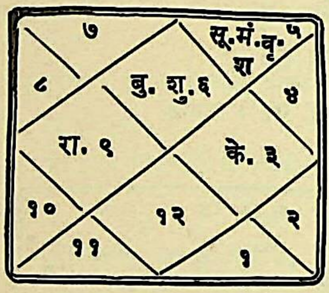
०१९२६ आ. शु. १३ पू. षा. ३ चरण



विंशोत्तरी राहु की महा दशा में निधन हुआ। राहु तृतीयेश के साथ होने से पापी हुआ। राहु द्वादशस्थ होकर द्वादशेश है। बृहस्पति अत्यन्त पापी अष्टमेश है। वह षष्ठस्थ होकर पूर्ण दृष्टि से राहु को देख रहा है। द्वादशेश अष्टमेश का पापगत योग मारक योग है इसलिये जातक का राहु में बृहस्पति के अन्तर में निधन हुआ।

कालचक्र दशा में माण्डूक कर्क राशि में निधन हुआ। कर्क का अधिपात चन्द्र राहु मुख में है, अस्तु यहाँ मण्डूक राशि में निधन हुआ।

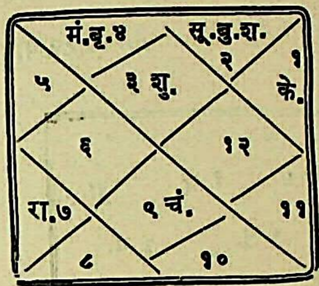
सं० १९१८ भाद्र. कृ ९ इष्ट ६।५५



विंशोत्तरी शनि की महादशा में मृत्यु हुई। इस कुण्डली में शुक्र बृहस्पति दोनों कड़े मारकेश हैं। शनि षष्ठेश होकर पापी है। शनि का शुक्र तथा बृहस्पति इन दोनों से स्थान सम्बन्ध है साथ हो उसका अष्टमेश मङ्गल से भी सम्बन्ध है। वह द्वादशस्थ भी है इसलिए यहां पापी शनि मारकेशों के सम्बन्ध से भी सभी मारकेशों को लांघ कर स्वयं प्रबल मारक हो गया है। शनि के पूर्व की सूर्य, मंगल, बृहस्पति की दशाएँ अमारक हो गई। सूर्य मंगल के साथ यदि शनि न होता तो ये दशाएँ अरिष्टप्रद होतीं। बृहस्पति साथ न होता तो वह निश्चय से मारक होता मंगल सूर्य के सहयोग से।

कालचक्र में यहाँ मीन जीवराशि है। उसका स्वामी तीन पापग्रहों से युत है। इसलिए मीन राशि की दशा में मृत्यु हुई। पापी जीवराशि में मृत्यु होती है।

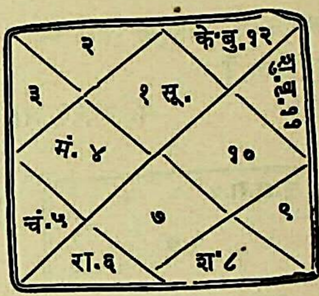
सं० १९४१ ज्ये. कृ. ४ इष्ट १०।०



विंशोत्तरी मंगल की दशा में ३३ वर्ष में निधन हुआ।

यहां मंगल षष्ठेश एकादशेष होकर तथा नीचस्थ होकर अत्यधिक पापी हो गया है। वह प्रबल मारकेश बृहस्पति के साथ है। बृहस्पति मारक स्थानस्थित होने से प्रबल मारक हो गया है। मंगल पर अष्टमेश शनि की भी दृष्टि है। ऐसी दशा में मङ्गल अत्यन्त पापी हो गया। पापी षष्ठेश, सप्तमेश, का योग मारक योग होता है (देखिये कपूर-मध्य पाराशरी) वह बृहस्पति का मित्र भी है। वह अपने नीचस्थान से २ राशि आगे, चन्द्रमा नीचे १ राशि आगे, अष्टमेश शनि नीचस्थान से १ राशि आगे है। यह अल्पायु योग है (देखिए कपूर—उच्चांशवश आयु)।

सं० १९२४ इष्ट ३।० उ. फा. सू. ३।०



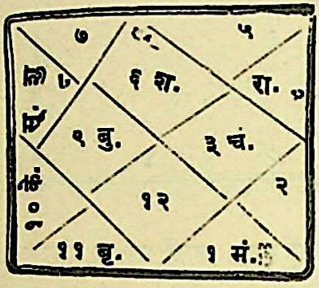
विंशोत्तरी बृहस्पति की महादशा बृहस्पति के अन्तर में निधन हुआ। सूर्य से मंगल तक की दशा बीत गई। बृहस्पति द्वादशेश होकर मारकेश शुक्र के साथ है।

'लग्नात् व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः" के अनुसार बृहस्पति शुक्र के साहचर्य से स्वयं मारकेश हो गया है। शुक्र दोहरा मारकेश है। वह द्वितीयेश तथा सप्तमेश है। उसके साहचर्य से बृहस्पति भी मारक हो गया है। बृहस्पति की दशा के पूर्व और किसी मारक की दशा नहीं थी।

लग्नेश मङ्गल नीचस्थ है, अष्टमेश भी वही है। चन्द्रमा अपने उच्च नीच के बीच में है। तीनों ने मिलकर ४०, ४५ आयु दी।

(देखिये उच्चांशवश आयु प्रकरण)

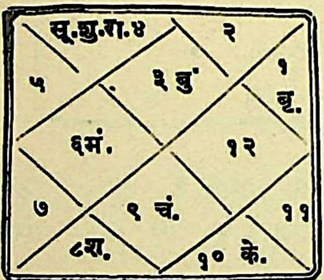
सं० १८८९ पौष कृ. १ आर्द्रा १



विंशोत्तरी शुक्र की महादशा में ८७ वर्ष की आयु में निधन हुआ। जन्म में राहु से केतु तक की दशा बीत गई। कुण्डली में शुक्र और बृहस्पित मारकेश हैं। सूर्य मंगल शनि पापी हैं। बृहस्पति मारकेश तो है पर उसका किसी पापी से या द्वादशेश से या अन्य मारकेश से सम्बन्ध नहीं है इसलिए वह (बृहस्पति) मारक नहीं हुआ (देखिए कपूर-मध्य पराशरी के मारक नियम) शुक्र मारकेश है और वह द्वादशेश सूर्य के साथ है और उसपर मङ्गल की दृष्टि ही नहीं वरन् मगल (अष्टमेश) के गृह में भी है। षष्ठेश की उस पर दृष्टि भी है। कपूर उच्चांशवश आयुर्दाय प्रवल है।

कालचक्र में मण्डूकी राशि कर्क में निधन हुआ। यहां कर्क माण्डूकी है और उसमें राहु बैठा है।

सं. १९२६ आ. शु. १३ इष्ट ५८।०

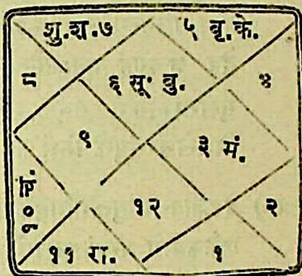


विंशोत्तरी राहु की दशा शुक्र के अन्तर में निधन हुआ। जन्म में शुक्र सूर्य, चन्द्र, मंगल की दशाएं बीत गई। जन्मकाल में शुक्र में मारक का अन्तर बीत गया था। अन्य मारक नहीं है। राहु तृतीयेश सूर्य के साथ पापी है। द्वितीयस्थ होने से स्वयं मारकेश है द्वादशेश शुक्र के साथ होंने से राहु मारक हो गया है। राहु मारकेश है (देखिये कपूर मध्यपराशरी के मारक नियम)।

कालचक्र दशा में यहाँ कर्क राशि देहराशि है और साथ में मण्डूक राशि भी है। कर्क राशि में दो पाप ग्रह भी हैं। कालचक्रानुसार यहां कर्क राशि प्रबल मारक है। इसकी दशा में निधन हुआ। उच्चांशवश आयु मध्यमायु है।

सं. १९५३ उ. षा. २ चरण

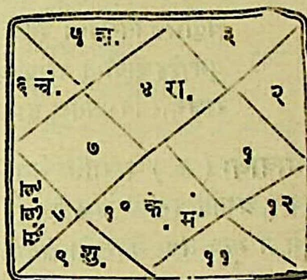
राहु की महादशा में राहु के ही अन्तर में निधन हुआ। षष्ठस्थ षष्ठेश पापी राहु पर मारकेश बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि है। राहु मारकेश से संबन्ध कर रहा है इसलिए राहु मारक हो गया है। राहु के पहले कोई मारक नहीं आया।



कालचक्रे सिंहावलोक गति में निधन हुआ।

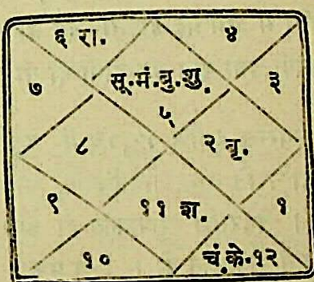
सं. १९४५ माघ कृ० ११ चित्रा १

विंशोत्तरी बृहस्पति के अन्तर में निधन हुआ। मङ्गल राहु की दशा के बाद गुरु की दशा आई। कुण्डली में कोई मारकेश संज्ञक मारक नहीं है। बृहस्पति षष्ठेश है। उसके साथ द्वितीयेश द्वादशेश है। इसलिए बृहस्पति मारक हो गया है। द्वितीयेश द्वादशेश षष्ठेश का योग अनिष्टकर है।



सं. १९०३ आ कृ. २ इष्ट ५३।३२

विंशोत्तरी राहु में बुध के अन्तर में निधन। ८८ वर्ष की आयु में। जन्म में बुध बीत गया। शेष कोई मारक नहीं। द्वितीयस्थ राहु मारकेश है और उसका संबन्ध द्वादशेश से है तथा अष्टमेश बृहस्पति की उसपर पूर्ण दृष्टि है। अस्तु, राहु मारक हो गया है।



'जातक पारिजात' के कालचक्र प्रकरण में दिया हुआ कालचक्र फलादेश का सारांश

(क) देहजीवे यदा राहुः केतुर्भौमो रविः स्थितः ।
तदा तस्मिन्भवेन्मृत्युर्देहे रोगः प्रवर्तते ॥ १५ ॥
देह जीवगृहं यातः सौम्यो जीवश्च भार्गवः ।
सुखसम्पत्करं सर्वं शोकरोगविनाशनम् ॥
मिश्रखेचरसंयुक्ते मिश्रं फलमवाप्नुयात् ॥ १६ ॥

(ख) देहजीवसमायुक्तैर्भौमार्किरविभोगिभिः ।
एकैकयोगे मरणं बहुयोगे न संशयः ॥ २८ ॥
देहयुक्ते महारोगं जीवयुक्ते महद्भयं,
द्वाभ्यां संयोगमात्रेण हन्यते नात्र संशयः ॥ २९ ॥

(ग) अधिरोगो भवेद् द्वाभ्यामपमृत्युस्त्रिभिर्भवेत् ।
चतुर्भिर्मृतिरापन्ना देहजीवे भवेद्यदि ॥ ३० ॥
युगपद्देहजीवौ तु पापग्रहयुतौ तथा ।
राजचोरादिभीतिश्च द्वाभ्यां मृत्युर्न संशयः ॥ ३१ ॥

भावार्थः (क) देहराशि तथा जीव राशि इन दोनों में यदि राहु केतु भौम सूर्य (अर्थात् इन में से कोई पाप ग्रह) बैठा हो तो जातक की मृत्यु होती है। जीवराशि में मृत्यु तथा देहराशि की दशा में रोग होता है। देहराशि में ही पाप ग्रह हो (जीवराशि में नहीं) तो देह में रोग होता है। जीवराशि में पापग्रह हो (और देह में पाप ग्रह न हो) तो मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। देहराशि में या जीवराशि में शुभ ग्रह हो तो देह या जीव से शुभ फल की प्राप्ति होती है। यदि इनमें पापी तथा शुभ ग्रह दोनों हों तो तारतम्य (बलाबल) से फल होता है।

उपरोक्त श्लोक १५,१६ में देहाधिपति तथा जीवाधिपति का फल नहीं कहा है। देहाधिपति तथा जीवाधिपति, का साधारण फल अगले ३७ वें श्लोक से कहा गया है। देहराशि पापाक्रांत हो और देहाधिपति शुभ हो या देहराशि शुभ हो, देहाधिपति पापाक्रांत हो। इसी प्रकार जीवराशि हो। इसका कैसा फल होगा इसका सविस्तार वर्णन लेखक ने देह-जीवराशि फल प्रकरण में दे दिया है।

(ख) "देहजीवसमायुक्तैः" का यहाँ अर्थ देह जीव राशियों से नहीं है प्रत्युत उनके अधिपति से है क्योंकि राशियां आपस में मिलती नहीं।

देहाधिपति तथा जीवाधिपति यदि देह राशि में या जीव राशि में दोनों एक साथ पापग्रहों के साथ बैठे हों तो उस राशि की दशा में जातक की मृत्यु अवश्य होती है, इसमें कोई संशय की बात नहीं है। देह या जीव राशि में पाप ग्रह होने मात्रसे वे राशियां अरिष्टप्रद हो जाती हैं, उनमें देहाधिपति या जीवाधिपति दोनों पापाक्रांत एक साथ हों तो वे अपनी दशा में जातक को बिना मारे नहीं छोड़तीं। देहाधिपति तथा जीवाधिपति ये दोनों जिस किसी राशि में एक साथ पाप ग्रहों के साथ बैठे हों तो उस राशि की दशा में जातक की मृत्यु होती है और देह जीव राशियों की दशा भी अरिष्ट प्रद होती है। (इसका सविस्तार विवेचन पुस्तक में किया जा चुका है)।

देहराशि में जीवाधिपति पापग्रह से युक्त होकर बैठा हो तो देहराशि की दशा में महारोग होता है और जीवराशि में देहाधिपति पापयुत हो तो महद्भय होता है। देहराशि में पापयुत देहाधिपति हो और वहाँ जीवाधिपति न हो तो देहराशि में रोग भय होगा पर मृत्यु नहीं क्योंकि लेखक के मत तथा अनुभव से स्वगृही राशि में अथवा उच्चस्थ राशि में जातक की मृत्यु नहीं होती जब तक बलाबल से वह अत्यन्त पापग्रस्त न हो इसलिए देह या जीव राशि में जब तक देहाधिपति तथा जीवाधिपति ये दोनों पाप ग्रहों से युक्त होकर न बैठे हों तो देह या जीव राशि में (जहाँ ये दोनों बैठे हों) मृत्यु नहीं होती। स्वगृही उच्चादि राशि को छोड़ अन्य किसी भी राशि में देहाधिपति जीवाधिपति दोनों ग्रह एक साथ पापाक्रांत होकर बैठे हों तो देहाधिपति-जीवाधिपति स्थित राशि में मरण (अवश्य) होता है।

(ग) "अधिरोगो भवेद्द्वाभ्याम्"—

देहाधिपति और जीवाधिपति दोनों एक साथ जिस किसी राशि में बैठे हों (और उनके साथ और कोई ग्रह न हो) तो उस राशि की दशा में रोग होता है। उनके साथ यदि कोई तीसरा ग्रह पापी हो तो उस राशि की दशा में अवश्य मृत्यु होती है और यदि वहाँ कोई चौथा ग्रह (पापी) बैठा हो तो मृत्यु अवश्य होती है। तात्पर्य यह है कि देहाधिपति और जीवाधिपति में दोनों जिस भी राशि में दो या दो

से अधिक पापी ग्रहों के साथ बैठे हों तो उस राशि की दशा में मृत्यु अवश्य होती है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि यदि देह या जीव राशि में देह या जीवाधिपति दोनों एक साथ दो या दो से अधिक पापी ग्रहों के साथ बैठे हों तो उस राशि में भी अवश्य मृत्य होती है। वहाँ स्वगृही होने का बल चला जाता है।

जातक पारिजाते

(२) (क) पापोनात्कर्कटे याते मातृबंधुवधूमृतिः ॥ १८ ॥
कन्यायाः कर्कटे याते पूर्वभागे महान्भवेत्।
उत्तरां दिशमाश्रित्य शुभयात्रां गमिष्यति ॥ २१ ॥

अर्थः—कालचक्र में जिस किसी नक्षत्र चरण की महादशा में कन्या के बाद कर्क की दशा आती है वहाँ कर्कराशि की दशा के आरम्भ में जातक महान् (बड़ा व्यक्ति) हो जाता है और उसे उत्तर देशों की ओर शुभ यात्रा करनी पड़ती है पर कर्क की दशा में माता, बंधु अथवा वधू की मृत्यु हो जाती है।

(ख) कर्कात्तु हरौ याते व्रणं वदेत् बुधः ॥ १९ ॥
कर्कटाद्दक्षिणे सिंहे कार्यहानिश्च रोगकृत्।
दक्षिणां दिशमाश्रित्य पश्चादागमनं भवेत् ॥ २३ ॥

जिस नक्षत्र चरण की दशाक्रम में कर्क के बाद ही सिंह की दशा आती है वहाँ सिंहराशि की दशा में जातक को व्रण का रोग होता है और किए हुए काम की विफलता होती है, काम में हानि होती है, रोग होता है। काम से उसे दक्षिण देश में जाना पड़ता है (पर कार्य सिद्धि न होने पर) सीधे लौटना पड़ता है।

(ग) सिंहात्तु मिथुनं याते स्वस्त्रीव्याधिमृतिर्भवेत् ॥ १९ ॥
सिंहात्तु मिथुनं याते पूर्वभागं विसर्जयेत्।
कार्यारंभे तु नैऋर्त्यां सुखयात्रां गमिष्यति ॥ २२ ॥

जिस नक्षत्र चरण की दशा क्रम में सिंह के बाद मिथुन राशि की दशा आती है वहां मिथुनराशि की दशा में जातक की स्त्री को व्याधि या व्याधि से मृत्यु हो जाती है मिथुन की दशा का पूर्वभाग अशुभ रहता है, इसे छोड़ कर परभाग (परार्द्ध) में जातक किसी काम के आरम्भ करने के लिए नैऋर्त्य दिशा को सुख पूर्वक जाता है।

(घ) मीनात्तु वृश्चिके याते ज्वरं भवति देहिनाम् ।। १८ ।।
मीनात्तु वृश्चिकाक्रांते उदग्गच्छति संकटम् ।। २४ ।।

जिस नक्षत्र चरण की दशा क्रम में मीन के बाद वृश्चिक राशि की दशा आती है वहाँ वृश्चिक राशि की दशा में जातक को ज्वर होता है तथा उसे वृश्चिक राशि की दशा में जल से संकट होता है। जल संकट से तात्पर्य जल में डूबना या जल प्लावनादि से है।

(ङ) चापान्मेषभयं यात्रा व्याधिर्बन्धुमृतिर्भवेत् ।। २४ ।।
पुत्रबंधुमृत्ति विद्याच्चापान्मेषगते पुनः ।। २० ।।

जिस नक्षत्र चरण की महादशा में धनु के बाद ही मेषराशि की दशा आती है वहाँ मेषराशि की दशा में जातक को यात्रा में भय (कष्ट) पुत्र बंधु आदि की मृत्यु होती है।

वक्तव्यः—कालचक्र दशा क्रम में जहाँ कन्या के बाद ही कर्क राशि की तथा सिंह के बाद मिथुन राशि की दशा आती है वहाँ कर्क तथा मिथुन राशि की दशा को माण्डूकी गति कहते हैं। और जहाँ कन्या के बाद कर्क और फिर उसके बाद सिंह राशि की दशा आती है वहाँ सिंह राशि मर्कटी गति संज्ञक राशि है। जहाँ मीन के बाद वृश्चिक की तथा धनु के बाद मेष की दशा आती हैं वहाँ वृश्चिक तथा मेष राशि को सिंहावलोक मार्ग कहते हैं।

जातक पारिजात तथा बृहद् पाराशर होरा शास्त्र में तथा अन्यत्र सर्वत्र माण्डूक, मर्कटी तथा माण्डूकी राशि, क्रम से कन्या के बाद कर्क, कर्क के बाद सिंह, सिंह के बाद वाली मिथुन राशि को ही कहा है। इसी प्रकार दशा क्रम में जहाँ मीन के बाद वृश्चिक तथा धनु के बाद मेष राशि आती है उसी की संज्ञा सिंहावलोक है। पर ऐसा क्रम केवल सव्य नक्षत्रों की दशा में ही है। अपसव्य नक्षत्रों की महादशा में मिथुन के बाद सिंह, सिंह के बाद कर्क तथा कर्क के बाद कन्या राशि की व्युत्क्रम दशा आती है। ऐसी सिंह, कर्क तथा कन्या राशि को माण्डूकी राशि नहीं कहा जा सकता। माण्डूकी राशि ग्रन्थ में निर्धारित है। कन्या के बाद वाली कर्क तथा सिंह के बाद वाली मिथुन राशि ही माण्डूकी राशि है।

नवमांश राशि	नवमांश राशि की महादशा में नव राशियां	राशियों का साधारण फल	नवमांश राशि	नवमांश राशि की महादशा में राशियों की दशा	राशियों की दशा का फल
	१ मेष	रत्न पीड़ा		४ कर्क	पत्नी बाधा
	२ वृष	धान्यवर्धन		५ सिंह	त्वक्षि रोग
	३ मिथुन	ज्ञान संपन्न		३ मिथुन	वृक्ष बाधा
१ मेष	४ कर्क	धनपति	२ वृष	१० मकर	पाप कर्म
	५ सिंह	शत्रुवाधा		११ कुंभ	वाणिज्य
वर्ष १००	६ कन्या	स्त्री नाश	वर्ष ८३	१२ गीन	सर्वार्थसिद्धि
	७ तुला	राजमंत्रित्व		१८ वृश्चिक	अग्निसेभय
	८ वृश्चिक	मरण		७ तुला	राज्यमान
	९ धनु	अर्थलाभ		६ कन्या	शत्रुवर्धन
	२ वृष	अर्थ लाभ		४ कर्क	संकट
	१ मेष	ज्वर		५ सिंह	राजप्रकोप
	१२ मीन	मातुलप्रीति		६ कन्या	भ्रातृ पूजा
३ मिथुन	११ कुंभ	शत्रुवर्द्धन	४ कर्क	७ तुला	लोक प्रिय
	१० मकर	चोर बाधा		८ वृश्चिक	पितृ बाधा
वर्ष ८३	९ धनु	शास्त्रसंवंध	वर्ष ८६	९ धनु	
	१ मेष	शास्त्र वर्द्धन		१० मकर	
	२ वृष	कलह		११ कुम्भ	
	३ मिथुन	सुख		१२ मीन	
	८ वृश्चिक	कलह			
	९ तुला	अधिक			
	६ कन्या	अतिलाभ			
५ सिंह	४ कर्क	मृग बाधा			
	५ सिंह	पुत्र लाभ			
वर्ष१००	३ मिथुन	शत्रु वर्द्धन			
	२ वृष				
	१ मेष				
	१२ मीन	दीर्घ यात्रा			

नवमांश राशि	महादशा वर्ष	राशियों की दशा	दशा वर्ष	दशा का साधारण फल
		११ कुम्भ	४	धन लाभ।
		१० मकर	४	द्रव्य लाभ।
		९ धनु	१०	भ्रात संसर्ग।
		१ मेष	७	भ्रातृ विवर्धन।
६	८५	२ वृष	१६	पुत्र वृद्धि।
		३ मिथुन	९	शत्रु वर्धन।
कन्या		४ कर्क	२१	स्त्रियां प्रीति।
		५ सिंह	५	व्याधि वर्द्धन।
		६ कन्या	९	पुत्र वृद्धि
		७ तुला	१६	अर्थ लाभ।
		८ वृश्चिक	७	भ्रातृ वर्द्धन (भाई को लाभ
		९ धनु	१६	वा भ्राता से लाभ) वा
		१० मकर	४	भाई का पैदा होना।
७	८३	११ कुम्भ	४	तात सौभाग्य (भाई से लाभ
		१२ मीन	१०	मातृ विरोधता। माता से विवाद
तुला		८ वृश्चिक	७	स्त्रा विरोध
		७ तुला	१६	जलबाधा
		६ कन्या	९	वृद्धि
		४ कर्क	२१	अर्थ नाश।
		५ सिंह	५	राजविरोध।
		३ मिथुन	९	भूमि लाभ।
		२ वृष	१६	अर्थ लाभ।
८		१ मेष	७	
	८६	१२ मीन	१०	
वृश्चिक		११ कुंभ	४	
		१० मकर	४	
		९ धनु	१०	धन लाभ
		१ मेष	७	धन लाभ।
		२ वृष	१६	भूमि विवर्धन।
		३ मिथुन	९	सर्वार्थ सिद्धि।
		४ कर्क	२१	सर्व सिद्धि।
९	१००	५ सिंह	५	पूर्व वृद्धि।
		६ कन्या	९	कलह।
धनु		७ तुला	१६	अर्थ लाभ।
		८ वृश्चिक	७	रोग।
		९ धन	१६	सुत वृद्धि।

नवमांश राशि	महादशा वर्ष	राशियों की दशा	दशा वर्ष	राशिदशा का साधारण फल
		१० मकर	४	पुत्र लाभ ।
		११ कुम्भ	४	धान्य विवर्द्धन ।
		१२ मीन	१०	कल्याण ।
		८ वृश्चिक	७	मृग बाधा ।
१०	८५	७ तुला	१६	अर्थ लाभ ।
		६ कन्या	९	शत्रुवर्द्धन ।
मकर		४ कर्क	२१	श्री ।
		५ सिंह	५	मृग बाधित्ता ।
		३ मिथुन	९	वृक्ष बाधा ।
		२ वृष	१६	अर्थलाभ ।
		१ मेष	७	अक्षिरोग ।
		१२ मीन	१०	दीर्घयात्रा ।
११		११ कुंभ	४	स्वस्थ विवर्द्धन ।
	८३	१० मकर	४	सर्वसिद्धि ।
कुम्भ		९ धनु	१०	शत्रुविवर्द्धन ।
		१ मेष	७	सौख्य विनाश ।
		२ वृष	१६	मरणं ।
		३ मिथुन	९	कल्याण ।
		४ कर्क	२१	धनवृद्धि ।
		५ सिंह	५	राजपूजन ।
		६ कन्या	९	अर्थलाभ ।
१२		७ तुला	१६	लाभ ।
	८६	८ वृश्चिक	७	ज्वर ।
मीन		९ धनु	१०	शत्रुविवर्द्धन ।
		१० मकर	४	जाया विरोध ।
		११ कुंभ	४	जल विरोध ।
		१२ मीन	१०	सर्व सौभाग्य ।

(मण्डूक राशि)	दशा फल	(सिंहावलोक)	संकट।
६ कन्या ४ कर्क	रोग,पूर्वभागे महत्फलम्। उत्तरदेशे सुखपूर्वक यात्रा।	मीन वृश्चिक १२ ८	संकट से मुक्ति
(मर्कटी)		मकर धनु	यात्राभयं, बध,बंधुमृति।
सिंह मिथुन ५ ३	पूर्वभागो विसृज्यते। नैर्ऋत्यां सुखं यात्रा।	(सिंहावलोक)	संपद् विवाहश्च।
(मर्कटी)	कार्य हानि, दक्षिण देशयामित्य प्रसक्तं गमनं भवेत्।	धनु मेष ९ १	स्त्री प्राप्ति।
कर्क सिंह		तुला	
(मर्कटीमाण्डूका)	निर्धनो भवेत्।	(सिंहावलोक) वृश्चिक मेष	दक्षिणे गमनं सुखं।
मिथुन ३	उदक् गच्छति संकटम्।		

विंशोत्तरी तथा कालचक्र के समन्वय से अरिष्ट विचार

विंशोत्तरी महा दशा में निम्नलिखित ग्रह तथा उनकी राशियां पाप फलद हैं।

लग्न यदि—

मेषहो = बुध; वृष = चन्द्र, बृहस्पति, मिथुन = सूर्य, मंगल, कर्क = बुध, सिंह = बुध, कन्या = चन्द्र, मंगल, तुला = बृहस्पति, सूर्य, वृश्चिक = बुध, धनु = शनि, शुक्र, चन्द्र, मकर = बृहस्पति, कुम्भ = चन्द्र, बृहस्पति, मीन = शुक्र, सूर्य, शनि ये उपरोक्त ग्रह उपरोक्त लग्न कुण्डलियों में विंशोत्तरी दशा में पाप फल देते हैं क्योंकि उक्त लग्न कुण्डलियों में ये न तो केन्द्रेश हैं और न त्रिकोणेश। विंशोत्तरी दशा में जब इनकी दशा हो और उसी समय उसी ग्रह की जीव, देह, सिंहावलोक मण्डूक मर्कटी राशि (राशीश) की भी दशा हो और ये राशियां पापाक्रांत हों तो दोहरा अरिष्ट होगा।

उदाहरणः—किसी का जन्म नक्षत्र प्रथम वर्ग के १० सव्य नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र के द्वितीय चरण में हो, लग्न मिथुन हो और वर्तमान विंशोत्तरी दशा

मंगल की हो और उसी समय पापाक्रांत सिंहावलोक की भी (काल चक्र) दशा हो तो यह योग अत्यन्त पाप फलद होगा। इसी प्रकार उपरोक्त सव्य नक्षत्रों के तृतीय चरण में मेष राशि की कालचक्र दशा अधिक पाप फलद होगी यदि उसी समय विंशोत्तरी में भी मंगल की दशा है। इसी प्रकार अन्य नक्षत्र चरण की पापाक्रांत देह जीवादि राशियों की विंशोत्तरी में उसी समय चलने वाली दशा पर विशेष विचार करना चाहिए। ऐसे योगों की तालिका बनाना बहुत ही श्रम साध्य है। जातक-विशेष की कुण्डली की दोनों दशाओं को बना कर उनके समन्वय से फल आंकना उचित है। लेखक ने अनेक कुण्डलियों में ऐसे योगों का फल निर्विवाद पाया है। उपरोक्त फल अरिष्ट तथा अनिष्ट प्रसंग में कहा गया है। मारक प्रसंग में विंशोत्तरी के मारक ग्रहों से विचार करना अधिक उपयुक्त होता है।

२. विंशोत्तरी दशा में निम्नलिखित मारकेश तथा मारक ग्रह हैं। उनकी दशा के समय वे जिस राशि के स्वामी होकर मारकेश हुए हैं, उस समय उसी राशि की कालचक्र दशा पापक्रांत देह या जीव से भी चल रही हो तो उस दशा में मृत्यु निःसंदेह होती है। उस समय यदि सिंहावलोकादि की दशा चल रही हो तो भी अनिष्ट होता है। अनिष्ट का अर्थ है पतन, दुःख, शोक, ताप, धन हानि आदि सामाजिक अनभिलिषित अवस्थाएं। अरिष्ट का अर्थ है दुर्घटनाएं (accidents) बड़ी बीमारी, शारीरिक आघात, अपमृत्यु, मृत्यु अर्थात् शारीरिक ताप। पापाक्रांत देह राशि में शारीरिक कष्ट, पर मृत्यु नहीं, जीव में मृत्युभय। ये अरिष्ट प्रद श्रेणी में हैं। सिंहावलोकादि दशाएं अनिष्ट प्रद श्रेणी में हैं। विंशोत्तरी के पापी ग्रहों और कालचक्र के सिंहावलोक मण्डूकादि राशियों का सम्बन्ध पाप फल अनिष्ट प्रसंग में समझना चाहिए। विंशोत्तरी के मारकेश और उसी समय पापाक्रांत देह जीव राशीश की दशा का फल अरिष्ट प्रसंग में समझना चाहिए। इन योगों का फल बलाबल के अनुसार होता है जिसे स्वबुद्धि से ही निर्णय किया जा सकता है। मारक ग्रह अनिष्ट फल देते ही हों ऐसा नहीं है। राजभोग करते हुए भी मृत्यु होती है, शारीरिक कष्ट होता है, इस लिए मारकेशों का फल मारक प्रसंग में ही आंकना चाहिए।

विंशोत्तरी दशा क्रम में साधारणतया द्वितीयेश व सप्तमेश वृहस्पति, शुक्र, बुध तथा चन्द्रमा मारकेश कहे जाते हैं। मारक प्रसंग में ये क्रमशः निर्बली है अर्थात् वृहस्पति समस्त मारकेशों में बली मारकेश है। इस संबंध में लेखक के लघुपारा-

शरी भाष्य नामक ग्रंथ के आयुर्दायाध्याय को भलीभांति मनन करना चाहिए। यह ग्रंथ श्री मोतीलाल बनारसी दास, नेपाली खपड़ा, वाराणसी ने प्रकाशित किया है। इसी पुस्तक में कालचक्र पद्धति पर भी संक्षिप्त विचार किया गया है। उसीका विस्तार प्रस्तुत ग्रंथ है।

विंशोत्तरी

मारक-मारकेशों तथा पापी ग्रहों की सूची

लग्न	सप्तमेश	द्वितीयेश	पापीग्रह	द्वादेशश	अष्टमेश
मेष	शुक्र	शुक्र	श. मं. बु.	वृहस्पति	मंगल
वृष	×	बुध	वृ. शु. चं.	मंगल	वृहस्पति
मिथुन	वृहस्पति	चन्द्र	श. मं. सू.	शुक्र	शनि
कर्क	×	×	×	बुध	शनि
सिंह	×	बुध	वृ. श.	चन्द्र	वृहस्पति
कन्या	वृहस्पति	शुक्र	मं. चं. श.	सूर्य	मंगल
तुला	×	×		बुध	शुक्र
वृश्चिक	शुक्र	वृहस्पति	बु. श. मं.	शुक्र	बुध
धनु	बुध	×	शु. श.	मंगल	चन्द्र
मकर	चन्द्र	×	वृ. मं.	वृहस्पति	सूर्य
कुम्भ	×	वृहस्पति	बु. चं.	शनि	बुध
मीन	बुध	×	शु. श. सू.	शनि	शुक्र

कालचक्र में सव्य तथा अपसव्य में परिस्थितिवश बुध वृहस्पति की राशियां ही जीव राशियां है तथा अपसव्य एवं सव्य चक्र में मंगल, शनि, शुक्र, चन्द्रमा की राशियां देह संज्ञक राशियां हैं। इसका निर्णय चक्रानुसार करना चाहिए। सारणी दी जा चुकी है। ये ही ग्रह विंशोत्तरी में मारकेश हैं मारकेशों के साथ का शनि मारकेश हो जाता है, मारकेश वृहस्पति के साथ का मंगल भी मारकेश हो जाता है। विशेष विवरण के लिए तथा सही सही मारकेशों का निर्णय करने के लिए लेखक के लघुपाराशरी भाष्य ग्रंथ को देखना चाहिए। वहां ऐसी अनेक सारणियां दी गई हैं जिनमें शुभ अशुभ, मारकेशों का उल्लेख हैं।

सारांश यह है कि जब मारक ग्रहों की विंशोत्तरी दशा चल रही हो और उसी समय विंशोत्तरी मारकग्रह की राशि की काल चक्र में भी पापक्रांत देह या जीव की दशा चल रही हो मारक फल अवश्य होता है। जीव राशि में निश्चय से मृत्यु, देह में संदिग्ध मृत्यु। इसी प्रकार कालचक्र की शुभ राशियों तथा उसी समय चल रही कारक ग्रहों की राशियों का शुभ फल आंकना चाहिए।

मारकेशों का अपवाद

विंशोत्तरी में मारकेश की दशा हो, उस मारक राशि में मारकेश के साथ शनि बैठा हो अथवा कहीं भी उस मारकेश के साथ शनि बैठा हो तो कालचक्र में उस समय आने वाली देह या जीव राशि की दशा में घोर अरिष्ट कालचक्र नियमानुसार होना चाहिए क्योंकि वहां वह देह या जीव राशि शनि के साहचर्य से पापी हो जाती है पर विंशोत्तरी मतानुसार उस मारकेश की दशा का फल अमारक हो जाता है और तब मारक फल शनि में होता है ऐसी स्थिति में कालचक्रान्तरगत देह या जीव में शरीरांत नहीं होगा।

उदाहरणः—वृश्चिक लग्न हो, वृहस्पति द्वितीयस्थ हो, साथ में शनि बैठा हो तो उस जातक को मारक फल बृहस्पति में न होकर शनि की महादशा में होगा। अब यदि उसी जातक का जन्म अश्विन्यादि १० सव्य नक्षत्रों में प्रथम चरण का हो तो वहां जीव राशि धनु पापाक्रान्त है। उसी समय धनु की कालदशा चल रही हो तो कालचक्रानुसार उसका मरण धनु में होना चाहिए पर विंशोत्तरी अनुसार वह राशि (धनु) अमारक हो जाएगी। तब बृहस्पति की दशा में मृत्यु संदिग्ध हो जायगी अथवा नहीं ही होगी।

चन्द्र-हस्त-विज्ञान

पृष्ठ संख्या १०००, चित्र संख्या ११७०, पक्की कपड़े की जिल्द, २०)

उपर्युक्त हस्त रेखा पुस्तक जो कि चन्द्रदत्त पन्त द्वारा हिन्दी में लिखी गई है। हिन्दी संसार में अपनी समानता नहीं रखती। इस पुस्तक में हस्त रेखा के साथ-साथ ग्रहंयोगों की दृष्टि (माउन्टस) से पूर्ण जीवन वृत्तान्त आधुनिक ढंग पर नवग्रह (हर्षल, नैपच्यून, प्लूटो) आदि की रेखा युति द्वारा भाग्य, हृदय, मस्तिष्क, आयु, स्वास्थ्य, विवाह, यशकीर्ति, सभी प्रेम सफलता, सन्तान, धन-सम्पत्ति तथा अकल्पित शुभाशुभ घटनाओं को जानने की सबसे सरल रीति इस प्रकार लिखी गई है कि साधारण हिन्दी जानने वाला व्यक्ति भी एक बार इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़कर, बिना किसी कठिनाई के एक हस्तरेखा विशेषज्ञ के समान सभी पूर्वोक्त घटनाओं का यथा समय वर्णन करने में पूर्ण रूप से समर्थ हो सकता है। क्योंकि इसमें ११७० हाथ चित्रों का अनुपम समूह प्रत्येक पैरे के साथ, अलग-अलग दिया गया है। जिससे निरीक्षक को एक ही पृष्ठ पर चित्रांकित रेखा वर्णन मिल सकेगा। प्रत्येक पैरे के कथनानुसार उसका चित्र उसके साथ होना ही इसकी विशेषता है। सभी प्रकार के हाथों के लक्षण, बनावट आकृति तथा गुण दोषों का वर्णन बड़े ही अनुभव के साथ किया गया है जिसके पठन-पाठन से मनुष्य सहज ही त्रिकालज्ञ होकर, अपना तथा दूसरों का परोपकार करके धन, कीर्ति और सुयश प्राप्त कर सकता है। यह ग्रंथ ज्योतिषियों के लिये ही नहीं बल्कि सभी व्यक्तियों के लिये समान रूप से उच्च कोटि फल देने वाला है। साथ ही रोचक भी इतना है कि एक बार प्रारम्भ कर लेने पर आद्योपान्त कर लेने की गुदगुदी हर समय हृदय से लगी रहती है। १००० पृष्ठ तथा ११७० चित्रों वाला कोई भी हस्तरेखा ग्रंथ हिन्दी ही नहीं बल्कि अन्य भाषाओं में बनकर तैयार नहीं हो सका है। उंगली से पौरुओं से लेकर मणिकटिबन्ध तक आये प्रत्येक चिह्न का वर्णन बड़ी ही सावधानी से किया गया है जिससे प्रत्येक सङ्कल्प विकल्प की पूर्ति तथा भावी घटना चक्र के जाल से बचने का पूर्ण समाधान किया गया है। जन्म तिथि ठीक होने पर किसी भी शुभाशुभ घटना के घटने का वर्ष-मास तथा तारीख जानने का सहज उपाय विस्तारपूर्वक लिखा गया है। विशेष प्रशंसा से क्या लाभ, पाठक एक बार स्वयं ही पढ़ लेने पर मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करने के लिये उत्सुक तथा बाध्य हुये बिना नहीं रह सकते। मूल्य २०.००

प्रकाशक :—

मोतीलाल बनारसीदास